

# श्रीजैनप्रतिमा-लेखसंग्रह ।



संपादक और संशोधक-

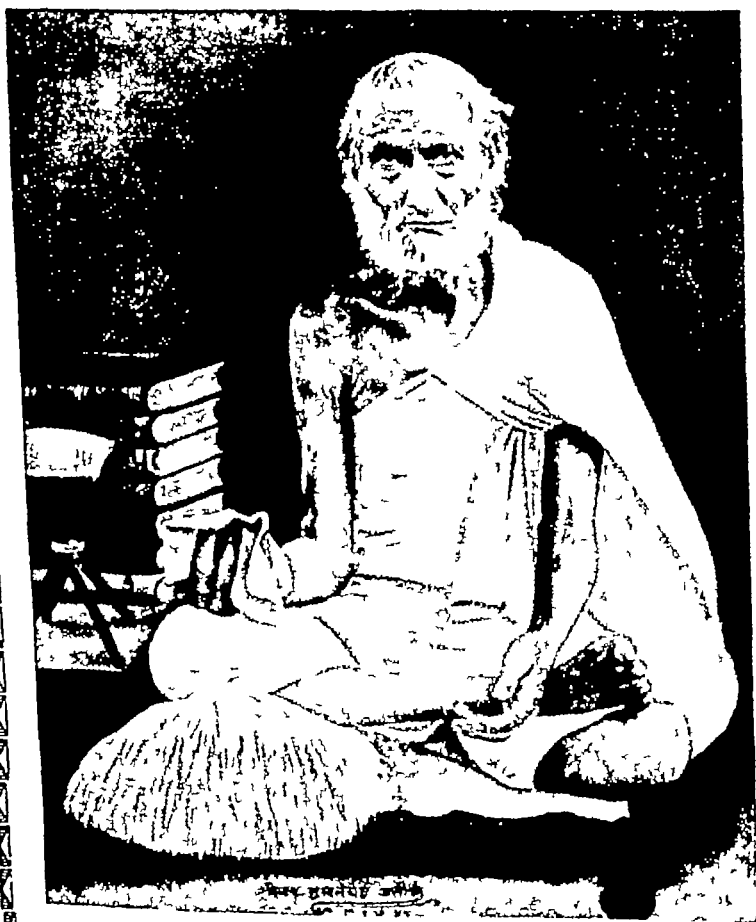
इतिहासप्रेमी-क्याङ्कपानवाचस्पति-

जिमाचार्य श्रीमद् विजयपतीन्द्रसूरीश्वरजी  
महाराज

५

संपादक और अनुवादक-

जेन-बगरी के लेखक और यागवाट-इतिहास-कर्ता-  
वीरसिंह सोडा 'अस्मिन्' पी ए



सर्वतत्रस्वतत्र विश्वपूज्य परमयोगिराज—  
प्रभु श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ।



# श्रीजैनप्रतिमा-लेखसंग्रह ।

संपादक और सयोजक-

इतिहासप्रेमी-व्याख्यानवाचस्पति-  
जैनाचार्य श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी  
महाराज ।



संपादक और अनुवादक-

जैन-जगती के लेखक और प्राग्वाट इतिहास-कर्ता-  
शैलतसिंह लोढा 'अरविंद' बी. ए.



अर्थसहायक

काव्यप्रेमी मुनिराजश्री विद्याविजयजी के मदुपदेश से  
मकवरदेशान्तर-बालीनगरवास्तव्य-प्राग्वाटजातीय-  
सौधमबृहत्तपोगच्छीय-श्वेताम्बरजैनसंघ ।



प्रकाशक

श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन, धामणिया ।

प्रतिस्वान—

- १ श्री राजेन्द्रप्रबन्धन-कार्यालय,  
खुदाबादी पो अहमदाबाद (महाराष्ट्र)
- २ श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन  
धामपिया (मेवाड़)  
के क्राउडोबा-उदस्वान

प्रथम संस्करण

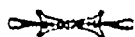
मूल्य रु ३)

वीर वे २४५८ दि. ए १ ८, ई ए १९५१ एनेन्द्र सं ४५.

द्वारा—

साह पुस्तकालय कम्पनी,  
श्री यतीन्द्र प्रिन्टींग प्रेस  
राजकोट-महाराष्ट्र.

# प्रस्तावना



श्रीसौधर्मवृहत्तपागच्छीय आचार्यदेव श्रीमद् विजय-  
यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज का विक्रम संवत् २००४ में  
चातुर्मास थराद (थिरपुर) वनामकांठा, उत्तरगुजरात में  
था। कार्तिक माह में आपकी डबल निमोनिया से इतने  
अधिक पीड़ित हुए कि जीवन की आशा भी नहीं रही।  
दूर-दूर के नगर, ग्राम एवं प्रान्तों से अनेक भक्तगण दर्श-  
नार्थ दौड़े जा रहे थे, मैं भी गया था। स्थिति सुधार पर  
थी, परन्तु आपको अधिक भाषण करने से तथा आये हुए  
भक्तजनों को दर्शन तक देने में भी होनेवाले श्रमसे बचने  
की चिकित्सकों की सम्मति थी। मुझ को दर्शन करने की  
आज्ञा मिल गई थी। आचार्यदेवने मुझ को कर-सङ्केत से  
धर्मलाभ देकर चिकित्सक महोदय की ओर देखा। चिकि-  
त्सक आचार्यदेव की अभिलाषा को समझ गये और मुझ से  
कुछ क्षण चर्चा करने की सम्मति दे दी। आचार्यदेवने  
पुस्तकों की एक ग्रन्थी खोली और उममें रही हुई शिला-  
लेखों के अक्षरान्तर की दो प्रतियाँ देखने को दीं। मैंने  
प्रतियों को सहज दृष्टि से देखीं तो ऐतिहासिक दृष्टि से वे  
अमूल्य प्रतीत हुईं। चर्चा के अन्तर में आचार्यदेवने

कि-मैं इतना अस्वस्थ और अशक्त हूँ कि थिला-लेखों का अनुवाद, अनुक्रमणिका आदि करने में अपन को असमर्थ पाता हूँ। मेरी प्रार्थना पर वे प्रतियेँ मुझको दे दी गईं। मुझ से बैसे बन पड़ा, बैसे संपादन एवं अनुवाद पाठकों के सामने हैं।

संपादन कला—

ऐसी पुस्तकें नहीं तो मैंने लिखी ही हैं और नहीं संपादित ही की हैं। थिला-लेख सम्बन्धी पुस्तकों का संपादन भी एक अलग कला है। उस पर दो शब्द लिखना कमी भी अप्रासंगिक नहीं है। थिला-लेखों का अनुवाद करने बैठने के पूर्व थिला-लेख सम्बन्धी साधन-सामग्री अधिक से अधिक संग्रह करनी चाहिए। तत्पश्चात् प्रारम्भ में प्रतिष्ठा करानेवाले आचार्यों की वर्षानुक्रम से अनुक्रमणिका का पण्ड, संवत् और लेखाहों के ठरलेख के साथ साथ निर्माण करना अत्यन्त लाभदायक है। जब यह अनुक्रमणिका विनिर्मित हो जाय तब ऐसी अन्य पुस्तकों की अनुक्रमणिकाओं को इस दृष्टि से देखिये कि आप की पुस्तक में जाये हुए आचार्यों के नाम उन पुस्तकों की अनुक्रमणिकाओं में जाये हैं? एक ही नाम के अनेक आचार्य हो गये हैं, लेकिन इससे पबरान की कोई आवश्यकता नहीं। एक ही नाम के पद्यपि एक और विभिन्न-विभिन्न गण्डोंमें

अनेक आचार्य हो गये हैं, परन्तु वे आगे पीछे हुए हैं और अगर कुछ एक ही नाम के एक ही समय में भी हो गये हैं तो भी गच्छ अलग अलग होने से वे थोड़े श्रम से अलग अलग वर्गीकृत किये जा सकते हैं। एक ही गच्छ में एक नाम के दो या अधिक आचार्य कभी भी एक समय में नहीं हो सकते, उनमें कुछ अन्तर रहता ही है ऐसी मर्यादा है। ऐसा करने से संवत्तों की भूल भलें न निकले, लेकिन आचार्यमय गच्छ अनुक्रमणिकाओं में परस्पर एक और अनेक संवत्तों में मिल जाते हैं। कभी कभी गुरुपरम्परायें भी मिल जाती हैं। कभी एक ही आचार्य के दो या अधिक कुछ या मर्वाशतः मिलते हुए लेख एक या अन्य पुस्तकों में इस प्रकार यत्न और श्रम से निकल आते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि संवत्तों की त्रुटियाँ भी यथासंभव दूर की जा सकती हैं और शासनकाल और शताब्दियों की त्रुटियाँ तो अनेक सुधारी जा सकती हैं। लेखों में आये हुए गृहस्थों के नामों की भी अगर वर्णानुक्रम से अनुक्रमणिकायें ज्ञाति, गोत्र और संवत्त लेखाङ्क के साथ साथ हो तो एक ही दिन, तिथि और माह-संवत्त के कभी कभी एक ही वंश के एक ही पुरुषों या कुछ पुरुषों के नामों से गर्भित एक-दो लेख एक या अन्य पुस्तकों में क्रम से मिल जाते हैं और आचार्य के नाम और गच्छ में रही त्रुटियाँ बहुत अधिक दूर की जा सकती हैं और इनसे उनकी



भी । उक्त अनुक्रमणिका के बन जाने तथा उसकी तुलना अन्य पुस्तकों की अनुक्रमणिकाओं से कर लेने के पश्चात् अनुवाद का कार्य सठाना अधिक उपयुक्त एवं सुविधाजनक होता है, क्योंकि उस समय तक शिखा-लेखों का अनेक समय अबसोदन वैसा अनुक्रमणिका बनाने का कारण बार-बार करना पड़ता है, हो गया होता है और लेखों का सुधार एवं संशोधन भी जो इसी काय के साथ साथ अनिवार्यता पड़ता था समाप्त हो जाता है । अन्य अनुक्रमणिकाएँ अनुवाद कार्य के पश्चात् बनाई जा सकती हैं ।

### शिखा-लेखों का क्रम—

आचार्यदेव का चतुर्मास धराद में होना निश्चित हो गया था और खुदाशा ( मारपाड़ ) से आपका विहार पत्रदर्श धराद की ओर छुटाई सन् १९४७ में प्रारम्भ हो गया था । सीरापल्ली से सगा कर आपके मार्ग में जितने ग्राम, नगर, पुर पड़ आपने अधिकांश मन्दिरों के और प्रतिमाओं के लेख उतारे, जिनका उतारना सुविधा, अबसर से बन सका । जैनप्रतिमा-लेखसंग्रह का निमित्त कारण धराद में चतुर्मास का निश्चित होना है तथा स्वयं धराद के २७३ दोस्रो तिहत्तर पातुप्रतिमा एवं पाषाणप्रतिमा लेख हैं । इन दो कारणों से इस पुस्तक में अधिक प्रसृतता धराद की है । अतः लेखों का क्रम धराद के लेखों से ही प्रारम्भ किया

है। थराद के लेखों के पश्चात् जीरापल्ली (जिरात्रला) तीर्थ से मार्ग में आये हुए गाँवों के लेखों का अक्षरान्तर क्रम से दिया है। जैनघरों की तथा मन्दिरों की संख्या तो आपने अपने मार्ग में आये प्रत्येक ग्राम, नगर की ली है जो अलग विहार-दिग्दर्शन शीर्षक से लिखी गई है।

अनुवाद—

१. भले कोई समझे कि अनुवाद में अधिक श्रम नहीं पड़ता है, क्योंकि आदर्श और आधार मानने होते हैं। लेकिन अनुवाद एक ऐसा निश्चित, सीमित निर्दिष्ट पंथ है कि जिसमें होकर सफलता पूर्वक पार हो जाना भाग्यशाली का कर्म है। यतीन्द्रजैनलेखसंग्रह के लेखों की रचना प्रायः अधिकतर एक-सी मिलती हुई होने पर वाक्य-विन्यास इतना शिथिल है कि अभीष्ट की प्राप्ति में उलझन पड़ जाती है। सर्व से अधिक जो द्विधा रहती है, वह है लेख के न्यास करनेवाले की शोधने की। अनेक लेखों से पता ही नहीं चलता कि प्रतिमा का करानेवाला कौन व्यक्ति है?, जैसे देखिये 'धरणा पुत्र वेला भार्या विमलादे पुत्र खेमा, गेला, गजादिनि०' प्रतिमा करानेवाला धरणा है या वेला? 'धरणापुत्र वेला' इस प्रकार के लेखन से तथा धरणा की स्त्री का नामोल्लेख भी नहीं होने से तथा वेला तीन या अधिक लड़कों का पिता है से यही ध्वनि निकलती है कि

इस प्रतिमा का करानेवाला बेल्ट था और प्रतिष्ठा क समय से पूर्व संभवतः मातापिता मर चुके थे। यही अनुमान सत्य है—मेरा यह दावा नहीं है।

२ लम्बाहू ७७ में 'जीवितस्वामि' पद का प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि देवराजन अपने माता-पिता की जीवितवस्था में ही घीतलनायबिम्ब प्रतिष्ठित करवाया, परन्तु इससे यह सिद्धान्त स्थिर नहीं किया जा सकता कि बिम्ब लेख में 'जीवितस्वामि' पद का प्रयोग नहीं हुआ हो वहाँ लख क सिम्बानवाले क माता, पिता, या पति उस समय से पूर्व मर चुके थे? लम्बाहू १८, २१, २६, ३७, ४३ ४६, १३९, १६१ में भी इस पद का प्रयोग है। अथकर्म करानवाली कबल स्त्रियाँ हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि 'जीवितस्वामी' पद का प्रयोग सौ० स्त्रियों के घीतालस्तोत्रों में 'अधिक' मिलता है।

३ कबल मंगलशुभक शब्दों पर कुछ पदों को छोड़ कर शेष प्रत्येक लख का पूरा पूरा अनुवाद किया है। वहाँ एक ही शब्द के अधिक लख प्राप्त हुए हैं, वहाँ उनका अर्थ तक भी देने का प्रयत्न किया गया है। परस्पर भिन्नवाले दो या अधिक लेखों के नीचे धरणा-लेख दिया गया है। बिम्ब लेखों में दुर्बोधता एवं अस्पष्टता है, उनको यथाशक्या स्पष्ट करने का पूरा पूरा प्रयत्न किया गया है। प्रत्येक लेख

के अनुवाद को तत्सम्बन्धी ग्राम, तीर्थ, नगर और जिनालय के नाम से तथा देवकुलिका की क्रम-संख्या से शीर्षाङ्कित किया गया है। अर्थात् ग्राम, तीर्थ, नगरवार; सेरी, मोहला और मन्दिरवार तथा देवकुलिकाओं की संख्यावार उनको वर्गीकृत किया गया है। ऐसा करने का उद्देश्य पाठकों को सुविधा देना तो है ही, परन्तु कार्य को सुगम बनाना प्रथम है और अतः अनिवार्य है।

लेखों की भाषा, शैली और लिपि—

लेखों में वर्णित विषय गद्य में है। समूचे पृस्तक में केवल ५ श्लोक आये हैं। लेखों की भाषा संस्कृत होते हुए भी अशुद्धता लिये हुए है, परन्तु निश्चित और संमत है और वाक्यविन्यास की दृष्टि से अप्रौढ़ है, फिर भी व्यवहारिक है। वाक्यों में शब्दों का क्रम कलापूर्ण नहीं है परन्तु, सोदेश है। अशुद्ध, अप्रौढ़, कलाविहीन होते हुए भी भाषा निश्चित-सी हो गई है। ग्यारहवीं शताब्दि के और सतरहवीं अठारहवीं शताब्दि के लेखों की भाषाओं में कोई अन्तर नहीं दिखाई देता। निम्न उदाहरण देखिये:—

लेखाङ्क ३३१--सं० १०११ आपाढसुदि ३ शनीश्वरे  
सनढमार्या नयणादेवी पुत्र वसीया भार्या वयजलदेवी पुत्र  
लाखसिंह तेन श्रीपार्श्वयुग्म कारितः, वृहद्गच्छीयपरमानन्द-  
सूरिशिष्यश्रीयक्षदेवसूरिभिः प्र० ।

सन्नाह ३१९—सं० १८६९ पौषसुदि १२ गुरो भी  
 ऋषभदेवजी पादुकाम्यो नमः, म० श्रीविघ्नयलक्ष्मीचरिभिः  
 प्रतिष्ठित लोटीपुरपट्टणे ।

भापा का यह स्वरूप आज तक ज्यों का त्यों चला  
 आ रहा है । आज क प्रतिमा लखों में भी अब कि भापाओं  
 की उन्नति आयातीत होती चली जा रही है, दमार प्रिसा  
 लेख लिखनवाले भापा को बिकाम नही द रह हैं । उसी  
 स्वरूप को मास और छात्रीय मान बैठ है, और डौली को  
 भी ब्य धना दिया है ।

१ अ-प्रत्येक लेख की यादि में संबत् ।

ब-उत्पधात् माह, तिथि और दिवस ।

अधिक प्राचीन लेखों की यादि में अधिकतर कबल  
 संबत् का ही उल्लेख मिलता है । जैसे सन्नाह १८७, ३२१,  
 ३२३, ३२३ को देखिये । तेरहवीं शताब्दि स संबत्, माह,  
 तिथि, दिवस का उल्लेख नियमित रूप से मिलता है ।

२ संबत्, दिवसादि क पधात् व्यवहारी, भेष्टि के ग्राम,  
 जाति, गोत्र और कहीं गण्ड का उल्लेख होता है । ग्राम क  
 नाम लेखों क अन्त में भी पाया जाता है । किसी किसी  
 लेख में स सर्वाङ्ग न होकर कम भी होत हैं ।

३ उत्पधात् व्यवहारी-भेष्टि का नाम या उसके पूर्वजों

के नाम मय -विशिष्ट पद चिह्न जैसे संघवी, मंत्री और मह-  
त्तम आदि अनुक्रम से होते हैं । कहीं कहीं आचार्यादि नाम  
भी इस स्थल पर मिलते हैं । ऐसे लेख बहुत कम हैं जिनमें  
श्रेष्ठि पुरुष के नाम नहीं है । ऐसे भी लेख हैं जिनमें पूर्वजों  
के नाम नहीं है ।

४ तत्पश्चात् उस स्त्री और पुरुष का नाम होता है  
जिसके श्रेयार्थ वह पुण्यकार्य किया जाता है । अगर व्यव-  
हारी अपने श्रेयार्थ ही वह पुण्यकार्य करवाता है तो वहाँ  
आत्मश्रेयार्थ या स्वश्रेयार्थ लिखा होता है ।

५ तत्पश्चात् विम्ब और पट्ट का उल्लेख होता है ।

६ तत्पश्चात् गच्छ, गच्छान्तर, शाखादि के साथ प्रतिष्ठा  
करनेवाले आचार्य, साधु का नाम, उनके गुरु आदि पूर्वाचार्यों  
के नाम-अनुक्रम से होते हैं । गच्छ का नाम कहीं कहीं  
लेखों के अन्त में भी होता है । ऐसे पांच लेख हैं जिनमें  
प्रतिष्ठा-कर्त्ता आचार्यों के नाम नहीं हैं । अन्य उगन्तीम  
लेख ऐसे हैं जिनमें से नौ में गच्छ और आचार्य के और  
बीस में गच्छ के नाम नहीं हैं ।

७ क्रियापद कहीं आचार्यादि के नाम के पहिले और  
कहीं पश्चात् होता है ।

८ शुभं भवतु, श्री श्री आदि मंगलसूचक शब्द हमेशा  
जहाँ कहीं भी होते हैं लेखों के अन्त में रहते हैं ।

खिला और प्रतिमा के लेखों की लिपि देवनागरी होती है। अक्षरों का आकार प्राचीन लिपि का होता है। परन्तु यह कहना पड़ेगा कि समय की गति के साथ लिपि की गति भी परिवर्तित होती रही है। अक्षरों का आकार उच्चरो चर परिमार्जित होता चला आया है। अधिकतम प्राचीन लेखों के अक्षरों का आकार इतना विभिन्न होता है कि उनका पढ़ना उस पुरुष के लिये ही संभव और सम्भव है कि जो प्राचीनतम लेखों के पढ़ने का अभ्यासी हो। दो बातें जो स्पष्ट होती हैं—एक यह है कि ऐसे भी लेख हैं जिनकी रचना से यह पता नहीं चलता कि लेख को उत्कीर्ण करानेवाला तथा पुष्पकर्म करने करानेवाला व्यक्ति कौन है ? तथा उस लेख में उचित व्यक्तियों में से कौन उस दिन उपस्थित या अतिथि था ? कोई एक सिद्धान्त स्थिर करके ही यह जाना जा सकता है।

दूसरी बात यह है कि ऐसे भी लेख हैं जिनसे प्रतिष्ठा कहाँ हुई ? किस ग्राम के वासीन करवाई का पता चलना भी कठिन होता है। जैसे 'राजपुर' अर्थात् प्रतिष्ठा राजपुर में हुई, परन्तु प्रतिष्ठा करानेवाला भेष्टि राजपुर का या या अन्य ग्राम का ? प्रश्न रह जाता है। ऐसी स्थिति में वह भेष्टि राजपुर का ही निवासी या मानना अधिक उपयुक्त एवं संभव होता है। इसी प्रकार राजपुर निवासीने प्रतिष्ठा करवाई का अर्थ 'राजपुर' शब्द के अभाव में राजपुर में

प्रतिष्ठा करवाई अर्थ लेना पड़ता है । जहाँ प्रतिष्ठा हुई हो, अगर ग्राम का नाम भी दिया हो तब तो कोई प्रश्न ही नहीं बनता है ।

### व्यवहारी, श्रेष्ठि के नामों की विचित्रता—

प्रथम बात जो यहाँ कहनी है वह यह है कि नामों में आजकल जो लाल, चन्द्र, राज, सिंह, देव, मल आदि प्रत्यय होते हैं वे १६ वीं शताब्दि से पूर्व के नामों में प्रायः नहीं मिलते, अर्थात् नाम एक-शब्दात्मक ही होते थे या लिखे जाते थे । एक-शब्दात्मक नाम का रूप भी कहीं कहीं ऐसा विचित्र मिलता है कि इम विकाश के युग में भी जिनका अर्थ और रूप समझना बड़ा कठिन हो जाता है । उम समय के पुरुषों और स्त्रियों के नामों के उच्चारण की घनि उस युग के वातावरण की अनुमारिणी थी—यह ऐतिहासिक या वैज्ञानिक तत्त्व इन नामों की बनावट में ओत-प्रोत समाया हुआ है, या यों कहना चाहिये कि उस युग ने ही नामों की ऐसी एक-शब्दात्मक रचना की । दशवीं शताब्दी से भारत में यवनों के आक्रमणों का जोर बढ़ चला था । चारों ओर क्रोध, उत्साह, घृणा, जुगुप्सा, आक्रोश के भाव बढ़ते चले जा रहे थे, जिनका अन्त अकबर बादशाह के समय में जा कर होना प्रारम्भ हुआ । अकबर बादशाह के समय में बाहरी आक्रमणों का अन्त पूर्णतः हो गया था और सर्वत्र



अत्याचार, बडास्कार रुक-से गये थे। प्रेम और धान्ति का वातावरण पुनः स्थापित होने लगा था। मनुष्य अब क्रोधातुर, आक्रोश में होता है, अबका राग-द्वेष मरे धर्मों में बोलता है या किसी मय पुरुष के साथ विरम्वहारपूर्ण व्यवहार करता है, उस समय वह मेघराज क स्वान पर मेघा, रामचन्द्र क स्वान पर रामा बोलता है। युद्ध करत समय देवह्वय, परह्वय, मरह्वय, माघव्य राउल आदि नामों का प्रयोग प्रिय, महव्य एव उत्साह बंधक होता है।

रामाद, मारह्वयद, माघव्यद आदि स्त्रियों के नामों से हमें उस समय क वीरपुरुषों की देवी अर्थात् रणचण्डिका के प्रति आस्था और भद्रा का परिचय मिलता है और माय ही स्त्रियों में भी रौद्रभाव अबका औजस्य भरा होता है और उस समय में स्त्रियों में रह हुए ये भाव स्थापित और हर्षित कर रहने चाहिये ये का परिचय मिलता है। रामा और रामू का प्रयोग प्रेमभरा भी कहा जा सकता है, लेकिन मात्र बर्षों क लिये। एक ही नाम को भिन्न भिन्न समातिरेक में किस प्रकार तोड़मरोड़ कर अपभ्रंशित कर बोला जाता है का उदाहरण नीचे देखिये। इस उदाहरण के देने का मूल अर्थ यह है कि उस काल में किस राम का अतिरेक था। पाठक मस्तिष्क समझ सकेंगे। शृङ्गार, धान्ति और करुण इस सतोगुणी हैं, हास्य, वीर और रौद्र रजोगुणी तथा मया नक, भीमत्स और अव्यसृत इस तमोगुणी हैं।

- १ शृङ्गार-रामचन्द्र, रामलाल, प्रेमचन्द्र, वृद्धिचन्द्र ।  
 शान्त -राम, प्रेम, वृद्धिचन्द्र, वृद्धा ।  
 करुण -राम, रामू, प्रेम, प्रेमू, वृद्धु, वृद्धा ।
- २ वीर -रामसिंह, रामल, प्रेमल, प्रेमसिंह, वृद्धिसिंह ।  
 रौद्र- रामसी, प्रेमसी, वृद्धसी, वरदसी ।  
 हास्य--रामो. प्रेमो, वरदो ।
- ३ भयानक--रामा, प्रेमा, वरदा ।  
 वीमत्स--रामला, प्रेमला, वरदा ।  
 अद्भुत--राम्या, प्रेम्या, वरद्या ।

प्रस्तुत पुस्तक में आये हुए नाम रजोगुणी एवं तमोगुणी रसों की रचना है। यवन आततायियों का हिन्दुओं पर अत्याचार, गजा राजाओं में परस्पर मान एवं मिथ्या गौरव को लेकर द्वन्द्वता और उममें मोली प्रजा का सर्वनाश, व्यापार एवं कृषिकी हानि, तलवार के घनियों का निर्बलों पर, व्यापार एवं कृषिप्रियतथा शूद्र जातियों पर आतंक और अत्याचार, रात-दिन युद्ध में लगे रहनेवालों के लिये व्यापारी एवं कृषकवर्ग को तथा शूद्रों को आयुभर बैठ और बैगार करते रहना, योद्धाओं का म्यान और योद्धाओं की सुविधा के लिये व्यापारी, शूद्र और कृषकवर्ग के इस प्रकार अमानुषिक उपयोगने युग की शान्ति को भंग कर दिया, गृहस्थ का सुखमरा जीवन

नष्ट कर दिया, प्रेम, स्नेह और सदानुभूति की इतिभी कर ही। इस प्रकार व्यापारी, शूद्र एवं कृषकवर्ग लगभग ५०० वर्षों तक पदवसिष्ठ और आर्तकृति रहा, उस समय विप्र पूरणीय और क्षत्री योद्धा होने के कारण सम्माननीय थे। क्षत्री लोग, व्यापारी, शूद्र एवं कृषकवर्ग के पुरुषों को एक-व्युदात्मक और वह भी अपमानजनक नाम लेकर बोलाते थे। जैसे मूषपन्द्र को मूठा, मूठ, मूठिया, मूस्या और योद्धाओं को मसूहा, मूछण, मूठसी एवं मूठसिंह कह कर बोलाते थे। इस प्रकार यह हुआ कि इन वर्गों के नाम ऐसे ही रहने और पढ़ने लगे। अंतर इतना हुआ कि मूठा, मसूहा, मूछण व्यापारी एवं कृषकवर्ग के पुरुषों के नाम रहे और मूठिया, मूस्या, मूठा शूद्रवर्ग के पुरुषों के नाम पड़े। भरे विचार से अब पाठक समझ गये होंगे कि नामों की इस वैचित्र्यपूर्ण रचना और आकृति में वह अज्ञान्त युग झलक रहा है। ये नाम उस युग की वैज्ञानिक एवं रासायनिक प्रणियों हैं, उस युग के वातावरण के, पारस्परिक व्यवहार के, सम्पत्ता नैतिकतापूर्ण सम्बन्ध के पट हैं, पाठ हैं। नामों की यह आकृति उपहास एवं विस्मय की वस्तु नहीं, बरन् इतिहास की संरक्षणीय एवं संग्रहणीय संपत्ति है।

अनुक्रमणिका का महत्त्व—

बिना हमी के एक तासा खोलने में कितना समय

लग जाता है और इसके उपरान्त चित्त को कितनी बेचेनी और पीड़ा होती है, मस्तिष्क में कैसा धक्का लगता है—यह या तो वे जानते हैं जो अनुभवी हैं, या वे जिनकी कभी कुंजियाँ गुम गई हों, जहाँ सैकड़ों तालों की कुंजियाँ हों ही नहीं या गुम गई हों, फिर वहाँ तो व्याकुलता का पार ही नहीं रहता। अनुक्रमणिकाओं के बिना ऐसी ऐतिहासिक पुस्तकें अकारण झंझट हो जाती हैं। लेखक या संपादक अनुक्रमणिकाएँ बना कर पाठकों को एक अद्भुत सुविधा तो प्रदान करते ही हैं, साथ में पुस्तक की उपयोगिता भी अनन्त बढ़ जाती है। हम पर-सुविधा के अतिरिक्त लेखक तथा संपादक को अनुक्रमणिकामें विनिर्मित करते समय लेखों में स्थान तथा आचार्य और पुरुषों के नामों में, वर्ष, माह, तिथि और दिनों में, जाति, गोत्र, संप्रदाय, गच्छ, सन्तानीय, शाखा, प्रशाखा, आचार्य और पुरुषों की सन्तति की परम्पराओं में जो त्रुटियाँ नेत्रदोष के कारण लेखों की प्रतिलिपि करते समय आ जाती हैं, अथवा मूल लेखों में वर्षा, आतप, भूकंप, जैसे प्रकृति के सगों के कारण शीर्णता और भग्नता, अधिक काल व्यतीत हो जाने के कारण जीर्णता, और विधर्मी आततायियों के दुष्प्रहारों के कारण भग्न होने से विकृति, और अस्पष्टता आ जाती है, वे पूर्ण समान अथवा कुछ अंशों में मिलनेवाले लेखों के परस्पर मिलान से अत्यधिक दूर हो जाती हैं। लेखक का श्रम सफल हो

जाता है और पुस्तक अत्यन्त उपादेय और एक ऐतिहासिक सत्य बन जाती है ।

ज्यों ज्यों अनुक्रमणिकाएँ बनती जाती हैं, लेखकमें अधिकधिक साधन सामग्री छुटाने के माब बढ़ते जाते हैं और लेखक में अधिक धम, अनुशीलन, मनन और विवेचन करने की मधुर रुचि बढ़ती जाती है और इन प्रकार पुस्तक अधिकतम सत्य एवं सुन्दर बन जाती है । खिला एवं प्रतिमा-छेत्नों में आये हुए संघर्ष, हासि, मोत्र, डल, धासा, ग्राम, नगर, तीर्थ, गृहस्थ, गच्छ, आचार्य, राधा, मन्त्री, भेष्टी आदि सर्व की परिचायिका अनुक्रमणिका है । घोषकों का यह समय और घन बचानेवाली है । इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए प्रमुख प्रमुख सर्व प्रकार की अनुक्रमणिकाएँ देने का प्रयत्न किया है ।

अन्तिम निवेदन ।

मैंने पुस्तक को साधनसामग्री एवं योग्यतासुसार अधिकतम ऐतिहासिक एवं ठणिकर और उपादेय बनाने का प्रयत्न तो किया है, लेकिन फिर भी अनेक त्रुटियों एवं कथियों का रह जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है । मेरी शक्ति के बाहर की बातों के लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ । एक बात जो मेरे साधियों से निवेदन करनी है वह यह है कि मैंने इस कार्य को बिस धैर्य एवं मार्ग से पूर्ण किया है

और वह शैली एवं मार्ग किस प्रकार असुविधाओं से खाली पाया जा सकता है जिसका विवेचन मैंने स्थल स्थल पर दिया है को वे मनन, अनुशीलन कर अपने श्रम, समय और पैसे की पर्याप्त बचत कर सकते हैं ।

आचार्यदेवने मुझको यह कार्य देकर जो मेरा मान और अनुभव बढ़ाया है, मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ और उसके लिये आपका अमर आभारी रहूँगा । मृनि श्रीविद्याविजयजी साहव तथा सागरविजयजी का भी इस पुस्तक में अनेक भांति से श्रम मिला हुआ है, वे भी अनेक धन्यवाद के पात्र हैं ।

महावीरजयन्ती	}	श्रीवर्धमान जैन	}	संपादक-
चैत्र शु० १३ बुधवार		बोर्डिंग हाउस		दौलतसिंह लोढ़ा जैन
विक्रम स० २००५		सुमेरपुर(मारवाड़)		'अरविन्द' वी. ए.



# १ विहार—दिग्दर्शन ।

[ धीरापल्लीतीर्थ से प्रारंभ हुआ ]

ग्राम नाम.	अंतर (घोरे )	वेगमंदि.	वेगवस्ती
धरमान	३	१	३
संभार	४	२	२५०
ज्यारणी	२ $\frac{१}{२}$	१	१४
कृष्णाबाबा	६	०	८
फनहोवरा	१	०	२
राधो	१	०	३
जाबळ	१ $\frac{१}{२}$	०	३
बईबाबा	२	०	५
बनोबा	२	०	५
बदनाळ	४	०	२
भीळकिथा	१	३	४
नेहडा	१ $\frac{१}{२}$	१	२०
जेरगाड	१	०	३
मानपुर	१ $\frac{१}{२}$	०	०
नारायण	१	०	०
बास्वम	१	१	२५
बासणा	१ $\frac{१}{२}$	१	३५

लुआणा	३	१	२५
खोरला	३	०	१
मसुपुर	३	०	०
थराद	१	१२	६००
पावड मोटी	३	१	१८
जेतडा	२ $\frac{१}{२}$	१	२५
पडादर	३ $\frac{१}{२}$	०	०

## २ लेखोंकी ग्राम, नगर, तीर्थ क्रम से अनुक्रमणिका

ग्राम नगर, तीर्थ	लेखाङ्क
थराद ( वनास कांठा )	१ से २७३
जीराडला तीर्थ ( सिरोही )	२७४ से ३१७
छोटाणा तीर्थ        "	३१८ से ३२१
सेलवाडा               "	३२२
महावीरमुछाला ( घाणेराव )	३२३, ३२४
वरमाण	३२५ से ३२८
आरखी	३२९, ३३०
दयाणा तीर्थ	३३१
काछोली	३३२
पिढवाडा	३३३
मीलडिया तीर्थ	३३४ से ३४४
नेसडा	३४५, ३४६



बास्पय	३४७, ३४८
बासना ( पाठमपुर )	३४९ से ३५३
सुधाया	३५४ से ३६८
सोटी पावड़ ( बाब )	३६९
जेठड़ा ( बराह )	३७० से ३७४

### ३ लेखों की स्थान क्रम से अनुक्रमणिका—

धराद—	मोसकों की सरी—
सेठों की सेरी—	४ हरदण्डपमदेव चैत्य भातुमय मूर्तिर्बो २०५ से २२७
१ बीरचैत्यान्वर्गैत वासुपूम्प चैत्य भातुमय पंच तीर्थिर्बो १ से २२	देघाईयों की सेरी
२ बीरचैत्य में चौबीसी पंच तीर्थिर्बो २३ से ३४	५ बिमलनाथ चैत्य चौबीसी, पंच तीर्थिर्बो २२८ से २५१
३ बीरचैत्य में आदिनाथ चैत्य चौबीसी पंच तीर्थिर्बो ३४ से २०४	सुमारों की सेरी—
	६ पार्श्वनाथ चैत्य भातु चौबीसी पंचतीर्थिर्बो २५२, २५३
	आमली सेरी—
	७ सुपार्श्वनाथ चैत्य—

धातु चौबीसी,	
पंचतीर्थियाँ २५४ से २५९	
राशिया सेरी--	
८ अभिनन्दनस्वामी चैत्य	
धातु पंचतीर्थी	
चौबीसी २६०, २६१	
मोदियों की सेरी--	
९ विमलनाथ चैत्य--	
धातुपंचतीर्थी	
चौबीसियाँ २६२ से २६७	
सुतारों की सेरी--	
१० आन्तिनाथ चैत्य	
धातुपंचतीर्थी, चौबी-	
सियाँ २६८ से २७३	
जीराउलातीर्थ--	
१ देवकुलिकाओं	
के लेख--२७४ से ३१६	
२ चतुष्पिका स्तम्भ पर ३१७	
लोढाना तीर्थ--चैत्य--	
१ कायोत्सर्गस्थ--	
प्रतिमा ३१८	
२ ऋषभदेव-पादुका ३१९	

३ मंडपगत सपरिकर	
प्रतिमा ३२०	
४ धातुमय पंचतीर्थी ३२१	
सेलवाडा--	
धातुमय पंचतीर्थी ३२२	
महावीर मुछाला--	
१ मन्दिर की भमती	
की छत में ३२३	
२ प्राचीनखडित	
पद्मासन ३२४	
वरमाण तीर्थ--	
१ कायोत्सर्गस्थ-प्रतिमा	
३२५, ३२६	
२ पटचतुष्पिका के	
स्तम्भ पर ३२७	
३ पद्मशिला पर ३२८	
आरखी--	
धातुमय पंचतीर्थी	
३२९, ३३०	
दयाणा तीर्थ--	
कायोत्सर्गस्थ-प्रतिमा ३३१	



### काठोली

पार्श्वनाथ-मन्दिर ३३२

### विहवाडा-

वीरचैत्र में पातु प्रतिमा ३३३

### मीलडिया तीर्थ

१ पंच तीर्थियों ३३४, ३३५

२ पातुका पुगळ ३३६, ३३७

३ भूमिगृह पंच

तीर्थियों ३३८, ३३९

४ पद्यासन की मीठ

पर ३४०

५ मोपान के पास

स्थान पर ३४१

मीलडीग्राम (गृहमन्दिर में)

१ मूळनाथक प्रतिमा ३४२

२ अम्बिका मूर्ति ३४३

३ अधिष्ठापक मूर्ति ३४४

### मेसडा-

पार्श्वनाथ मन्दिर ३४५, ३४६

### वास्पम-

१ पातुमच पंचतीर्थी ३४७

२ चरणपातुका ३४८

### वासणा ।

१ पातु पंचतीर्थी ३४९

२ चन्द्रमम विच के

नाम भाग में ३५०

३ चन्द्रमम विच के

दाहिने भाग में ३५१

४ चन्द्रमम-विच

मूळनाथक ३५२

५ पद्यासन के नीचे ३५३

### सुभाणा ।

१ विमलनाथ विम्ब ३५४

२ महावीरविम विम्ब ३५५

३ पातु चौबीसी पंच

तीर्थियों ३५६ से ३६८

### मोटी पावड ।

पातु चौबीसी ३६९

जेठडा (गृहमन्दिर)

३७० से ३७४

## ४ संवत्सरवार अनुक्रमणिका ।

संवत्	लेखाङ्क	संवत्	लेखाङ्क
ग्यारहवीं शताब्दि ।		चौदहवीं शताब्दि ।	
१००१	३३३	१२४२	३२८
१०११	३२१, ३३१	१२४४	२१६, ३४५
१०४६	१८७	१२६१	२०३
१०६२	३२३	१२६३	५१, ३०८ (अ)
<u>४</u>	<u>५</u>	<u>११</u>	<u>१२१</u>
बारहवीं शताब्दि ।		तेरहवीं शताब्दि ।	
११३०	३१८	१३०३	३३२
११४४	३२०	१३०९	१०६, १९९
११४८	१८०	१३३४	३३९
११५९	२२७	१३४१	१४९
<u>४</u>	<u>४</u>	१३४४	३४३, ३४४
१२०४	१७३	१३४९	२०
१२०९	२५९	१३५१	३२५, ३२६
१२१४	३२४	१३४७	५५
१२१७	२००	१३५९	१५८
१२२०	८५	१३६४	१११
१२४०	३४९	१३६७	३३४
		१३६९	५७, ३४६

१३७३	१२९	१४३३	२१
१३७७	१९२	१४३४	७
१३८७	१७९	१४३५	१०२
१३९२	२४९	१४३६	९९
१३९४	१९३	१४३६	११२, १७०
१३९९	१ ७	१४३७	२०२
<u>१८</u>	<u>२२</u>	१४४२	१६१, २२८
		१४४९	१५९, ३४७

पन्द्रहवीं शताब्दि ।

१४०१	९१	१४५०	१३६
१४ ४	१७८	१४५२	१८१
१४ ६	३३०	१४५३	६२, १८४
१४११	२२४, ३१	१४५६	१८२
१४१२	२०१, २११	१४६२	१०३
१४१३	३०९	१४६५	१८३
१४१७	१३	१४७१	७५, १५२
१४२१	६, ३०३ (अ) ३०४ (अ)	१४७२	३६९
१४२२	३४५	१४७४	२८७
१४२४	२९२ (अ)	१४७९	६६, ११३, २ ६
१४२५	३७२ ३७४	१४८०	२०५
१४२९	१५	१४८१	२१८ २७४,
१४३०	१०९	१४८३	२७५, २७६
			६०, १५४

१४८३ २३, २०८, २६८,  
 २७८ से २८६,  
 २८८, २८९, २९०  
 से ३०१, ३०३ (ब),  
 ३०४ (ब), ३०५ से  
 ३०८, ३१२, ३१३

१४८४ १६९, १८६

१४८५ ७०, १७६, २३०

१४८६ ३२७

१४८७ २७७, २७८, ३१६

१४८८ ५८, २३७, ३७३

१४८९ १८८, १९८

१४९२ ३१४

१४९३ ७३, ९८, १६३,  
 २४४

१४९४ १९६, २७३

१४९५ १४

१४९६ १८५

१४९७ ५४

१४९९ ५०, ७८, १३२,  
 १९०, २३८, २५५

४८

११०३

### सोलहवीं शताब्दि ।

१५०१ ४, १६, ६५, ९१,  
 ९६, १५३

१५०३ १५०, १६०,  
 १६२, २१०, २१९

१५०५ १, २४, ६९, ९७,  
 १३९, १४२, २०९,

३६०

१५०६ ४३, ४६, ७७,

१०४, ११९, १५६,

२२८, २४३

१५०७ ६४, १४८, १९७,  
 २४८, ३३८

१५०८ ४५, ७४, २५२,  
 २५४, २५६

१५०९ १९, २२

१५१० ४२, ४८, ८१,  
 ८८, १००, १४७,

१५७, २२१, ३६५

१५११ १८, ६७, ८६,  
 ९४, ११८, १२१,

३५६

१५१२ १ २२९

१५१३ ३, १७, २८, १३३,  
१७४, २२०, ३६३

१५१५ २ ३६, ५६, १४४,  
१५४, १९१, २१२,  
२६२, ३६८

१५१६ ३२ ६१ ८३,  
१४०, १४१

१५१७ ३०, ४४, ५९, ७१,  
८४, ९३ १३०,  
१९५, ३५९

१५१८ २३५, २६९

१५१९ ८, ३५ २६१,  
२६३, २७२

१५२० १४३ २३९ ३६४

१५२१ १२३

१५२२ ४० ३५७

१५२३ १२८ २४२ ३५८

१५२४ १९, १४५ १५५

१५२५ २५ ८७ २१४,  
२४०

१५२७ ७९, १३४ १३८,  
१५१, १६५

१५२८ ५, १२, २६, ३६,  
४९, ३९२

१५२९ ८२, १४६, १७१

१५३० ९०

१५३२ १२४, १७२,  
२३६, ३६१

१५३३ ३९, १६८, २१५

१५३४ ३८ ५२, १३५,  
३०२

१५३५ ६२, ७२, ३३५

१५३६ ११, ९५, १३०,  
१३९

१५३७ १३७, १६७, १७५

१५३८ २१३

१५४३ १२६

१५४५ २१७

१५४७ १९४

१५४८ १३१

१५५२ १६३, १८९

१५५३ ६८, २६

१५५४ १२७

१५५५ २११

१५६०	१२२, १२५
१५६१	८९
१५६३	३१
१५६४	२४६
१५६५	२२२
१५६७	२५८
१५६८	२३३
१५६९	२३४
१५७२	१०१, ००४
१५७८	११६
१५८०	२५
१५८१	८०, २४१, २४७
१५८२	२०७, ३६७
१५८३	१०
१५८४	२३१
१५८७	२७०
१५९०	३६४
१५.	१७७
<u>५९</u>	<u>१८०</u>

सतरहवीं शताब्दि ।

१६११ २३२

१६१२	२२५
१६१३	११७
१६१५	५३, ८७
१६१७	२७, ११४, ११५,
—	२५३, २७१
१६१८	४७
१६२४	२५१, ३६२
१६५४	३३
१६६१	२६५
१६६२	११०, २६६
१६६५	३६६
१६८१	२५०
१६८३	१०५, २५७
<u>१३</u>	<u>२१</u>

अठारहवीं शताब्दि ।

१७०८	१०८
१७५७	४१
१७८२	३४८
१७८५	२२३
<u>४</u>	<u>४</u>

उत्तीमवीं शताब्दि ।

१८३३ ३७०, ३७१



१८३७	२३६, २३७	बीसवीं छताम्बि ।
१८५१	२१७	१९९५ २५०, २१, २५२,
१८६९	२१९	२५४, २५५
१८९२	२४२	१९९७ २५३
<u>५</u>	<u>७</u>	<u>२</u> <u>६</u>

### ५ गच्छधार अनुक्रमणिका ।

पत्र.	केन्द्र	गच्छ	केन्द्र
बीसवागच्छ	१६ २६ ३३, ३४, १२०, १३७, १४६, १७५, १८९, १९४, १९५, २०९, २३७, २३९, २५४, २६३, २७२, २७७, २९४, २९५ ( अ ) २९६, २९७ २९८, २९९, ३ ७, ३०१, ३४७ ३ ८ ( अ ) ३६१	बपसगच्छ } १०, ४० ३०३ बपकेसगच्छ } ( अ ) ३२१ बकेसगच्छ }	काछोडीगच्छ ३३२
आगमगच्छ	१ ७५, ८२ २४७, ३०४ ( अ )	कृष्णविगच्छ २८८, २९१	कुरुभामतिगच्छ १ ८, १०९, २२३, २६५
		कोरिंगच्छ मजा } ७ २०५ बाये सम्थानीय }	कारतरगच्छ ४८ ६६, ७२, ७३, ८४, ९७, १३६, ३३९.

चैत्रगच्छ } ३, १७, ३७, ६७,  
 धारणपदीय } १०६, १५५,  
 २१३, ३६७.

नीरापहीगच्छ(पृष्ठद्वगच्छीय)

६२, ९९, १३८,

२५६, ३०९, ३१०.

तपागच्छ } ३०, ३८, ४१,

वृद्धशाखा } ४७, ४९, ८५,

सविज्ञपक्ष } ९२, १२९,

१२७, १२८, १३५,

१४७, १५१, १५४,

१६३, १६७, १७९,

२१०, २१४, २३६,

२४२, २७१, २७४,

२७५, २७६, २७८,

२७९, २८०, २८१,

२८२, २८३, २८४,

२८५, २८६, २८९,

२९३, ३०३, ( व )

३०४, ( व ) ३०५,

३०६, ३०७, ३०८,

३१२, ३३५, ३३६,

३३७, ३३८, ३४२,

३५०, ३५१, ३५२,

३५३, ३५४, ३५५,

३५७, ३५८, ३६४,

३६६, ३७०, ३७१,

३७३.

धारापत्रीगच्छ ६१, ६५,

१४२, १६५, १७२,

२०६, २२९, २६८.

निगमप्रभावक ८०, २४१.

निर्यतिकुल ३१८

पिप्पलगच्छ } ५,

त्रिभविद्यापिप्पल } १२,

धर्मदेवसूरिसतानीय } १३,

२२, ३४, ३५, ३६,

४२, ४३, ४६, ५०,

५८, ५९, ६०, ६८,

७४, ७७, ७८, ८१,

८३, ८६, ८९, ९०,

१००, १०२, १०५,

११२, ११८, १३०,

१३१, १३२, १३४,

१४३, १४४, १४५,

१५२, १५३, १६१,  
 १६४, १८५, १८६,  
 १९ , १९६, १९८,  
 २०२, २२८, २३०,  
 २३८, २४५, २४८,  
 ३१६,

पूर्णिमा गण्ड	}	२	८, ११,
अश्लेषीय		१८,	२९,
श्रीमान्निषा		३१	३२,
प्रथमश्रावणीय		५३	५४
मीमपक्षीय		५६	७०,
षाडपूर्णिमा		७१,	७९,

९३, ९४, ९५, १०१  
 ११९, १२१ १२६  
 १३९, १४०, १४१,  
 १६६, १६८ १७८,  
 २ ७, २१७, २२१,  
 २२६, २४६ २६ ,  
 २६१, २६२, २६७,  
 २७३, ३५६, ३६०,  
 ३६२, ३६३, ३६८

दृष्टगण्ड,	}	२१९,
बहगण्ड सप्तपुरीय		३२०,
		२९२ (अ), ३३१
ब्रह्मगण्ड		१४, २३, २४, २५, ४४, ६९, ८७, ९१, १२९, १३३, १४८, १४९, १५८, १६०, १७१, १७७, १७९, १८८, २००, २२४, २३३, २४०, २४३, ३११, ३२२, ३२५ ३२६, ३२७, ३२८, ३७१

भाबडारगण्ड	}	९,
काठिन्याचार्यसंवासीय		२०,
		८८, ११३, १२४, १५० १५७, १६२, १७६ १९१, २३५, २५५

महाश्रीयगण्ड १०३ ३३४  
 पञ्चधारीयगण्ड २९२ (अ)  
 पञ्चोमसुरिसंवासीय ३२४

विमलगच्छ ३५९	१९३, २०१, २०३,
षडेरकगच्छ १७३, २०८	२०४, २११, २१६,
सरस्वतीगच्छ १७४, २६४	२२२, २२५, २२७,
सैद्धान्तिकगच्छ ४, १९,	२३१, २३२, २३४,
४५, १५३, २१२,	२४४, २४९, २५०,
२५२	२५१, २५३, २५७,
मिश्रित १५, २१, ३३, ५१,	२५८, २५९, २६६,
५२, ५५, ७६, १०४,	२७०, ३८७, ३०२,
१०७, ११०, १११,	३१३, ३१४, ३१५,
११४, ११५, ११६,	३१७, ३१९, ३२०,
११७, १५९, १७०,	३२३, ३२९, ३३०,
१८०, १८१, १८२,	३३३, ३४०, ३४१,
१८४, १८७, १९२,	३४३, ३४४, ३४५,
	३४६, ३४८, ३४९,
	३७४

## ६ आचार्य, साधुओं की अनुक्रमणिका ।

आचार्य गच्छ लेखाङ्क	आचार्य गच्छ लेखाङ्क
अमरदेवसूरि १११	अमररत्नसूरि (आगम) ८२
अमरचन्द्रसूरि(पिप्पल) ३५,	अमरसिंहसूरि (आगम) ७५
९०	
अमरदेवसूरि (चैत्र) २१३	आनन्दसागरसूरि (निग.
अमरप्रभसूरि (धर्मघोष) १९९	मप्रभावक) ८०, २४१

हरपत्रसूरि ( श्रीरा- पत्री )	१३८ २५६
हरयशसूरि ( विष्णु )	२२, ७७, ८३, ११८, १४५
हरबामन्दसूरि ( विष्णु )	१३, ११२
कञ्जसूरि ( वृषभेन्द्र )	४०, ३०३ ( अ )
, ( कोरेठ )	२०५
कमलप्रथमसूरि ( पूर्णिमा )	५३ १६८, २०७
कमलकसूरि ( वृषभेन्द्र )	१२५
कमलसूरि ( पूर्णिमापञ्च )	१६८ ३६३
कीर्तिशेखरसूरि ( सरस्वती )	१७४
क्षेमशेखरसूरि ( विष्णु )	८१
शुभवीरसूरि ( पूर्णिमा )	३२ ९५, १४०
शुभशेखरसूरि ( मागेन्द्र )	३९, २१५
, ( विष्णु )	१३
शुभरत्नसूरि ( विष्णु )	१३०

शुभसमुद्रसूरि ( पूर्णिमा )	७१, १४०, ३६०
, ( मागेन्द्र )	३६५
शुभाकरसूरि ( मागेन्द्र )	६
शानत्रयसूरि ( सर्वशोभ )	१९९
शानशेखरसूरि ( चैत्र )	३७
शानविमलसूरि ( वृषभेन्द्र )	४१
शानसागरसूरि ( मागेन्द्र )	२७
, ( हरवृषभेन्द्र )	४९
शानममसूरि ( विष्णु )	२४८
शानधिरसूरि ( महाहर )	३३४
शानिप्रथमसूरि	२६०
शानगसूरि	१४, १७९
शानकीर्तिसूरि ( शंभु )	१६ २७७, २९४,
	२९५, २९६, २९७,
	२९८, २९९, ३००,
	३०१,
शानकेसरसूरि ( शंभु )	२६, ६३ ६४, १२०,
	१३७, १४६, १७५
	१९५, २०६, २३५

२५४, २६३, २७२, ३६१,	
जयचन्द्रसूरि (तपा) २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८९, २९३, ३०३ (ब) ३०४ (घ) ३०५, ३०६, ३०७ ३३८	
जयतिलकसूरि (पिष्पल) २०२	
जयप्रभसूरि (पूर्णिमा) २६१, २७३,	
जयविजय ३४८	
जयवल्लभसूरि १९३	
जयशेखरसूरि (पूर्णिमा) २८, ५४	
जयसिंहसूरि (कृष्णर्षि) २८८, २९१	
” (पूर्णिमा) २६१	
जिनचन्द्रसूरि (पूर्णिमा) ७२, ८४,	
” २४९	
” (बृहद्) ३०९, ३१०	
३	

जिनदेवसूरि (भावहार) १९१	
जिनप्रबोधसूरि (स्वरतर) ३३९	
जिनभद्रसूरि (स्वरतर) ४८, ६६, ८४, ९७	
जिनमाणिक्यसूरि १०४	
जिनरत्नसूरि (बृहत्तपापक्ष) ३५७	
जिनराजसूरि (स्वरतर) ४८	
जिनवल्लभसूरि (स्वरतर) १३६	
जिनसुन्दरसूरि (बृहत्तपा) १२७, ३०३ (घ) ३०४ (ब)	
जिनहर्षसूरि (स्वरतर) २६७	
जिनेश्वरसूरि (स्वरतर) ३३९	
दिन्नविजयसूरि (बृहद्) २९२ (ख)	
देवगुप्तसूरि (उपकेश) ३०३ (अ) ३२१	
देवचन्द्र (पिष्पल) ३१६	
देवचन्द्रसूरि (पूर्णिमा) १४१, ” (बृहद्) ३०९, ३१०	

देवसुन्दरसूरि (पूर्विमा) २१७	पद्मसूरि (महाप्र) १४, ४४
देवसूरि २१, १९२	६९, ९१, १६०, २४३
देवाचार्य ३२०	पद्मचन्द्रसूरि (नागेश्वर) ५७
देवेश्वरसूरि २४९	पद्मसेखरसूरि (ममघोष) ९८
वनविष्णुसूरि १८४	पद्यानन्दसूरि ६८, ९६,
वनरत्नसूरि (बृहत्पा) ३६४	१२३, १३१ १९७,
वनेश्वरसूरि ३३०	२१८, २६९, ३२९
वरसंपत्सूरि (नागेश्वर) २७	परमानन्दसूरि (बृहत्) ३३१
वर्मघोषसूरि (कृष्णर्षि) ३०८ (ब)	पार्श्वचन्द्रसूरि १५९, १७०,
वर्मदेवसूरि (विष्णु) १०५	२१९
वर्मप्रमसूरि (विष्णु) ५८	पुण्यविष्णुसूरि १८१
६०, ८९, १५२	पुण्यप्रमसूरि (कृष्णर्षि) २८८
वर्मसेखरसूरि (विष्णु) ४३,	२९१, ३२७
४६ ५० ६० ७८ ८६	पुण्यरत्नसूरि (पूर्विमा) ११,
१३२, १४३ १५६ २१६	२९, ७१, ७९
वर्मसुन्दरसूरि (विष्णु) ८९	मधुसूतसूरि २४, २००
वर्मसूरि ( विष्णु ) १४३	महासूरि ३४५
वर्मसागरसूरि (विष्णु) ५,	श्रीकृष्णसूरि ( विष्णु ) १ ५
१२, ५९, ८९ १००,	३२४
३५९	शुद्धिवागरसूरि (महाप्र)
वर्मप्रमसूरि १५, २१	१२९, ३२२, ३७२
निम्बविष्णु ३४८	महेश्वरसूरि (महाप्र) ३२७

भावदेवसूरि (भावडार) १२४	
	२३५
„ ( कौरटक ) ७	
भुवनचन्द्रसूरि (तपा) २७९,	
२८०, २८१, २८२,	
२८३, २८४, २८५,	
२८६, २८९, २९३,	
३०८ (घ) ३१२	
भुवनप्रभसूरि (पूर्णिमा) १०१	
भुवनानन्दसूरि (नागेन्द्र) ५७	
मतिप्रभसूरि	२१६
मणिचन्द्रसूरि (ब्रह्माण) २३,	
	१३३, १४८
मलयचन्द्रसूरि (धर्मघोष)	
	२९०
महिमाविजयसूरि	३३६,
	३३७
महेन्द्रसूरि	१११
माणिक्यसूरि	२०१
मुनिचन्द्रसूरि	२३३
„ (पूर्णिमा) २६०	
„ „ ३४६	

मुनिप्रभसूरि (पिप्पल) १०२,	
	२४५
मुनिमिहसूरि (पिप्पल) ३५,	
	९०
„ (पूर्णिमा) ९३	
मुनिसुन्दरसूरि (तपा) ३८,	
२७८, २८९, २८०,	
२८१, २८२, २८३,	
२८४, २८५, २८६,	
२८९, २९३, ३०३(य)	
	३०४ (घ) ३०५,
	३०६, ३०८, ३१०
मेरुतुंगसूरि (अचल) २७७,	
	२९५ (घ) २९६,
	२९७, २९८, २९९,
	३००, ३०१, ३४७,
यक्षदेवसूरि (फकुदाचार्यमंता- नीय) १०	
„ (बृहद्) ३३१	
यशोदेवसूरि	३४९
यशोमद्रसूरि	३२४
रंगधिमलसूरि	३१७



रत्नवैद्यसूरि (पिण्ड)	१३१, १४५
" (वैत्र)	२१३
रत्नप्रमसूरि	१८२
रत्नशेखरसूरि (तपा)	३०, ३८, ९२, १४७, २१० ३३८, ३५८
रत्नशेखरसूरि (पूर्णिमा)	२४६
रत्नसिंहसूरि (तपा)	१५४, २७४, २७५, २७६,
" (नागेन्द्र)	१८३, ३६९
रत्नाकरसूरि (महात्म)	३११, ३२७
रत्निकर (महात्म)	३३४
राजसिंहकसूरि (पूर्णिमा)	१८, ९४, १२१ ३५६
राजेन्द्रसूरि (तपा)	३५, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४
रामचन्द्रसूरि (हरद)	३०९, ३१०

छत्तीवैद्यसूरि (वैत्र)	३, १७, ६७, १५५
छत्तीसागरसूरि (तपा)	३०, ३८, ९२, १२८, १३५, १५१, १६५ २१४, २३६, २४२, ३३५, ३९८
छत्तीसागरसूरि (महात्म)	२२४
वपरसेनसूरि	५१
विजयचन्द्रसूरि (वर्मशोध)	९८, २९०
विजयविनेन्द्रसूरि (तपा)	३७०, ३७१
विजयशामसूरि (तपा)	४७, २७१
विजयदेवसूरि (वैत्र)	३६७
" (पिण्ड)	१३४, १४४, १५६
विजयराजसूरि (पूर्णिमा)	१६६
विजयछत्तीसूरि	३१९

विजयप्रभसूरि (तपा)	४१
„ (पिण्डल)	११२
विजयसिंहसूरि (भावहार)	२०
„ (थिरापद्र)	६१,
	६५, १४२, १६५
विजयसेनसूरि	२२७
„ (ब्रह्माण)	३११,
	३२७
विजयसोमसूरि (तपा)	३३६
विद्याचन्द्रसूरि (पूर्णिमा)	३६२
विद्याशेखरसूरि (पूर्णिमा)	७०
विद्यामागरसूरि (मल्लधारी)	२९२ (ब)
विजयप्रभसूरि (नागेन्द्र)	९६,
	१९७
विमलसूरि (ब्रह्माण)	१७१,
	१७७, ३२२
विमलेन्द्रसूरि (सरस्वती)	१७४
वृद्धिसागरसूरि (ब्रह्माण)	१७१

वीरचन्द्रसूरि (जीरापल्ली)	६२, ९९
वीरप्रभसूरि (पूर्णिमा)	५३,
	११९, १३९
वीरसिंहसूरि (जीरापल्ली)	९९
वीरसूरि (भावहार)	९, ८८,
	१५०, १५७, १६२,
	१९१, २५५
„ (ब्रह्माण)	२३, २५,
	८७, १५८, २४०
शान्तिसूरि (थिरापद्र)	१६५
	१७२, २०६, २६८
„ (पढेरक)	१७३,
	२०८
„ (मल्लधारी)	२९२ (ब)
शालिभद्रसूरि (पिण्डल)	१३४, १४४
शुक्लविजय	३४८
शुभचन्द्रसूरि (पिण्डल)	७४
शेखरसूरि	३१८
श्रीधरसूरि	१४९

भीसूरि (अंशु) २३७, ३४७  
 " (पूर्णिमा) १२१,  
 १७८  
 ५२ ७६, १२६,  
 २११, २४४ २५१,  
 २७ , ३४६  
 सकलक्षीरिदिब (सरस्वती)  
 १७४  
 समरचन्द्रसूरि (पिष्य) ७४  
 सर्वेश्वरसूरि ( पिष्य) ३४  
 ( बारापत्र ) ६५  
 (बकगण्ड) १२०  
 सागरचन्द्रसूरि (जीरापट्टी)  
 १३८  
 ( पिष्य) १६१  
 , (साधुपूर्णिमा) १२६  
 सागरविष्णुसूरि (पूर्णिमा)  
 ३६८  
 सागरभद्रसूरि (पिष्य) १६४  
 साधुप्रथमुक्ति ५५  
 साधुरत्नसूरि (पूर्णिमा) २, ८  
 ५६, २११ २६२

साधुसुन्दरसूरि ( पूर्णिमा )  
 २१७, २६२  
 सार्वेश्वरसूरि (कोरट) \*  
 सिद्धाम्बसागरसूरि (अंशु)  
 १८९, १९४  
 सुमतिरत्नसूरि (पूर्णिमा) २९  
 सुमतिप्रथमसूरि (पूर्णिमा) ३१  
 सोमचन्द्रसूरि (शैलाम्बी) ४,  
 १९ ४५ १५३,  
 २१२, २५२  
 " (पिष्य) २१, ७७,  
 ८३, १९८  
 , (पूर्णिमा) २२६  
 सोमरत्नसूरि (नागेन्द्र) १२३  
 " (बागम) १४७  
 सोमसुन्दरसूरि (वपा) ३८  
 १२५, १६३ १६९,  
 २७८ २७९ २८०,  
 २८१, २८२, २८३,  
 २८४, २८५, २८६,  
 २८९ २९३ ३ ३(ब)  
 ३०४(ब) ३०५ ३ ३  
 ३०७, ३०८(ब) ३०३

सोभागरत्नसूरि (पूर्णिमा)	१२६	द्वैतविजयगणि (तपा)	३३६, ३३७
हरिचन्द्रसूरि (चैत्र)	१०६	हेमचन्द्रसूरि (कुमारपालगुरु)	८५
हरिभद्रसूरि (भढाहृदा)	१०३	हेमरत्नसूरि (आगम)	१
हर्षविजय मुनि (तपा)	३५३	हेमविमलसूरि (ब्राह्मण)	३२७
हीरविजय (तपा)	३४८	हेमसिंहसूरि (नागेन्द्र)	१२२
हीरविजयसूरि (तपा)	३३६, ३३७, ३६६		

## ७ कालक्रमसे आचार्य-मुनियों की गच्छवार अनुक्रमणिका.

प्रतिष्ठा-सषत्	प्रतिष्ठाकर्त्ता	लेखाङ्क
	( अंचलगच्छ )	
१२६३ आषाढ कृ० ८ गुरु	धर्मचोपसूरि	३०८ (अ)
१४४९ वैशाख शु० ६ शुक्र	मेरुतुगसूरि के उपदेश से श्रीसूरि	३४७
१४८३ वैशाख कृ० १३ गुरु	मेरुतुगपट्टोद्धरण जयकीर्तिसूरि २९४, २९५ (अ)	२९५ (ब)
" " "		२९६ से ३०१
१४८७ पौष शु० २ रवि	"	२७७

१४८८ कार्तिक सु० ३ बुध	व्यकीर्तिसूरि के वपरेल से	भीसूरि	२३७
१५०१ पौष क० ९ शनि	" " "	" " "	१६
१५०५ माघ सु० १० रवि	व्यकेसरसूरि	" " "	२०९
१५०७ माघ सु० १३ बुध	"	" " "	६४
१५०८ ज्येष्ठ सु० ७ बुध	"	" " "	२५४
१५१७ मार्ग सु० १० सोम	"	" " "	१९५
१५१९ मार्ग सु० ५ बुध	"	" " "	२६३
" " ६ शनि	"	" " "	२७२
१५२० वैशाख सु० ५ बुध	"	" " "	२३९
१५२८ वैश क १० बुध	"	" " "	२६
१५२९ फ० सु २ बुध	"	" " "	१४६
१५३२ वैशाख सु १ बुध	"	" " "	३६१
१५३५ पौष क० १२ रवि	"	" " "	६३
१५३६ माघ क० ७ सोम	"	" " "	१९०
१५३७ वैशाख सु० १० सोम	"	" " "	१३७
१५३७ ज्येष्ठ सु० २ सोम	"	" " "	१७५
१५४७ वैशाख सु० ३ सोम	चिन्मन्वसागरसूरि	" " "	१८९
१५५२ वैशाख क ३ शनि	"	" " "	१९४

## ( भागमगच्छ )

१४२१ फ० सु० ५ रवि	वमरसिंहसूरि	३०४(अ)
१४७१ वैशाख सु० ३ रवि	"	७५

( ४१ )

१५०५	माघ शु० ९ शनि	हेमरत्नसूरि	१
१५२९	ज्येष्ठ कृ० १ शुक्र	अमररत्नसूरि	८२
१५८१	माघ शु० ५ गुरु	सोमरत्नसूरि	२४७

( उपकेशगच्छ )

१०११

देवगुप्तसूरि

३२१

जगदेवसन्तानीय-

१४२१	ज्येष्ठ कृ० १० बुध	कक्कसूरिपट्टे देवगुप्तसूरि	३०३(अ)
१५२२	पौष कृ० १ गुरु	ककुदाचार्यसन्तानीयकक्कसूरि	४०
१५८३	ज्येष्ठ शु० ११ शुक्र	" " यक्षदेवसूरि	१०

( काञ्चोलीगच्छ )

१३०३

मेरुमुनि

३३२

( कृष्णर्षिगच्छ )

१४८३	भाद्रपद कृ० ७ गुरु	पुण्यप्रभसूरिपट्टे जयसिंहसूरि	२८८
"	"	"	"
१६६१	फा० कृ० १ शुक्र	( कडूआ (कडुक) मतिगच्छ )	२९१
१६८३	ज्येष्ठ शु० ३	"	२६५
१७०८	मार्ग शु० २ रवि	"	१०९
१७८५	मार्ग शु० ५	"	१०८
		"	२२३

( कोरण्टगच्छ )

१४३३	वैशाख शु० ९ शनि	नन्नाचार्यसन्तानीय मानदेवसूरि	७
------	-----------------	-------------------------------	---

१४८० मघ ० सु० १० बुध कचसूरि २०५

## ( स्वरतरंगरुच )

१३३४ वैशाख ० ५ बुध	त्रिनेश्वरसूरिद्विष्य त्रिन	
	प्रमोषसूरि	११९
१४५० माघ ० ९ सोम	त्रिनवस्तुमसूरि	१३६
१४७९ माघ सु० ४	त्रिनमसूरि	६६
१४९१ मघ ० १		७३
१५०५ वैशाख सु० २ बुध		९७
१५१ भाषाढ ० १ शुक्र	त्रिनरात्रसूरिपट्टे	
	त्रिममसूरि	४८
१५१७ चैत्र सु० १५	त्रिममसूरिपट्टे त्रिनचन्द्रसूरि	८४
१५३५ माघ सु० ३ रवि	त्रिनचन्द्रसूरि	७२

## ( वैद्यगुरु )

१३०९ माघ ० २	हरिचन्द्रसूरि	१०६
१५११ माघ सु० ५	कल्मीदेवसूरि (भारणपत्रीय)	६७
१५१३ पौष ० ५ रवि		३, १७
१५२४ चैत्र ० ५	"	१५५
१५२८ पौष ० ३ सोम	कामदेवसूरि	३७
१५३८ वैशाख सु० ५ बुध	रत्नदेवसूरिपट्टे अमरदेवसूरि	२१३
१५८२ वैशाख सु १ शुक्र	विद्यदेवसूरि	

( भारणपत्रीय ) २६७

## ( जीरापल्लीगच्छ )

- १४११ कृ० ६ बुध देवचन्द्रपट्टे जिनचन्द्रपट्टे गमचन्द्रसूरि ३०९  
 १४१३ फा० शु० १३ " " " ३१०  
 १४३५ माघ कृ० १२ सोम वीरसिंहसूरिपट्टे वीरचन्द्रसूरि ९९  
 १४५३ वैशाख शु० २ सोम वीरचन्द्रसूरिपट्टे शालिभद्रसूरि ६२  
 १५०८ ज्येष्ठ शु० १० सोम उदयचन्द्रसूरि २५६  
 १५२७ माघ कृ० ७ रवि उदयचन्द्रपट्टे सागरचन्द्रसूरि १३८

## ( वृहत्तपागच्छ )

- १२२० ज्येष्ठ शु० ९ रवि हेमचन्द्राचार्य ८५  
 १४८१ वैशाख शु० ३ रत्नाकरसूरिसे अनुक्रमसे अभय-  
 सिंहसूरिपट्टे जयतिलकसूरिपट्टे  
 रत्नसिंहसूरि २७४, २७५, २७६  
 १४८३ प्रथमवै० कृ० ७ रवि देवसुन्दरसूरिपट्टे सोम-  
 सुन्दरसूरि, मुनिसुन्दरसूरि,  
 जयचन्द्रसूरि ३०५, ३०६  
 १४८३ वैशाख शु० ७ देव० सोम० भुवनसुन्दरसूरि  
 जिनसुन्दरसूरि ३०३(ब) ३०४(घ)  
 " " १३ देवसुन्दरसूरिपट्टे सोमसुन्दरसूरि  
 जयचन्द्रसूरि ३०७  
 १४८३ भाद्र० कृ० ७ गुरु देवसुन्दरसूरिपट्टे सोमसुन्दर-  
 सूरि मुनिसुन्दरसूरि २७९  
 से २८६, २८९



	अथबन्धसूरि मुबनसुन्दरसूरि	२९३,
		३०८(ब) ३१२
१४८४	सोमसुन्दरसूरि	११९
१४८७	पौष शु० २ रवि देवसुन्दरसूरिपट्टे सोमसुन्दरसूरि मुनिसुन्दरमरि अथबन्धसूरि	
	दिनबन्धसूरि	२७८
१४८९	मार्ग० शु० ५ शुक्र सोमसुन्दरसूरि	३७३
१४९३		१६३
१५०३	माघ शु० १३ रत्नशेखरसूरि	२१०
१५०७	माघ सोमसुन्दरसूरि अथबन्धसूरि	
	शिष्य रत्नशेखरसूरि	३३८
१५१०	वैशाख शु० ३ रत्नशेखरसूरि	१४७
१५	माघ शु० २ शुभ त्रिबन्धसुन्दर (रत्न बन्ध)सूरि	१२७
१५१५	ज्येष्ठ शु० १ शुक्र रत्नशिख (शेखर)सूरि	१५४
१५१७	वैशाख शु० ३ रत्नशेखरपट्टे अक्ष्मीसागरसूरि	३
१५२२	माघ शु० ९ शनि दिनरत्नसूरि	३५७
१५२३	वैशाख शु० ३ रत्नशेखरपट्टे अक्ष्मीसागरसूरि	३५८
१५२३	वैशाख शु० १३ अक्ष्मीसागरसूरि	१२८, २४२
१५२४	माघ शु० २ रत्नशेखरपट्टे अक्ष्मीसागरसूरि	९२
१५२५	माघ शु० ३ अक्ष्मीसागरसूरि	२१४
१५२७	माघ शु० ५ शुक्र	१५१
१५२८	वे शु० ५ शुक्र ज्ञानसागरसूरि	४९
१५३९	ज्येष्ठ शु० ३ रवि अक्ष्मीसागरसूरि	२३३

१५३४	ज्येष्ठ शु० १०	सोमसुन्दरसूरि मुनिसुन्दरसूरि	
		रत्नशेखरसूरिपट्टे लक्ष्मीसागरसूरि	३८
१५३४	पौष कृ० १०	लक्ष्मीसागरसूरि	१३५
१५३५	माघ कृ० ९ शनि	"	३३५
१५३७	ज्येष्ठ शु० २ सोम	"	१६७
१५६०	वैशाख शु० ३	सोमसुन्दरपट्टनायक कमलसूरि	१२५
१५९०	वैशाख शु० ५	धनरत्नसूरि	३६४
१६१७	ज्येष्ठ शु० ५ सोम	विजयदानसूरि	२७१
१६१८	माघ शु० १३	"	४७
१६६५	वैशाख शु० ६ बुध	हीरविजयसूरिपट्टे विजय- सोमसूरि	३६६
१७५७	माघ शु० ५	विजयप्रभसूरिपट्टे सविज्ञपक्षे ज्ञानविमलसूरि	४१
१८३३	माघ शु० ७ शुक्र	विजयजिनेन्द्रसूरि	३७०, ३७१
१८३७	पौष कृ० १३	हेतुविजयगणिपादुका, महिमा- विजयगणिपादुका	३३६, ३३७
१८९२	वैशाख शु० १३ शुक्र	तपागच्छ	३४२
( सौधर्मवृहत्तापागच्छ )			
१९५५	फा० कृ० ५ गुरु	राजेन्द्रसूरि	३५०, ३५१, ३५२, ३५४, ३५५
१९९७	फा० कृ० ६ सोम	विजययतीन्द्रसूरि के आदेश से हर्षविजय	३५३

## ( धिरापत्रीपगच्छ )

१४७०	वैश्व क० २ गुह	शाम्भिसूरि	२०६
१४८३	श्वेष्ठ सु० ९ मगच्छ	शान्तिसूरि	२६८
१५०१	पौष क० ६ पुष	सर्वदेवसूरिपट्टे विजयसिंहसूरि	६५
१५ ५	वैशाख सु० ३ शुक्ल	"	१४२
१५१२	श्वेष्ठ सु० ५ रवि	" "	२९९
१५१६	पौष क० ५ गुह	"	६१
१५२७	कार्तिक क० ५ सोम	विजयसिंहसूरिपट्टे शाम्भिसूरि	१६५
१५३२	वैशाख सु० १३ सोम	"	१७२

## ( चमघोषगच्छ )

१२०९	शु० सु० १३ पुष	धामरप्रमसूरि सिध्द	
		शामभन्त्रसूरि	१९९
१४८३	माघ० क० ७ गुह	मलयभन्त्रसूरिपट्टे	
		विजयभन्त्रसूरि	२९
१४९३	वैशाख सु० १ पुष	पद्मसेनरसूरिपट्टे	९८
१५१८	शु० क० १ सोम	पद्मभन्त्रसूरि	१६९
१५२१	श्वेष्ठ सु० ९ सोम	"	१२३

## ( मागेन्द्रगच्छ )

१३६९	वैशाख क० ८ शुभलानन्दसूरि	सिध्द पद्मभन्त्रसूरि	५७
१४२१	वैशाख सु० ५ शनि	गुणाकरसूरि	६

१४६५	वैशाख शु० ३ गुरु	रत्नसिंहसूरि	१८३
१४७२	ज्येष्ठ कृ० ११ सोम	"	३६९
१४८१	पौष कृ० ८ शुक्र	पद्मानन्दसूरि	२१८
१५०१	पौष कृ० ६ शुक्र	पद्मानन्दसूरिपट्टे विजयप्रभसूरि	९६
१५०७	माघ शु० १० सोम	" "	१९७
१५१०	फा० शु० ३ गुरु	गुणसमुद्रसूरि	३६५
१५३३	वैशाख शु० ६ शुक्र	गुणदेवसूरि	३९, २१५
१५६०	वैशाख शु० ३ बुध	सोमरत्नसूरिपट्टे हेमसिंहसूरि	१२२
१६१७	ज्येष्ठ शु० ५	घरसघसूरिपट्टे ज्ञानसागरसूरि	२७

## ( निगमप्रभावक )

१५८१	माघ कृ० १० शुक्र	आणन्दसागरसूरि	८०, २४१
------	------------------	---------------	---------

## ( निर्वृत्तिकुल )

११३०	ज्येष्ठ शु० ५	शेखरसूरि	३१८
------	---------------	----------	-----

## ( पिप्पलगच्छ )

१२९१	माघ शु० ५ गुरु	सर्वदेवसूरि	३४
१४१७	वैशाख शु० २ रवि	उदयानन्दसूरिपट्टे गुणदेवसूरि	१३
१४२२	ज्येष्ठ शु० ५ शुक्र	मुनिप्रभसूरि	२४५
१४३०	माघ कृ० ८ सोम	धर्मदेवसूरिसन्ताने प्रीतिसूरि	१०५
१४३४	वैशाख कृ० २ बुध	मुनिप्रभसूरि	१०२
१४३६	वैशाखकृ० ११ मंगल	विजयप्रभसूरिपट्टे उदयानन्दसूरि	११२

१४३७	वैशाखशु०	११	सोम	अथ(बर्म)विष्णुसूरि	२०१
१४४२	वैशाखशु०	१०	रवि	सागरचन्द्रसूरि	१६१
१४७१	माघशु०	३		धर्मप्रमसूरि	१५१
१४८२	वैशाखशु०	४	गुरु	धर्मप्रमसूरिपट्टे	
				धर्मशेखरसूरि	१०
				सागरचन्द्रसूरि	१६४
१४८४	वैशाखशु०	११	रवि	धर्मशेखरसूरि	१८६
१४८५	माघशु०	१०	शुक्र	धर्मशेखरसूरि	२३०
१४८७				धर्मशेखरसूरि सिद्धदेवचन्द्र	११६
१४८८	ज्येष्ठशु०	३	सोम	धर्मशेखरसूरि	५८
१४८९	वैशाखशु	१	सोम	सोमचन्द्रसूरि	१९८
१४९४	माघशु०	९	रवि	धर्मशेखरसूरि	१९५
१४९६	शु०	६	३ रवि	म निरतनसूरि	१८५
१४९९	कार्तिकशु०	२	रवि	धर्मशेखरसूरि	२३८
१४९९	कार्तिकशु०	१५	गुरु	, ५ ७८ १३२, १९	
१५०६	वैशाखशु०	८	रवि	" ४३ ४६ ५२८	
१५०६	माघशु०	१०	शुक्र	धर्मशेखरसूरिपट्टे	
				विष्णुदेवसूरि	१५५
१५०६	माघशु०	१	शुक्र	सोमचन्द्रसूरिपट्टे	
				व्यपदेवसूरि	७७
१५ ७	वैशाखशु०	११	सोम	चन्द्रप्रमसूरि	२४८
१५ ८	वैशाखशु०	५	गुरु	सगरचन्द्रसूरिपट्टे	
				शुभचन्द्रसूरि	७४

१५०९ माघशु० १० शनि	सोमचन्द्रसूरिपट्टे	
	उदयदेवसूरि	२२
१५१० का० कृ० ४ रवि	क्षेमशेखरसूरि	८१
१५१० (१५१७) पौष		
कृ० ५ गुरु	धर्मसागरसूरि	५९, १००
१५१० माघशु० ५ रवि	धर्मशेखरसूरि	४२
१५११ ज्येष्ठकृ० ९ रवि	उदयदेवसूरि	११८
१५११ माघशु० ५ गुरु	धर्मशेखरसूरिपट्टे	
	धर्मसुन्दरसूरि	८६
१५१५ वैशाखकृ० २ गुरु	चन्द्रप्रभसूरि	३६
१५१५ वैशाखशु० १३ रवि	विजयदेवसूरि के उप-	
	देश से शालिभद्रसूरि	१४४
१५१६ आषाढशु० १ शुक्र	सोमचन्द्रसूरिपट्टे	
	उदयदेवसूरि	८३
१५१७ वैशाखशु० १२ मंगल	गुणरत्नसूरि	१३०
१५१९ माघकृ० २ शनि	मुनिसुन्दरसूरिपट्टे	
	अमरचन्द्रसूरि	३५
१५२० चैत्रकृ० ५ बुध	धर्मशेखरसूरिपट्टे	
	धर्मसूरि	१४३
१५२४ वैशाखशु० ३ सोम	उदयदेवसूरिपट्टे	
	रत्नदेवसूरि	१४१

१५२७	वीषहृ० ४ शुक्र	विजयवेषसूरि सिम्ब	
		शास्त्रिमसूरि	११४
१५२८	वैशाख्यहृ० ३ मनि	परमसागरसूरि	५११
१५२९	कार्तिकहृ० १२ सोम	मुनिधिरसूरिपठे	
		अमरचन्द्रसूरि	९०
१५३८	वैशाख्यहृ० १० रवि	रत्नवेषसूरिपठे	
		पद्मानन्दसूरि	१११
१५५३	वैशाख्यहृ० १३ सोम	पद्मानन्दसूरि	९६
१५६१	माघहृ० ५ शुक्र	परमसागरसूरिपठे	
		परमप्रमसूरि	८९

## ( पूर्णिमागच्छ )

१४०४	कार्तिकहृ० ९ सोम	मीसूरि	१०८
१४८५	माघहृ० १० मनि	विद्यासेनरसूरि	७०
१४९४	माघहृ० ५ सोम	अपप्रमसूरि	२०१
१४९७	वैशाख्यहृ० ६ शुक्र	अपसेनरसूरि	५१
१५०५	वैशाख्यहृ० ९ शुक्र	वीरप्रमसूरि	११९
१५०५	माघहृ० ५ रवि	शुभसमसूरि	१६०
१५०६	वैशाख्यहृ० ५ शुक्र	वीरप्रमसूरि	१५५
१५१०	माघहृ० १० शुक्र	पाशुरत्नसूरि	
१५११	माघहृ० ५ शुक्र		

" " " ३  
 " " " ३

१५११	माघशु० ९ सोम	राजतिलकसूरि	३५६
१५१३	पौषकृ० ३ शुक्र	कमलसूरि	३६३
१५१३	माघकृ० ७ बुध	जयशेखरसूरि	२८
१५१५	ज्येष्ठशु० ९ शुक्र	साधुरत्नसूरि	२
१५१५	आषाढशु० ५	सागरतिलकसूरि	३६८
१५१५	माघशु० १ शुक्र	साधुरत्नसूरि	५६
१५१५	फा० शु० ४ मनि	साधुरत्नसूरिपट्टे	
		साधुसुन्दरसूरि	२६२
१५१६	.....	गुणधीरसूरि	३२
१५१६	आषाढशु० ३ रवि	गुणसमुद्रसूरिपट्टे	
		गुणधीरसूरि	१४०
१५१६	माघकृ० ९ सोम	देवचन्द्रसूरि	१४१
१५१७	पौषकृ० ५ गुरु	मुनिमिहसूरि	९३
१५१७	माघकृ० ८ बुध	गुणसमुद्रसूरिपट्टे	
		पुण्यरत्नसूरि	७१
१५१९	मार्गशु० ४ गुरु	साधुरत्नसूरि	८
१५१९	माघशु० ६ सोम	जयमिहसूरिपट्टे	
		जयप्रभसूरि	२६१
१५२७	ज्येष्ठशु० १० बुध	पुण्यरत्नसूरि	७९
१५३३	माघशु० १३ सोम	कमलप्रभसूरि	१६८
१५३६	.....	पुण्यरत्नसूरि	११
१५३६	फा०शु० ३ सोम	गुणधीरसूरि	९५



१५४३	श्वेष्टशु० ११	मीसुरि, सौभाग्यरत्नसुरि	१२६
१५४५	श्व० २ मंगल	साधुसुन्दरसुरिपट्टे	
		श्वेष्टसुन्दरसुरि	२१७
१५५२	श्व० सु० ३	विजयराजसुरि	१६६
१५५३	आपाठशु० २ शुक्र	चारिभक्तसुरिपट्टे	
		सुनिषन्त्रसुरि	२१०
१५६३	श्व सु० ८ क्षमि	सुमतिप्रमसुरि	३१
१५६४	बैशालशु० ३ शुक्र	रत्नशेखरसुरि	२४६
१५७२	बैशाल० ४ रवि	सुवर्णप्रमसुरि	१०१
१५८०	बैशालशु० १३ शुक्र	पुण्यरत्नसुरिपट्टे	
		सुमविरत्नसुरि	२९
१५८२	बैशालशु० ३	कमलप्रमसुरि	२०७
१५८	बैशाल० ५	विमर्दसुरि	२६७
१६१५	श्वेष्ट० ४ शुक्र	वीरप्रमसुरिपट्टे	
		कमलप्रमसुरि	५३
१६२४	सकसं० १७८९	विद्याचन्द्रसुरि	३६२
		सागरचन्द्रसुरिपट्टे	
		सोमचन्द्रसुरि	२२६

## ( बृहवृगाष्ट )

१०११	आपाठशु० ३ सति	परमायन्त्रसुरि लिम्ब	
		पद्मशैलसुरि	३३६

१४२४ वैशाखकृ० ३ गुरु	दिनविजयसूरि	२९२ (अ)
१५०३ ज्येष्ठशु० ९ बुध	पार्श्वचन्द्रसूरि	२१९
१५१३ माघशु० ३ शुक्र	सर्वदेवसूरि	२२०

## ( ब्रह्माणगच्छ )

१२१७ वैशाखकृ० १	प्रद्युम्नसूरि	२००
१२४२ चैत्रशु० १५		३२८
१३४१	श्रीधरसूरि	१४९
१३५१ माघकृ० १ सोम		३२५
१३५१		३२६
१३५९	वीरसूरि	१५८
१३८७ वैशाखशु० २ रवि	जज्जगसूरि	१७९
१४११ ज्येष्ठकृ० ९ शनि	लन्घिमागरसूरि	२२४
१४१२ आश्विनकृ० ४ बुध	विजयसेनसूरिशिष्य	
	रत्नाकरसूरि	३११
१४२५ वैशाखशु० ११	बुद्धिसागरसूरि	३७२
१४८३ ज्येष्ठकृ० ८ रवि	वीरसूरिपट्टे	
	मणिचन्द्रसूरि	२३
१४८६ वैशाखकृ० १ बुध	पुण्यप्रभसूरिपट्टे भद्रेश्वर-	
	सूरिपट्टे विजयसेनसूरि-	
	पट्टे रत्नाकरसूरिपट्टे हेम-	
	विमलसूरि	३२७
१४८९ वैशाखशु० ३ बुध	क्षमासूरि	१८८

१४९५	आषाढशु०	९ रवि	ब्रह्मगसुरिपट्टे	
			पञ्चूनसूरि	१४
१५०१	फा०शु०	५ गुरु	पञ्चूनसूरि	११
१५०३	ज्येष्ठशु०	७	"	१६०
१५०५	वैशक्र०	१३ रवि	प्रद्युम्नसूरि (पञ्चूनसूरि)	२४
१५०५	वैशाखशु	३ शुक्र	पञ्चूनसूरि	६९
१५०६	माघशु०	५ रवि	,	२४३
१५ ७	फा०शु०	११ गुरु	यमिचम्प्रसूरि	१४८
१५१३	माघशु०	३ शुक्र		१३३
१५१७	माघशु०	१ बुध	पञ्चूनसूरि	४४
१५२५	ज्येष्ठशु०	५ सोम	वीरसूरि	८७, २४०
१५२५	फा०शु	७ रवि	"	२५
१५३८	वैशाखशु०	५ गुरु	विमलसूरिपट्टे	
			सुदिसागरसूरि	३२२
१५३९	माघशु	१ बुध	"	१७१
१५३६	पौषशु०	२ बुध	सुदिसागरसूरि	१२९
१५६८	माघशु०	५ शुक्र	दुनिचम्प्रसूरि	२३३
१५	पौषशु०	१ बुध	विमलसूरि	१७७

## ( भाष्यकारगण )

१३४९	ज्येष्ठशु०	२	विजयसिंहसूरि	२०
१४७९	माघशु	७ सोम	विजयसिंहसूरि	११३

१४८५	माघकृ० ९ गुरु	विजयसिंहसूरि	१७६
१४९९	वैशाखकृ० ४ गुरु	वीरसूरि	
		(कालिकाचार्यसन्तानीय)	२५५
१५०३	ज्येष्ठकृ० ३ सोम	„	१५०
१५०३	मार्गकृ० ५ ....	„	१६२
१५१०	फा०शु० ११ शनि	„	८८, १५७
१५१२	मार्ग०शु० १५ सोम	„	९
१५१५	कार्तिककृ० १४ शुक्र	वीरसूरिपट्टे जिनदेवसूरि	१९१
१५१८	फा० शु० ९ सोम	भावदेवसूरि	२३५
१५३२	ज्येष्ठशु० १३ बुध	„	१२४

## ( मडाहड़गच्छ )

१३६७	वैशाखशु० ९	चन्द्रसिंहसूरि शिष्य	
		रविकरसूरि	३३४
१४६२	वैशाखशु० ५ शुक्र	हरिभद्रसूरि	१०३

## ( मल्लधारीगच्छ )

१४८३	माद्र०कृ० ७ गुरु	शांतिसागरसूरिपट्टे	
		विद्यासागरसूरि यशो-	
		भद्रसूरिसन्तानीय	२९२ (ब)
१२१४	फा०शु० ५	प्रीतिसूरि	३२४

## ( विमलगच्छ )

१५१७	फा०शु० ३ शुक्र	धर्मसागरसूरि	३५९
------	----------------	--------------	-----

## ( पंडेरकगच्छ )

१२०४	वैशाखशु०	३ गुद	शाम्भिसूरि	१०३
१४८३	वैशाखशु०	५ गुद	शाम्भिसूरि	२०८

## ( सरस्वतीगच्छ )

१५१३	वैशाखशु०	३	—	कुन्दकुम्भाचार्यमन्ताणीय	
				सकच्छीर्षिष्य	वत्पदे १०४
१५२	पौषशु०	५	शुक्र	विमलेन्द्रधीर्षिगुरु	२६४

## ( सैद्धान्तिकगच्छ )

१५	१	पौषशु	६	सोमचन्द्रसूरि	४
१५०१	१	पौषशु०	९	"	१५३
१५०८	३	वैशाखशु०	४	सोम	४५, २५२
१५	९	माघशु	५	सोम	१९
१५१५	२	वैशाखशु०	२	गुद	२१२

८ गच्छ, गच्छ और आचार्य या सधत आदि  
से अगर्भित लेखों की अनुक्रमणिका ।

संघद्		गच्छ और आचार्य	उत्साह
१	१	— — — — —	३३३
१०४६	पैत्रशु०	१	१८७
१०६३		— — — — —	३२३
११४४	श्येष्ठशु०	४	देवाचार्य
			३२०

११४८	.....	१८०
११५९	विजयसेनसूरि	२२७
१२०९	.....	२५९
१२४० माघशु० १३	.....यशोदेवसूरि	३४९
१२४४ माघशु० १० सोम	.....प्रभन्नसूरि	३४५
१२४४ फा०शु० ३ बुध	.....मतिप्रभसूरि	२१६
१२६१	....	२०३
१२६३ वैशाखशु० ६ गुरु	देवसूरिशिष्य पयारसेण	५१
१३४४ ज्येष्ठशु० १० बुध	.....	३४३, ३४४
१३५७ वैशाखशु० ५ शुक्र	साधुप्रभसिंह	५५
१३६४ वैशाखशु० १३	महेन्द्रसूरिपट्टे	
	अभयदेवसूरि	१११
१३५९ फा०शु० ५ सोम	....क्षीसूनि	३४६
१३७३ वैशाखशु० ११ शुक्र	पद्मनन्दी	३२९
१३७७ चैत्रशु० ८ मंगल	. . देवसूरि	१९२
१३९२ वैशाखशु० ७ शुक्र	देवेन्द्रसूरिपट्टे	
	जिनचन्द्रसूरि	२४९
१३९४ वैशाखशु० ९ बुध	. जयवह्मसूरि	१९३
१३९९ फा०शु० १३ सोम	.....	१०७
१४०६ फा०शु० १० गुरु	. .. धनेश्वरसूरि	३३०
१४१२ ज्येष्ठशु० १३ गुरु	... . माणिक्यसूरि	२०१
१४२५ माघशु० ८	....	३७४

१४२९	माघ० ५ सोम	... ..	मत्स्यसूत्रि	१५
१४३२	श्र० २ शुक्र	... ..	"	२१
१४३६	वैशाख० ११	....	पार्थिवसूत्रि	१००
१४४९	वैशाख० ६ शुक्र	.....	"	१५९
१४५२	वैशाख० ५ शुक्र	.....	पुण्यविष्णुसूत्रि	१८१
१४५३	वैशाख० ३ शुक्र	.....	धनविष्णुसूत्रि	१८४
१४५६	ज्येष्ठ० १३ शुक्र	... ..	रत्नमसूत्रि	१८९
१४७४	भाद्रप० ५ शनि	... ..	....	२८७
१४८३	माघ० ७ शुक्र	.....	....	३१३
१४९२	मार्ग० १४ रवि	....	....	३१४
१४९३	श्र० १ शुक्र	....	श्रीसूत्रि	२४४
१५०६	वैशाख० ६ सोम	....	त्रिपदाधिक्यसूत्रि	१०४
१५३४	वैशाख० १० रवि (सोम)	....	श्रीसूत्रि	५२
१५३४	" " सोम (रवि)	....	....	३ २
१५५५	वैशाख० ३ शनि	.....	"	२११
१५६५	ज्येष्ठ० २	.....	सुमिनेह	२२२
१५६७	ज्येष्ठ० ५ बुध	... ..	....	२५८
१५६९	ज्येष्ठ० ५ बुध	... ..	....	२३४
१५७२	श्रुति० २ सोम	.....	....	२०४
१५७८	माघ० ५ शुक्र	.....	....	११९
१५८४	माघ० ११ रवि	.....	....	२३१
१५८७	वैशाख० ७ सोम	.....	श्रीसूत्रि	२७०

१६११ वैश्राख्यशु० बुध	.....	२३२
१६१२ पौषशु० १ गुरु	.....	२२५
१६१३ वैश्राख्यशु० १० गुरु	.....	११७
१६१७ पौषशु० १ गुरु	..... ११४, ११५, २५३	
१६२४ फा०शु० ४ मंगल	.....	२५१
१६५१ फा०शु० १० अग्नि	.....	३३
१६६२ फा०शु० शुक्र (बुध)	..... ११०, २६६	
१६८१ ....	.....	२५०
१६८३ वैश्राख्यशु० ७ गुरु	.....	२५७
१७८२ वैश्राख्यशु० १५ गुरु	.....	३४८
१८५६ आषाढशु० १५	... रंगविमलसूरि	३१७
१८६९ पौषशु० १३ गुरु	...विजयलक्ष्मीसूरि	३१९
माघशु० १२ शुक्र	..... श्रीसूरि	७६
.....	..... ३१५, ३४०, ३४१	

## १ ज्ञाति, गोत्र एवं कुल की अनुक्रमणिका ।

चम्प (वंश)	७, १०, ४०, ४८, ६०, ६३, ७२, ७३, १०५,
लक्ष्मणवाल	१२०, १२३, १२४, १३८, १४८, १५९,
रक्षेय वंश	१९३, १९५, २०५, २०८, २११, २३५,
लक्ष्मण	२५५, २६९, २७१, २७९, २८०, २८१,
चम्पवाल	२८२, २८४, २८५, २८६, २८९, २९०,
ओमवंश	२९१, २९२, २९४, २९५, २९६, २९७,
ओमवाल	२९८, २९९, ३००, ३०३ (ब), ३०८,
	३११, ३१२, ३६२ ।



पूर्वैष्याति

२१४

विद्यावाच

५४, ६४५

प्रस्ताव २८ ३० ३८, ४७, ४९, ५२, ७६, ९२, १०३,  
 १२७, १२८, १४१, १४७, १५१, १५४, १६७,  
 १६९, १७०, १९४, २१२ २४२, २५६, २६०,  
 २६७ २७२ २७४ २७५, २७६ २७७ २७८,  
 ३२० ३२२ ३२५ ३२४, ३२५ ३५२ ३५७  
 ३५८ ।

मोहवाच

३३४

वीरवाच

६४, ११७, १७५

भीष्मवाच

३२९

भीमवाच

२६, ४४ १८९ २३९, ३२४ ३६१

भीमावाच

१ ० ३ ४ ५, ६ ८ ९ ११, १२ १३, १४,  
 १५, १७, १८ १९, २१ २३, २३, २४, २५,  
 २७, २८, २९, ३१ ३५ ३९, ४१, ४२, ४३,  
 ४४ ४५, ४६, ५ , ५१ ५६ ५७ ५८, ५९  
 ६०, ६१ ६५, ६७ ६८ ६९, ७ , ७१ ७४,  
 ७५, ७७ ७८ ७९, ८ , ८१, ८२ ८३, ८४,  
 ८६ ८७ ८८, ८९, ९०, ९१, ९३ ९४, ९५,  
 ९६, ९९ १० १०१, १ २ १०४ १०५  
 १०६ ११२ ११३, ११४ ११५ ११७ ११८,  
 ११९, १२१ १२२ १२३, १२९, १३ , १३१,  
 १३२, १३३, १३४, १३६, १३९ १४०, १४२

१४३, १४४, १४५, १४९, १५०, १५२, १५३,  
 २५५, १५६, १५७, १५८, १६०, १६१, १६४,  
 १६५, १६६, १६८, १७१, १७२, १७६, १७७,  
 १७८, १७९, १८३, १८४, १८५, १८६, १८८,  
 १९०, १९१, १९६, १९७, १९८, २०२, २०३,  
 २०७, २०९, २१०, २१३, २१५, २१६, २१७,  
 २१८, २१९, २२१, २२३, २२४, २२५, २२८,  
 २२९, २३०, २३२, २३३, २३८, २४०, २४१,  
 २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९,  
 २५२, २५३, २५४, २५७, २६१, २६२, २६३,  
 २६८, २७०, २७३, २९३, ३०१, ३०३ (ब),  
 ३०४ (ब), ३२२, ३३०, ३४६, ३५३, ३५६,  
 ३५९, ३६०, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९,  
 ३७०, ३७२, ३७३ ।

## १० ग्राम एवं नगरों की अनुक्रमणिका

अहमदाबाद	१५४, ३५९	कलवर्मा	२७९, २८०,
आहिल्याणा	२४७		२८१, २८२,
आहोर	३५०, ३५१,		२८३, २८४,
	३५२		२८५, २८६,
ईंठर	३५२		२८९, २९०,
चढव	१४७	कवियरि	२९३, ३१२
			७४

बहीभाजा	१२९		२१५,	२२५,
काकर	११, १७, २७,		२२८,	२३२,
	२७०		१५३,	२३१,
काहुवा	३०		२६५	
कुतबपुर	३३५		दोमबावा	७१
काहर	३५		धनुका	१
गूबरबावा	१२		कृष्ण	२९६, २९७,
वेळा	३७० ३७१		२९८, २९९,	
कन्नपुर	२८८		३००	
बीराबळ	३०३		पडभडि	७७
बीराबळ	३४०		पत्तण	१३१, १३७,
सत्याकूप	१६८		१४५ २०७	
तडवबावा	२५		२३०, ३६४,	
तडिडा	१४०		पारकर	४०
तसन	२७८		पुंगळ	२७७
तिडरबावा	११९		पुंजपुर	१२३
विरपुर	२२, ३१, ३९,		बाळरुह	११८
बराह, बराह	४१, ४२, ४३,		मीळडिया	३४२
बराह	५०, ५९, ६१,		मोयडी	५, १२
विरपड,	६५, ८१, ९४,		मजोह	१४४
विरापड	१०९, ११०,		महबका	४४
विरपड	११४, ११५,		माडीपुर	७६
विरपुर	१३२, १४२			

मूजिगपुर	१२८, २४२	वावी	१७, ६८
योगिनीपुर	३०५, ३०६	वासनगर	३५३
रत्नपुर	२७२, ३०७	विडास	२२३
राजपुर	३५६	विशालपुर	२७४, २७५,
राङ्गवड	९३		२७६
लयता	२८	बीजापुर	२११
लीलापुर	३२२	वीरम	३५८
लूदा	३६७	वेलगरी	२६७
लोटानक	३२०, ३२१	शविनगर	२६२
लोटीपुरपट्टण	३१९	श्रावती	१७५
लोढ़ाढा	३६१	सत्यपुर	३६, १२४
वहरवाडा	८७, २४०	सरवास	१३५
वडली	५४, २२९	सहूआला	१२७, ३५७
वराचद्र	१३३	स्तम्भतीर्थ	३०१, ३०८
वराणपुर	८२	साणी	९५
वागुडी	६३	साथू	३५०
वाराही	३६५	सियाणा	३५४
वालुकद	१३०	सिरोही	३१७
वावडी	१७७	हडिग्राम	५६

## ११ सांकेतिक काव्यो की समझ ।

ओ०, औ०	औसबाह	म०	मगवान्, मगुरक
का०	कारितम्	महा०	मगुरक
कु०	कुष्मपद्य	मण०	मणसाही
का	कासि, कासि	म०	महावन
गो०	गोष्ठिक	महं०	महेश्वर, मन्त्री
ठ०, ठ०	ठङ्कुर, ठङ्कुर	मं०	मन्त्री
ई	ईवी	उ०, उपु०	उपुशास्त्रीय
नि०	निर्मित	व, म्य, म्यव	म्यवहायी
परि पटी०	पटीक्षक गोत्र	वा०	वास्तव्य
र्ष	पन्यास	व्या०	व्यापारी
पु०	पुत्र, पुत्री	वृ०	वृत्
पूर्वि	पूर्विमागच्छ	शा०	शास्त्र
प्र०	प्रतिष्ठितम्	सु०	सुष्ठुपद्य
शा०	शाम्बाट	वे०	वेष्टी, वेष्टि
वि०	विन्ध	सं०	संघवी, संव्या
सं०	संघटी		नीच, संघत्

णमोत्पुणं नमणस्स निरिमहाईरवीयवगच्छ ।

# श्री धातुप्रतिमा लेखसंग्रहः ।

( ऐतिहासिक )

---

थरादचैत्यप्रतिमालेखाः—

वीरचैत्यान्तर्गत—वासुपूज्यचैत्ये धातुमूर्त्तयः ।

( १ )

संवत् १५०५ वर्षे माघशु० ९ शनौ श्रीमाल-  
जातीय व्य० परवत भार्या स्वामलदे सुता मांजू-  
देव्या आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथयिष्यं कारिने,  
श्रीआगमगच्छे श्रीहेमरत्नसूरिगुरूपदेशेन प्रति-  
ष्ठितं धंधुकावास्तव्ये ।

( २ )

सं० १५१५ वर्षे ज्येष्ठसुदि ९ शुके श्रीमालजा-  
तीय गंजरवाडावास्तव्य व्य० जेसा भा० जानू सुत

( १६ )

मूलाक्षेन श्रीसुबिबिनाथविम्ब का०, प्र० श्रीपूर्णि  
मासाधुरत्नसूरीणासुपदेशेन बिबिना ।

( ३ )

स० १५१३ वर्षे पौषवदि ५ रवौ श्रीश्रीमासज्ञा०  
श्रे० महा० यमा सारंग गेला यर्मा राजा कृषा नारद  
समस्तकुटुम्बैः पूर्वजसांगानिमित्तं श्रीअक्षितनाथ-  
विम्ब का०, प्र० भ० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिभिः ।

( ४ )

सं १५०१ वर्षे पौषवदि ६ श्रीश्रीमासज्ञातीय  
म० सताने पिता से० जेसिंग माता बाईपद्मापदी,  
मा० राजसुतेन मातापिताभयसे श्रीकुन्नुमापविम्ब  
कारापित प्रति० सिद्धाती श्रीसोमचन्द्रसूरिभिर्गृहे  
सर्वत्र सौभाग्य मबतु ।

( ५ )

सं० १५२८ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीश्री  
मासज्ञा० व्य० बापा मा० रतनू सुत वणबीरेण मा०  
शाणी पितृमातृपितृव्यनिमित्तं आत्मभ्यसे च  
श्रीबिमलनाथविम्ब का०, प्र० पिट्यस० त्रिमबिया  
भ० श्रीवर्मसागरसूरिभिः भोजश्रीवास्तव्य ।

( ६७ )

( ६ )

सं० १४२१ वर्षे वैशाख सु० ५ शनौ श्रीमाल-  
पितृजयता मातृजयतलदे पितृव्य कर्मणश्रेयोर्थ  
सुतहेलाकेन पार्श्वनाथर्विवं का०, प्र० नागेन्द्रगच्छे  
श्रीगुणाकरसूरिभिः ।

( ७ )

सं० १४३३ वर्षे वैशाख शु० ९ शनौ दिने  
श्रीकोरंटगच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उपकेशज्ञातौ भंड  
पुत्रशाखायां महिमदेव भा० मंदोदरी पुत्र नरश्रेष्ठिना  
पितृमातृश्रेयसं श्रीशांतिनाथर्विवं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीभावदेवसूरिभिः ।

( ८ )

सं० १५१९ वर्षे मार्गशिर सुदि ४ गुरौ श्रीमा-  
लजा० लघुसंतानीय व्य० जेसा भा० हरखू पुत्र  
व्य० राजाकेन भार्या भवकुयुतेन स्वश्रेयोर्थ  
श्रीपार्श्वनाथर्विवं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे  
श्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन । शुभं भवतु श्रीः ।

( ९ )

सं० १५१२ वर्षे मार्गशिर सुदि १५ सोमे श्री  
भावहारगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० पदमा भार्या





( ६९ )

पितृमातृपितृव्यवापानिमित्तं आत्मश्रेयसे च श्री  
शांतिनाथविंशं का०, प्र० पिष्पलगच्छे त्रिभविया  
भद्रा० श्रीधर्मसागरसूरिभिः भोयलीग्रामे ।

( १३ )

सं० १४१७ वर्षे वैशाख सुदि २ रवौ श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्यव० लींवा भार्या नामलदे सुत सहजा-  
केन भा० सहजलदे पितृ लींवाश्रेयसे श्रीवासुपूज्य-  
विंशं कारापितं प्र० श्रीपिष्पलगच्छे श्रीउदयानंद-  
सूरिपट्टे श्रीगुणदेवसूरिभिः । श्रीः ।

( १४ )

सं० १४९५ वर्षे आषाढसुदि ९ रवौ श्रीत्रिभाण-  
गच्छे श्रीश्रीमा० व्यव० गोरा भा० देल्हणदे सुत  
भा० रमल भार्या पोमादे सुत हूंगर भाग्वराभ्यां  
पित्रोः श्रेयसे श्रीधर्मनाथविंशं का०, प्र० श्रीजज्जग-  
सूरिपट्टे श्रीपज्जुन्नसूरिभिः ।

( १५ )

सं० १४२९ वर्षे माघवदि ५ सोमे श्रीश्रीमाल-  
जातीय श्रे० अभयसिंह भा० आल्हणदेव्या पितृव्य-  
कमा श्रीमूलराजपार्श्वश्रेयस्करविंशं का० श्रीनरप्रभ-  
सूरीणामुपदेशेन ।

( ७० )

( १४ )

सं० १५११ वर्षे पौषवदि ९ शनौ श्रीधवल  
गच्छेद्वा श्रीजयकीर्तिसूरीणामुपवेशेन सा० काव्  
पत्नी कमलादे सुत मा० हरिसेनेन पत्नी माल्  
णदभेयोर्ध श्रीअजितनाथर्षिब कारित श्रीसंघ  
प्रतिष्ठित च ।

( १७ )

सं० १५१३ वर्षे पौषवदि ५ रवौ श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय भे० तिहुअण मा० कर्मादे सुत डाहाकेम  
भा धारणापत्री मेष् सुत भास्वरसहितैर्माधुपिधु  
भेयम श्रीअजितनाथर्षिब का०, प्र० चैन्नगच्छीय  
म० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिभिः पाणिग्रामवास्तव्यः ।

( १८ )

सं० १५११ वर्षे माघशु० ५ सोम श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय व्य० धामरसुत जोधराज भा० रत्नेव्या  
पतिनिमित्त आत्मभेषसे श्रीकुन्पुनाथजीवितस्वा  
मिर्षिब का०, प्र० श्रीराजतिष्ठकसूरीणामुपवेशेन  
श्रीसूरिभिः ।

---

१ सेव्याह १४, १११ १५६ को देखते हुए सेव्याह १८  
के स्थान में गुरी चाहिये ।

( ७१ )

( १९ )

संवत् १५०९ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० सोनमलेन भा० राजी, स्वभ्रातृ वदा  
भार्या पूरी निमित्तं श्रीसुमतिनाथविंशं कारितं  
सिद्धांतीगच्छे सोमचंद्रसूरिप्रतिष्ठितं ।

( २० )

सं० १३४९ ज्येष्ठ शु० २ श्रीभावडारगच्छे सा०  
सोमा भार्या सोमश्री पुत्र छाडा-नागा-गयवैरः  
स्वभ्रातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथविंशं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीविजयसिंहसूरिभिः ।

( २१ )

सं० १४३२ वर्षे फा० सु० २ शुक्ले श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० व्य० वागा भार्या विजयश्रीश्रेयसे पुत्र विजय-  
कर्णेन श्रीवासुपूज्यविंशं कारितं श्रीनरप्रभसूरीणा-  
मुपदेशेन ।

( २२ )

सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० पितामह हापा पितामही हांसलदे सुत चूडा  
भा० चांपलदे सुत देवाकेन भार्यालूणादे सहितेन  
पि० मा० पितृव्य चांपा हेमा भ्राता बीजा सर्वपूर्वज-

( ७१ )

निमित्त, श्रीशीतलनाथचतुर्विंशतिका पदं का०,  
प्र० पिप्पलगण्डे श्रीसोमप्रसूरिपदे श्रीठदयदेव  
सूरिभिः पिराप्रवास्तव्यः ।

धीरप्रमुद्येस्ये चातुमूर्त्तय —

( २३ )

मघत् १४८३ चर्षे ज्येष्ठ चदि ८ रवौ श्रीश्रीमाल०  
व्यव० सिंघा मा० लम्बमादे पुत्र सलम्बा मा०  
श्रीमलदे पुत्र गोला सींघा सींघारस्यैः पितृमातृ  
भेयोर्धं श्रीनेमिनाथस्य का०, प्र० ब्रह्माणगण्डे  
श्रीशरसूरिपदे श्रीमणिचन्द्रसूरिभिः ।

( २४ )

स० १५ ५ वैश्र चदि १३ रवौ राधरवास्तव्य  
श्रीब्रह्माणगण्डे श्रीश्रीमाल० व्यव० बाघणसुत मेघा  
मा० श्रीमलदे सुत श्रीमा गोसल वेसल गोसल मा०  
सिंगारदे सुत बडुभा कमसिंघाम्यां पित्रोः भेषसे  
श्रीविमलनाथचतुर्विंशतिपदः का०, प्र० श्रीमद्युम्न  
( पञ्जून )सूरिभिः ।

( २५ )

मघत् १५२२ चर्षे का० शु० ७ शनौ श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय साहू रामा भे० कुमा मा० कसमीरभी

( ७३ )

सुन लापाकेन भा० फली सुत धन्ना भा० झावली  
पांची सुत मेहादि कुडुंवयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्रीशांति-  
नाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः ब्रह्माणगच्छे  
श्रीवीरसूरिभिः शुभं भवतु तद्दवाडावास्तव्य ।

( २६ )

संवत् १५२८ वर्षे चैत्र वदि १० गुरौ श्रीश्रीवंशे  
मं० सांगा भार्या टीबूपुत्र मं० रत्ना सुश्रावकेण  
भा० धारिणी पुत्र वीरा हीरा नीना बाबा सहितेन  
पितृव्य मं० सहसा पुण्यार्थं श्रीअंचलगच्छ गुरु  
श्रीजयकेसरिसूरिरुप० श्रीसुविधिनाथविं वं का० प्र०  
श्रीसंघेन श्रीः ।

( २७ )

संवत् १६१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ दिने काकर-  
वास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० नवा भा० वाई  
धनीसुत श्रे० घरणा भार्या प्रोमीसुत जेसा रत-  
नाभ्यां श्रीविमलनाथस्य विं वं कारापितं श्रीनागे-  
न्द्रगच्छभद्वारक श्रीधरसंघसूरि तत्पट्टे भद्वारक  
श्रीज्ञानसूरिभिः ।

( २८ )

सं० १५१३ वर्षे माघवदि ७ बुधे प्रा० जा०  
लघुसं० परी० वाला भा० डाहीसुत भोजाकेन

भा० छाठी पुत्र नापा साजन महितेन पितृमातृभे०  
श्रीशांतिनाथपिय का०, प्र० पूर्णिमा० क्षीमाणिया  
भ० श्रीजयशेखरसूरीणामुपदेशेन लापताग्रामे ।

( २० )

० स १५८० वर्षे वैशाख्यदि १६ शुभ भीमी  
मालजा० सं० हीरा भार्या राभीसुत मह० हेमा  
भा० हमीरदे सु० म तेजाकेन भा० नीतिसुत-  
हृगर-भृगर-भाणायुतेन स्वभेयसे श्रीसुपार्श्वनाथ  
पिय भीपू० श्रीपुण्यरत्नसूरिपदे श्रीसुमतिरत्नस्  
रीणामुपदेशेन कारित प्रतिष्ठित विधिसयुक्तं ।

( ३० )

सं० १५१७ वर्षे वै० शु० ३ प्राग्घाट व्य० कृपा  
भा० रुडीसुत देवसी भा० बालदीसुत देपालन  
भांडादिदुर्गपयुतेन स्वभेयसे श्रीविमलनाथपिय  
का०, प्र० तपाभीरत्नशेखरसूरिपदे श्रीलक्ष्मीसा  
गरसूरिभिः कालुजावामी श्री । ।

( ३१ )

सं १५६६ वर्षे फा० सु० ८ शमौ भीमीमाल

केमबामुप्रदिमा ठेखसंपद दि. माग का ठेकाह ८९५  
बीर बह दोनो एक ही हैं ।

( ७५ )

जातीय आजूसखा व्यव० मेवासुत आशा भार्या  
अमरी नाम्न्या आत्मश्रेयसे जीवितस्वामि-श्रीचंद्र-  
प्रभस्वामिद्विंदं कारापितं प्रतिष्ठितं भ० सुमति-  
प्रभसूरिभिः, थिरापद्रनगरवास्तव्य पूर्णिमापक्षे ।

( ३२ )

\* सं० १५१६ वर्षे सं० गेलाकेन सपरिवारेण  
(पूर्णिमापक्षे) श्रीगणधीरसूरीणामुपदेशेन श्रीगौतम  
मूर्तिः कारापिता ।

( ३३ )

सं० १६५१ वर्षे फाल्गुन वदि १० शनौ श्री-  
थिराद्रवास्तव्येन श्रीमुनिसुव्रतद्विंदं प्रतिष्ठितं ।

वीरचैत्ये प्रस्तरमय कायोत्सर्गमूर्ति—

( ३४ )

संवत् १२९१ वर्षे माघ सुदि ५ गुरौ पिण्डल-  
पक्षगच्छे वीरसुत छांझणेन तथा सुत नेनक नेढक  
ब्रह्मा केशु तथा आम्रदेवेन श्रीरिषभदेवचैत्ये जिन-  
युग्मद्वयं कारितं, वला० अभयकुमारकुटुंबसमुदायेन  
जीर्णोद्धारः कारितः प्रतिष्ठितं श्रीसर्वदेवसूरिभिः ।

---

❧ लेखाक १४०-४१ के अनुसार ये आचार्य पूर्णिमा  
पक्षीय हैं.



( ७१ )

धीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्ये घातुमूर्च्छय —

( ३५ )

स० १५१९ वर्षे माघय० द्वितीया शनौ श्रीश्री  
मालज्ञातीय भे० लापा भा० छाछनदे पुत्र यस्मा,  
हृत्ता भा० इमीरवे सुत वेला गेलाकेन वेलाभा० यय  
अलदेयुतेन पितृमा तृम्रातृस्वपूषजनिमि० श्रीशीतल  
नाथ यतु० पट्टः का०, प्र० पिच्छपलगच्छे श्रीमुनि  
सिंहसूरिपट्टे श्रीभमरचन्द्रसूरिमिः कोहरवास्तव्यः ।

( ३६ )

सवत् १५१५ वर्षे वैशाख्यदि २ गुरौ श्रीश्री  
मालज्ञातीय परी० खता भा० खेतलदे पु० ईसर  
भा० राजलदे पु० मोफल भा० मर्हिगलदेव्या पु०  
बठलासहितेन पिघोर्निमित्त स्वभेयोर्धं च जीवित  
स्वामी श्रीभाविनाथयतुर्विघातिपट्टः का०, प्र०  
श्रीपिच्छपलगच्छ श्रीचन्द्रप्रमसूरिमिः श्रीसत्पपुर  
वास्तव्यः श्रीः ।

( ३७ )

सवत् १५२८ वर्षे पौष यदि ३ सोमे श्रीश्री  
मालज्ञातीय भंडारी मोला भा० बाहीदेव्या स्व  
पुण्यार्थं जीवितस्वामी श्रीबिमलनाथविंभं कारितं

( ६७ )

प्रतिष्ठितं चैत्रगच्छे धारणपट्टीय भट्टारक श्रीज्ञान-  
देवसूरिभिः, काकरवास्तव्यः ।

( ३८ )

( सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ शु० १० दिने प्राग्वाट  
व्य० गोपाल भा० लखीसुत व्य० लाखा भा० कीमी  
प्रमुग्वयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीशांतिजिनर्षिषं कारितं  
प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्री  
रत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

( ३९ )

स० १५३३ वर्षे वैशाख शु० ६ शुके श्रीश्री-  
मालजा० श्रे० कर्मसी आ० लालु सु० श्रे० मामाकेन  
भा० देवलीसहितेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयसे  
श्रीसुविधिनाथर्षिव का०, प्र० नागेंद्रगच्छे म०  
श्रीगुण देवसूरिभिः थरादनगरे ।

( ४० )

सं० १५२२ वर्षे पौष वदि १ गुरौ उपकेशज्ञातौ  
श्रेष्ठिगोत्रे म० मोखापुत्र म० धन्नाकेन भा० साल्ही-  
केन च महाजनीखीदापुण्यार्थं श्रीशीतलनाथर्षिवं  
कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे श्रीककुदाचार्यसंताने  
श्रीकक्कसूरिभिः पारकरनगरे ।

( ४८ )

( ४९ )

स० १७५७ वर्षे माघसुदि ५ दिने श्रीधिरापद्र  
बास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशास्त्रायां वो० वेव-  
राजेन मा० मानी सुत वो० वासा सांकला सुत  
भोजराजादि सहितेन [स्य] पुण्यार्थ श्रीसमवनाप  
रिष्यं कारापितं प्रतिष्ठित तपागच्छे म० श्रीविजय-  
प्रभसूरिपदे संविज्ञापक्षे म० श्रीज्ञानविमलसूरिमिः ।

( ४९ )

स १५१० वर्षे माघसुदि ५ रवौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय पितृभोला मातृभावदेदि सुत लूणासिंहेन  
घातृ हेमला मिमिस्त मिजकुटुम्बमेयसे श्रीशांति  
नाथपंचतीर्थीका०, प्रति० पिप्पलगच्छे त्रिमविया  
गच्छनायक श्रीधर्मशेखरसूरिमिः यिरपद्रपुरे श्रीः ।

( ४९ )

सं० १५०६ वर्षे वैशाखसुदि ८ रवौ श्रीश्री  
मालज्ञातीय व्यव० भोला सुत सं० लूणासी भा०  
लूणादेव्या आत्ममेयसे जीवितस्वामी श्रीभेयांस  
नाथपंचतीर्थीरिष्यं कारित प्रतिष्ठित श्रीपिप्पलगच्छे  
त्रिम० म० श्रीधर्मशेखरसूरिमिः धारापद्रबास्तव्यः॥

( ४४ )

म० १५१७ वर्षे माघसुदि १० बुधे श्रीब्रह्माण

( ७९ )

गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० सादूल सुत भार-  
मलेन भा० कपूरदे सुत डाहा वेला मातृपितृश्रेयसे  
श्रीअजितनाथर्विवं कारितं प्र० शीपज्जूनसूरिभिः  
मर्हडकाग्रामे ।

( ४५ )

सं० १५०८ वर्षे वैशाखवदि ४ सोमे श्रीश्री-  
मालज्ञातीय श्रे० नयणेन भा० टहिकु सु० लाखा  
हेमा दूदादि कुटुंबयुतेन पितृव्यकतुहणा भा० हांसू  
श्रेयोर्थ श्रीशीतलनाथर्विवं का०, सिद्धांतीगच्छे श्री  
सोमचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं । शुभं भवतु श्रीः ।

( ४६ )

सं० १५०६ वर्षे वैशाखवदि ८ रवौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्यव० वरसिंघ भा० तिलुश्रिया आत्म-  
श्रेयोर्थ जीवितस्वामी श्रीश्रेयांसनाथर्विव कारा०,  
प्रति० श्रीपिठपलगच्छे त्रिभविया श्रीधर्मशेखर-  
सूरिभिः ।

( ४७ )

सं० १६१८ वर्षे माघसुदि १३ प्राग्वाट सोनी  
सामा पुत्री सोनीदेव्या श्री आदिनाथर्विवं कारित  
प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीविजयदानसूरिभिः ।

( ५ )

( ४८ )

संवत् १५१० वर्षे आषाढसुदि १ शुके उपवेश  
बंधो भण० गोत्रे म० माला मा० मालाणवे पु  
कावाभायकेन बंधव गुणिया हूगर पुत्र मदा वदा  
राजा प्रमुखपरिवारपुत्रेन श्रीशांतिमाधविष स्व  
पुण्यार्थं कारित प्रतिष्ठित श्रीस्वरतरगच्छे श्रीजिन  
राजसुरिपदे श्रीजिनमद्रसुरिभिः ।

( ४९ )

स० १५२८ वर्षे वैशाखसुदि ५ शुरौ श्रीप्राग्वाह  
ज्ञा० स० काला मा० मालाणवे सुत स० रत्ना मा०  
लायू स० मीमाकेन मा० वेमति सु० कुटुंबपुत्रेन  
स्वभेयसे श्रीसुविधिमाधविषं कारित श्रीवृहत्  
पापक्षे श्रीज्ञानसागरसुरिभिः ।

( ५० )

संवत् १४९९ वर्षे कार्तिकसुदि १५ शुरौ श्रीश्री  
मालाज्ञातीय इयब० लीवा मा० काठं पुत्र श्रीरा  
केन आत्मभेयोर्थं श्रीशीतमाधविषं कारितं, प्र०  
पिद्वल० त्रिभवीया भ० श्रीश्रीधर्मशेखरसुरिभिः  
श्रीधिरापद्रे ।

( ५१ )

सं० १२६३ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुरौ सा० हीला

( ८१ )

सुत सा० लृणेन मातृपितृश्रेयोर्धं श्रीपार्श्वनाय-  
प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्रीदेवसूरिशिष्य श्री  
वयरसेणसूरिभिः ।

( ८२ )

सं० १५३४ वर्षे वै० व० १० रवौ ( सोमे ) प्राग्वाट  
व्य० सेला भा० तेजूपुत्र अजा भा० वमी पु० नर-  
पालेन पितृव्य व्य० वाछा डाहा पांचादि कुटुंबयुतेन  
श्रीश्रेयांसनाथर्विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः  
डीसामहास्थाने ।

( ५३ )

सं० १६१५ चैत्रवदि ४ शुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय  
महाजनी सोमा भार्या ह्यमकलदे द्वितीया मिरगादे  
सुत वाछाकेन मातृपितृपितृव्यनिमित्तं आत्मश्रेयोर्धं  
श्रीचंद्रप्रभर्विवं कारापितं श्रीपूर्णि० श्रीवीरप्रभसूरि-  
पट्टे श्रीकमलप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिभिः ।

( ५४ )

सं० १४९७ वर्षे वैशाखवदि ६ शुके वडली-  
वास्तव्य डीसावालज्ञातीय श्रे० कडझा भा० मांकू

१ ले. ३०२ में सोमवार लिखा है ।

( ८२ )

मुत्र समपरण भा० छापीयुतेन पितृश्रेयोर्थं श्रीसु  
पार्श्वर्षिय कारितं प्रतिष्ठित श्रीपूर्णिमापक्षीय क्षीमा  
गिपा श्रीजयशेखरसूरीणामुपदेशेन ।

( ५५ )

सं० १३४७ वैशाख यदि ५ शुके श्रीमन्मङ्गला-  
[केन] गुरूपदेशेन साधुप्रभसिद्धमुनिकारितेन षिं ।

( ५६ )

सं० १५१५ वर्षे माघशुदि १ शुके श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय पितृवेपाल भा० घाण्ड्ययोर्थं सु० क्षीमा  
क्षेताम्पां श्रीनमिनायर्षिय कारितं श्रीपूर्णिमापक्षीय  
श्रीसापुरत्नसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीसधेन  
इडियास्तव्यः ।

( ५७ )

सं० १३६९ वर्षे वैशाखदि ८ श्रीश्रीमालज्ञातीय  
परी० भंडामेयोर्थं सुत पांताकेन श्रीचतुर्विंशति  
तीर्थकराणां षिं कारितं प्रति० श्रीमार्गेद्रगच्छे  
श्रीसुबनामदसूरिषिष्य श्रीपद्मचंद्रसूरिभिः ।

( ५८ )

सं० १४८८ क्येष्ठशु० ३ सोमे श्रीमालज्ञातीय  
माङ्गणसी अज्ञता भा० अज्ञतखवे पु० वीरपबल इरि

( ८३ )

घवल विक्रमैरेकमतीभूय मातृपितृजस्वश्रेयसे श्री  
विमलनाथचतुर्विंशतिपट्टः का०, प्र० त्रिभविद्या-  
पिष्पलाचार्य श्रीधर्मशेखरसूरिभिः ।

( ५९ )

सं० १५१७ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्य० माहणसुत व्य० सूरु भा० सुहृवदे  
सुत व्य० रुदा राणाभ्यां आत्मश्रेयोर्थं श्रीशातिनाथ-  
चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रति० श्रीपिष्पलगच्छे  
त्रिभविद्या भट्टा० श्रीधर्मसागरसूरिभिः धारापट्टवा-  
स्तव्यः शांतिवर्धनार्थं सर्वेषां पूर्वपुरुषाणां भवतु ।

( ६० )

सं० १४८२ वर्षे वैशाखवदि ४ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्य० ऊदिर भा० हांसलदे सुत भोला भा०  
भावलदे सु० नेमा-लूणा सिंहाभ्यां मातृपितृ तथा  
आतृ हेमला श्रे० चतुर्विंशतिपट्टः श्रीअजितनाथस्य  
का०, प्र० पिष्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मप्रभसूरि-  
पट्टे श्रीधर्मशेखरसूरिभिः, शुभं ।

( ६१ )

सं० १५१६ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ धिरापट्टगच्छे

---

१ ले. ५१ और १०० एक ही कुल के लेख हैं ।



( ८४ ) ✓

श्रीश्रीमालश्रातीय व्य० सुरा मा० भ्रियादे सुत  
श्रीसखेन मा० मीनादे सुत धीरा काला कुडुंब  
पुतेन स्वमातृपितृभ० श्रीभर्यासनापचतुर्विंशति  
पद्मः का० प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंहसूरिभिः धिरा  
पद्रवास्तप्याः । श्री श्रीः ।

✓ ( ६२ )

स० १४५३ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे ९ सोमे  
उण्णशयशे महं० माहण भार्या आहणवे सुत  
सूणा पाछा बहरमल केलहा प्रभृति धातृसमुदायेन  
मिजमातृधातृसवजननिमित्त चतुर्विंशतिजिमपद्मः  
कारापितः, प्रतिष्ठितं श्रीजीराठलीपुरीयगण्डे श्री  
धीरचन्द्रसूरिपदे श्रीशास्त्रिमद्रसूरिभिः । श्रीसप्तस्य  
शुभं भवतु ।

✓ ( ६३ )

संवत् १५३५ वर्षे पौषवदि १२ रवौ श्रीउयस  
वधो अ० हीरा मा० हीरावे पुत्र अ० पासासुभाब  
केण मा० पूमावे पुत्र श्रीमा सूता देवा महितैः  
स्वभ्रेयोर्ष श्रीअचलगण्डे श्रीअचकेसरसूरीणामुपदे  
द्यौम श्रीसमवनापचिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंबेन  
वागुडीग्रामे ।

( ८५ )

( ६४ )

सं० १५०७ वर्षे माघसुदि १३ शुके वीरवंशे  
सं० लीढा भार्या मोटी पुत्र सं० नारदसुश्राव-  
केण भा० जयरू सहितेन श्रीअंचलगच्छेश श्री-  
जयकेसरिसूरीणामुपदेशात् श्रीधर्मनाथविंशं पितुः  
श्रेयसे कारितं श्रीसंघेन च प्रतिष्ठितं श्रीर्भवतु  
पूज्यमानं विजयतां ।

( ६५ )

सं० १५०१ वर्षे पौषदि ६ बुधे गोत्रजा वाराही  
श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० सहिपाल सुत व्य० सिंहा  
भा० सुहवदे सुत नाथा राउल धरणाकेन स्वमातृ-  
श्रेयोर्थं श्रीश्रेयांसनाथविंशं कारापितं प्रति० धारा-  
पद्रगच्छे श्रीसर्वदेवसूरिपट्टे श्रीविजयसिंहसूरिभिः ।

( ६६ )

सं० १४७९ वर्षे भा० सु० ४ काकसवंशे वोहरा-  
शाखीय सा० राणिगसिंघ पुत्र गांगा भा० महंघलदे  
सुत सांवलकेन पुत्र वस्ता तेजा सहितेन भा०  
स्वेलदे वल्लालदे श्रेयसे श्रीशांतिनाथविंशं कारितं  
प्रति० खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ।

( ६७ )

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ५ श्रीश्रीमालज्ञातीय

व्य० सांडासुत अवलु मा० गेलीसुत हरराजेन  
 मा० बाऊसहितेन स्वपितृभेयसे भीष्मादिनाथर्षिर्ब  
 कारित प्रतिष्ठित वैश्रगच्छे धारणपद्मीय भीलक्ष्मी  
 देवसूरिभिः ।

( ६८ )

स० १५५३ वर्षे वैशाखसुदि १३ सोमे भीभी  
 माल० व्य० ममा मा० डाही सुत रदिभाकेन मा०  
 रगीसहि० पितृमातृपितृव्यघ्रातनि० व्यात्मभे भी  
 सुमतिनाथर्षियं का० प्र० पिष्पलगच्छे भीपद्मा  
 नंदसूरिभिर्बाषिवास्तव्याः ।

( ६९ )

स० १५०५ वर्षे वैशाखसुदि ३ शुक्र भीष्मभाण  
 गच्छ भीभीमाल० व्य० मेघा सुत गोसलेम मा  
 सिणगारवे सुत कर्मसीसहितन पितृवेसल मातृमह  
 गद निमित्त भीमभिनाथर्षिर्ब का०, प्र० भीपद्मसु  
 सूरिभिः ।

( ७० )

स० १४८५ माघसुदि १० चामौ भीभीमाल  
 शातीय म० ठाकुरसी मा० शमकु पुत्र म० काला  
 केन पित्रोः भेयसे भीपद्मप्रभर्षियं का०, प्रति०

पूर्णिमापक्षे श्रीविद्याशेखरसूरीणामुपदेशेन विधिना-  
श्रेयः शुभं ।

( ७१ )

सं० १५१७ वर्षे माघवदि ८ बुधे श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० वीरा भा० शाणी सुत जोगाकेन भा०  
मानू सु० महीराज कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथ-  
द्विवं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीगुणसमुद्रसूरिपदे श्रीपुण्य-  
रत्नसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना  
दोलावाढाग्रामे ।

( ७२ )

सं० १५३५ वर्षे माघसुदि ३ रवौ श्रीउकेशवंशे  
रायथला सेठियागोत्रे धरणा पुत्र वेलाकेन भा०  
विमलादे पुत्र खेमागेलागजादिनि० श्रीनमिनाथ-  
द्विवं कारितं प्रतिष्ठितं स्वस्वस्वच्छे श्रीजिनचंद्र-  
सूरिभिः । श्रीः ।

( ७३ )

सं० १४९३ वर्षे फागुणवदि १ दिने उकेशवंशे  
नवलक्षशाखायां सा० पालहा पुत्र सा० पीचा फमण-  
आवकाभ्यां श्रीआदिनाथद्विवं का०, प्रतिष्ठितं श्री-  
स्वस्वस्वच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ।

( ८८ )

( ७४ )

स० १५०८ वर्षे वैश्वसुदि ५ बुधे श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय प्रपिता पेया प्रपि० प्रथमादे पि० मीबा  
पिता कर्मादे पितृ मेपठ भा० आशादे सुत परखा  
उल्लुभ्यां पूर्वजमे० मातृपितृभेयोर्ष श्रीशीतलनाथ  
चतुषशतिपद्भिर्ब का०, प्र० पिष्पलगच्छे श्री  
समरचंद्रसुरिपदे श्रीशुभचंद्रसुरिभिः । कावेयदि  
वास्तव्या ।

( ७५ )

सं १४७१ वर्षे श्रीश्रीमालज्ञा० मे० केरहुभा  
भा० मल्ल सुत बालइ [ केन ] प्रातृछाताभेयोर्ष चतु  
र्बिंशतिपद्भिः कारिताः श्रीभागमगच्छे श्रीधमरसिंह  
सुरीणासुपदेशेन प्रतिष्ठित विधिना ।

( ७६ )

स० ... १५ वर्षे माघसुदि १२ शुके मात्रीपुर  
वास्तव्य श्रीप्राग्वाठज्ञातीय व्य० जेसाभेयोर्ष सुत  
पूनाकेन श्रीशान्तिमापर्बिंषं कारापितं प्रतिष्ठित श्री  
सुरिभिः ।

( ७७ )

सं० १५ १ वर्षे माघशुदि १० शुके श्रीश्रीमाल

( ८९ )

ज्ञा० श्रे० चूणा भा० वापलदे सुत देवाकेन मातृ-  
पितृ श्रे० श्रीजिषीतस्वामी श्रीशीतलनाथविंयं का०,  
प्र० पिष्पलगच्छे श्रीसोमचंद्रसूरिपदे श्रीउदयदेव-  
सूरिभिः पढधलिया ग्रामे ।

( ७८ )

सं० १४९९ वर्षे कार्तिकसुदि ५ गुरौ श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्य० मांडण भा० माहणदे पुत्र चवा-  
वरडाकेन आतृकर्मा, राघवनिमित्तं श्रीचंद्रप्रभ-  
स्वामिर्विंबं कारितं प्र० पिष्पलत्रिभविद्या भट्टारक-  
श्रीधर्मशेखरसूरिभिः ।

( ७९ )

सं० १५२७ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० बुधे श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० श्रे० संदा सुत श्रे० सूरुाकेन सुत देवा पोपट  
प्रभृति कुटुंबयुतेन भार्या वागूश्रेयसे श्रीकुंथुनाथ-  
विंबं पूर्णिमापक्षे श्रीपुण्यरत्नसूरीणामुपदेशेन का०,  
प्र० विधिना श्रेयोर्थं ।

( ८० )

सं० १५८१ वर्षे माघवदि १० शुक्रे श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय वृद्धशाखायां मं० लाला[केन]मा० लीलादे

१ ले० ५०, १९० के अनुसार १५ पूर्णिमा होना चाहिए ।

सुत वाशा मा० ऊमादे सुत लाजा हीरा कुडुंब  
 पुतेन श्रीनिगमप्रभाषक श्रीभानंदसागरसूरिभिः  
 श्रीशांतिनाथय्य प्रतिष्ठित कारित य ।

( ८१ )

सं० १५१० वर्षे कार्तिकवदि ४ रवौ श्रीश्रीमाल  
 ज्ञा० व्य० खूणसिंह भा० खूणादेवि सु० संग्रामसी  
 [इन]मा० बलहादेविभ्येयसे श्रीशांतिनाथय्य कारित  
 प्रतिष्ठित पिप्पलगच्छे विभविया श्रीक्षेमशेखर  
 सूरिभिः श्रीधिरापत्रे ।

( ८२ )

सं० १५२९ वर्षे ज्येष्ठवदि १ शुके श्रीश्रीमाल  
 ज्ञा० अ० घना भा० चांसदे सुत पेमाकेन मा०  
 आसु सुत चांपायुतेन पितृव्यभ्येयसे श्रीपद्मप्रभादि  
 पंचतीर्थी आगमगच्छे श्रीअमररत्नसूरिणासुपदेशेन  
 कारापिता प्रतिष्ठिता बिराणपुरबास्तव्यः ।

( ८३ )

सं० १५१६ वर्षे आषाढसुदि १ शुके श्रीश्रीमाल  
 ज्ञातीय व्य० कान्हा भा० कमलादे सु० शुहिमा  
 सूराम्पा पितृमातृनिमित्तं आत्मभ्येयसे श्रीममि  
 नाथय्य का० प्रतिष्ठित पिप्पलगच्छे श्रीसोमचंद्र  
 सूरिपदे श्रीठदपदबसूरिभिः ।

( ९१ )

( ८४ )

सं० १५१७ वर्षे चैत्रसुदिपूर्णिमायां श्रीमालजा-  
तीय खेडरियागोत्रे सं० कानू पुत्र सं० रणवीर श्राव-  
केन भा०हरखूश्राविका पुन्यार्थं श्रीशांतिनाथविंशं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि-  
पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ।

( ८५ )

सं० १२२० ज्येष्ठसुदि ९ रवौ श्रियाहठेन श्री-  
पार्श्वनाथप्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता प्रभुहेमचंद्र-  
सूरिभिः ।

( ८६ )

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्य० साधर भा० संसारदे सुत व्य० कुरमी  
भा० नयणादे सुत व्य० जेसिंगेन श्रीधर्मनाथविंशं  
का०, प्रति० पिळपल० त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरि-  
पट्टे श्रीधर्मसुंदरसूरिभिः ।

( ८७ )

सं० १५२५ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ सोमे श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्य० गोला भा० गुरदेसुत हेमाकेन भार्या  
हीरादे माघु सुत वहजादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं



श्रीअजितनाथर्षिय कारितं प्रतिष्ठित ब्रह्माणगण्डे  
श्रीवीरसुरिभिर्ब्रह्मवाङ्मावास्तव्याः ।

( ८८ )

सं० १५१० वर्षे फागुणसुदि ११ शमौ श्रीश्री  
मातृज्ञा० व्यव० पूनपाठ भा० पालहणदेवी पुत्री  
हिराहरियाभ्यां सुपूर्वजैर्मिमिष्ठं श्रीआदिनाथर्षिर्ब्र  
कारितं प्र० श्रीमावडारगण्डे श्रीकालिकाचार्यम०  
श्रीवीरसुरिरुपदेशेन ।

( ८९ )

सं० १५६१ वर्षे माघवदि ५ शुक्ले श्रीश्रीमातृ  
ज्ञातीय व्य० देवद भा० पात्रीपुत्र श्रीमा भा० वरजू  
पुत्र आर्जुनेन पितृमातृ आत्मश्रेयसे श्रीममिनाथ  
र्षिय कारितं प्रतिष्ठित पिप्पलगण्डे त्रिमयीया भ  
श्रीधर्मसागरसुरिपदे महारक श्रीधर्मप्रमसुरिभिः ।

( ९० )

स० १५६० वर्षे फा० सु० १२ सोमे श्रीश्रीमा०  
व्य० लीषा भा० साहू सु० धर्मसी भा० पाषलदे  
आ० श्रीमा आत्मश्रे श्रीशीतलनाथर्षिर्ब्रं फा०, प्र०  
पिप्पल० श्रीशुभिसिंघसुरिपदे श्रीधर्मरत्नसुरिभिः ।

( ९१ )

स० १५०१ वर्षे फागुणसुदि ५ शुरौ श्रीब्रह्माण

( ९३ )

गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० तेजपाल भार्या मूली  
सुत लाखा [केन] भा० ललितादे सुता रतनू पितृ-  
मातृश्रेयोर्थ श्रीवासुपूज्यविंशं का०, प्र० श्रीपजून-  
सूरिभिः ।

( ९२ )

सं० १५२४ वर्षे मार्गवदि २ प्राग्वाट व्य० तेजा  
भा० सीरी पुत्र व्य० पोपाकेन भा० पांतीदे पु०  
वर्जांग देपाल प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्रीसुवि-  
धिनाथविंशं का०, प्र० तपागच्छेश श्रीरत्नशेखर-  
सूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

( ९३ )

सं० १५१७ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ श्रीमालज्ञातीय  
श्रे० वीरम भा० विल्हदे तयोः सुतौ श्रे० राडल  
भीमा भा० धीरु सुत हापाकेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थ  
श्रीसुविधिनाथविंशं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे  
श्रीमुनिर्सिंहसूरिभिः, राडवडवास्तव्यः ।

( ९४ )

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० कर्मसी भा० मदी सुत महिपाकेन  
पितृमातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थ श्रीसुमतिनाथविंशं

( ९४ )

कारापितं प्रतिष्ठित श्रीपूर्णमापक्षे श्रीराजलिखक  
सूरिभिः स्मिरापत्रे ।

( ९५ )

सं० १५३६ वर्षे फागुणसुदि ३ सोमे श्रीश्री  
माल० भे० सृणा भा० यमकु सुत भोजाकेन भा०  
अमकु सुत रहिमादि कुटुम्बपुत्रेण मातृपितृभेपसे  
श्रीभेपांसमापर्विष पूर्णि० श्रीगुणपीरसूरीणामुप०  
का० प्रति० विधिना साणीवास्तव्यः ।

( ९६ )

सं० १५०१ वर्षे पौषवदि ३ शुके श्रीश्रीमाल-  
ज्जातीय व्य० यगसा भा० जेसलदे सुत धडसिंहेन स्व  
पितृघ्रातृभेपोर्य जीवतस्वामि-श्रीसुमतिमापर्विष  
कारित प्रति० नागेंद्रगण्ठे श्रीपद्मानदसूरिपदे श्री  
विनयप्रभसूरिभिः ।

( ९७ )

सं० १५०५ वैशाखसुदि १ बुधे लठाठरागोत्रे  
सं० नगराज भा० छाफी सु सं० यमराजेन मा०  
सोमाई पु० सं कालुप्रभुस्वपरिवारण स्वभेपोर्य श्री  
सुविधिनापर्विषं कारितं श्रीशरमरगण्ठे श्रीगुड-  
श्रीजिनभद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( ९५ )

( ९८ )

सं० १४९३ वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे फलज्धीया-  
गोत्रे सा० छाहू भा० छाजुई पुत्र सावाकेन आत्म-  
पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथर्विवं कारापितं प्र० श्रीधर्म-  
घोषगच्छे भ० श्रीपद्मशेखरसूरिपट्टे भ० श्रीविजय-  
चंद्रसूरिभिः ।

( ९९ )

सं० १४३५ वर्षे माघवदि १२ सोमे श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० सं० खेडसिंग सुत सं० हादाकेन का० शांतिनाथ-  
र्विवं, प्र० श्रीवीरसिंहसूरिपट्टे श्रीवीरचंद्रसूरिभिः ।

( १०० )

सं० १५१७ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० सूरु मा० सुहवदे सुत रुदाराणाम्यां  
मातृपितृनिमित्तं श्रीशान्तिनाथर्विवं का०, प्र०  
पिष्पल० त्रिभवीया श्रीधर्मसागरसूरिभिः ।

( १०१ )

सं १५७२ वर्षे वैशाखवदि ४ रवौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० भूवर सुत व्य० पोपट [केन] मा०  
प्रीमलदे आ० गोपाल सुत हादासहितेनात्मश्रेयोर्ध  
श्रीसुविधिनाथर्विवं कारापितं श्रीपूर्णमापक्षे प्रधान  
शाखायां श्रीसुवनप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं

( ९६ )

( १०९ )

सं० १४३४ वर्षे वैशाखशुदि ९ बुधे भीमासङ्गा०  
व्य० जाठिल भा० खेमलदे भे० मालाकेन भीशांति  
नापरिष का०, प्रतिष्ठितं पिप्पलापापभीमुनि  
प्रभसुरिभिः ।

( १०३ )

सं० १४३२ वर्षे वैशाखशुदि ६ शुके प्राग्वाटङ्गा०  
प्रछेपन भा० सायलदे पुत्र मासणकेन भीभादिनाप  
विषं का०, प्र० मडाइडा भीहरिभद्रसुरिभिः ।

( १०४ )

सं १५ ६ वर्षे वैशाखशुदि ६ सोमे भीभीमा  
लक्ष्मीय भे० छाखा भा० पातली सुत कीकाकेन  
आत्मभेपोय भीनमिनापरिष कारितं प्रतिष्ठितं  
भीजिनमाणिक्यसुरिभिः ।

( १०५ )

सं० १४३० वर्षे माघशुदि ८ सोमे वीसबंशीय  
व्य० आशाघर भा० रामलदे पित्रोः ज्ञेयसे [ सुत ]  
व्य० सादाकेन भीभादिनापः कारितः प्र० पिप्प  
लाचार्यभीधर्मदेवसुरिसंतामे भीप्रीतिसुरिभिः ।

( १०६ )

सं० १३०० माघशुदि ९ भीभीमास पितृव्य भे

( ९७ )

नरसिंह भा० नयनादे स्त्रीमा साहा पु० करणाकेन  
श्रीशांतिनाथविंशं का०, प्र० चैत्रगच्छे श्रीहरिश्रंद्र-  
सूरिभिः ।

( १०७ )

सं० १३९९ फागणसुदि १३ सोमे श्रीमूलसंघेन  
वयडठी [ प्रतिष्ठा कारिता ]

( १०८ )

सं० १७०८ मागसरसुदि २ रवौ सा० यक्षरा-  
जेन पुण्यार्थं श्रीपार्श्वविंशं कड्डुआमतगच्छे भाणाजी  
लाधाजीकेन [ का० प्रतिष्ठितम् ]

( १०९ )

सं० १६८३ ज्येष्ठसु० ३ कड्डुआमती थरादरा  
ठाकुर रत्नपाल भा०रमादेव्या सुमतिनाथविंशं का०  
तेजपालेन प्र० ।

( ११० )

सं० १६६२ फागणसु० २ बुधे हारापित्रासा-  
जनसी [ श्रे० ] श्रीवासुपूज्यविंशं का० थरादनगर-  
वास्तव्ये ।

( ९८ )

( १११ )

सं० ११६४ वर्षे वैशाखशुक्ले १३ श्रे० छाडा पुत्र  
स्वीमठ मा० जयतु पुत्र केल्हण मा० खूणी पु० हर  
पाल मा० फूरवे सुत रत्नसिंहेन मा० गठरादे  
सहितेन पितृव्यदेवस्य पूमपाल पितापितृव्य मर  
पालभेयसे आदिनाथप्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता  
श्रीमहेंद्रसूरिपदे श्रीअमयदेवसूरिमिः ।

( ११२ )

सं० १४३६ वैशाख वदि ११ शोमे श्रीमालज्ञा०  
व्य० बीषा मा० हमीरवे सुत मूदेवेम पितृभेयसे  
श्रीपाम्बनाथबिंध्य का०, प्र० पिप्पलगच्छीय श्री  
बिजयप्रभसूरिपदे श्रीउदयानवसूरिमिः ।

( ११३ )

सं० १४७९ माघवदि ७ सोमे श्रीमाबडारगच्छे  
श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० भरमा पुत्र सरवणेन पुत्र  
पर्वतभेयसे श्री चंद्रप्रभस्वामिबिंध्य कारितं प्रति०  
श्रीबिजयसिंहसूरिमिः ।

( ११४ )

सं० १६१७ वर्षे पौष वदि १ शुरौ राजापिराज  
श्रीअम्बसेन राणी बामादेवी तपोः पुत्र श्रीश्रीपाम्ब

( ९९ )

नाथविंशं कारितं श्रीधिराद्रवास्तव्य लघु० श्रीमाल-  
जातीय श्रे० बीजा पूना मूलादिकेन स्वकर्मक्षयार्थं ।

( ११५ )

सं० १६१७ वर्षे पौष वदि १ गुरौ राजा श्री  
कुम्भाराणा राणीश्रीप्रभावती तयोः पुत्र श्रीश्री  
मल्लिनाथस्य विंशं कारितं श्रीधिराद्रवास्तव्य श्री  
श्रीमालजातीय महं० घडसी रंगा उदयवंत धनपाल  
संघवी कर्मक्षयार्थं प्रतिष्ठितं विंशं श्रीशुभं भवतु ।

( ११६ )

सं० १५७८ वर्षे माहवदि ५ शुक्ले महाराजा-  
धिराज श्रीदृढरथ राज्ञीश्रीनंदादेवी पुत्र श्री श्री  
श्री श्री शीतलनाथविंशं कारितं श्रेयसेस्तु ।

( ११७ )

सं० १६१३ वर्षे वैशाखसुदि १० गुरौ राजाधि-  
राज महाराज श्रीनाभिनरेश्वर माता श्रीमरुदेवी  
तत्पुत्र श्री श्री श्री श्रीआदिनाथविंशं कारितं  
श्रीधिराद्रवास्तव्य श्रीश्रीमालजातीय वाई नीनू  
कर्मक्षयार्थं कारितं ।

( ११८ )

सं० १५११ वर्षे ज्येष्ठवदि ९ रवौ श्रीश्रीमालजा०



स० मोना भा० श्वेतलदे सुत गाढा भा० भोली  
 सुत काला भा० कामलदे आ० धर्मण, नरियाभिः  
 पितृमातृभ्यसे भीनमिमाषर्षिष का०, प्र० श्री  
 पिप्पलगच्छे भ० श्रीउदयदेवसूरिभिः, बालहरग्रामे।

( ११९ )

सं० १५०६ वर्षे वैश्रवदि ५ गुरौ श्रीभीमाल  
 ज्ञातीय मं० जेसिंग भा वापू सु वमाकेन पितृ  
 व्यसारंग आ० कर्मणभेयोर्धं श्रीशांतिनाथर्षिवं पूर्णि-  
 मापक्षे श्रीवीरप्रभसूरीणास्तुपवेशेन कारित प्रति  
 ष्ठित च विधिना तिउरवाडाग्रामे श्रीः।

( १२० )

स० १५२६ वर्षे माघवदि ७ सोमे श्रीउदयसवरो  
 सा० राणा भा० रयणादे पुत्र सा० खरद्वर्षभाषकेण  
 भा० माणिकदे पुत्र लखमण केसवण कीर्ति पौत्र  
 मदन सुरा माणिक सहितेन पुत्ररावणपुण्यार्थं श्री  
 अचलगच्छे श्रीजयकेसरीसूरीणास्तुपवेशेन संभव  
 नाथर्षिषं कारित प्रतिष्ठित च।

( १२१ )

स० १५२१ वर्षे माघवदि ५ गुरौ श्रीभीमाल  
 ज्ञातीय व्यब० कर्मसिंह भा० मदी सु० वाघाकेन

( १०१ )

पुत्र मातृश्रेयोर्थं श्रीअजितनाथविंशं कारापितं श्री-  
पू० भ० राजतिलकसूरैरुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभिः  
थिरपद्रे ।

( १२२ )

सं० १५६० वर्षे वैशाखसुदि ३ बुधे श्रीश्रीमा-  
लज्ञा० व्य० सारंग भा० रंगी सुत लखमणकेन भा०  
पालू सुत रहिया देपाल सहितेन स्वपितुर्निमित्तं  
आत्मश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथविंशं का० श्रीनागेंद्रगच्छे  
भ० श्रीसोमरत्नसूरिपद्रे भ० श्रीहेमसिंघसूरिभिः  
प्रतिष्ठितं ।

✓ ( १२३ )

सं० १५२१ ज्येष्ठसुदि ९ सोमे उप० जातीय  
नाहरगोत्रे कुशला भा० कल्हणदे पुत्र महणाकेन  
पितृव्यपुण्यार्थमात्मश्रेयसे श्रीसुमतिनाथविंशं का०,  
प्र० धर्मघोषगच्छे श्रीपद्मानंदसूरिभिः पुंजपुरवा-  
स्तव्यः ।

( १२४ )

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठसुदि १३ बुधे उपकेशजा-  
तीय व्यव० कीका भा० सरसइ सुत खेता भा०  
रंगी सुत रूपाकेन भ्रातृदेवराजनिमित्तमात्मश्रेयसे

( १०२ )

श्रीनमिनापरिषद् कारापित प्रतिष्ठित भाष्यारण्ये  
श्रीभाष्येषसुरिभिः सत्यपुरवास्तव्यः ।

( १२५ )

सं० १५६० वर्षे वै० सु० ३ स० खेता भा० हांस  
छवे पुत्र सं० खेटाघ्रातृ स० अर्जुनेन भा० अधिकादे  
पुत्र सं० मांडण घ्रातृज हृगर बना जेसा प्रभृति  
कुटुंबयुतेन हृदपितृव्य सं० मेहा भेयसे प्रीतये श्री  
वासुपूज्यपरिषद् कारित प्रतिष्ठित तपागण्ये श्रीसोम  
सुवरसुरिपद्मे मायक श्रीकमलसुरिभिः ।

( १२६ )

स० १५४३ वर्षे ज्येष्ठसुदि ११ श्रीश्रीमासीय  
व्य० समधर भा० जीविणी पुत्र व्य० चर्मसिंहेन  
भा० माणिकी पुत्र महिराज परजांगादियुतेन स्वभे  
यसे श्रीशीतलमापरिषद् का०, प्र० श्रीसुरिभिः पूज्य  
श्रीशौभाग्यरत्नसुरिभिः ।

( १२७ )

सं० १५... वर्षे माघ २ शुरौ श्रीप्राग्बाट झा०  
भे धांगा भा० पगादे सुत पर्वतकेन भा० मठक  
पुत्र कमणादि कुटुंबयुतेन श्रीविमलनापरिषद् का  
प्र० हृदतपापक्षे भ० श्रीजिमसुंदरसुरिभिः । सह  
आलावास्तव्यः श्रीः ।

( १०३ )

( १२८ )

सं० १५२३ वर्षे वैशाखसुदि १३ प्राग्वाट व्य०  
मुंजा भा० जसू पुत्र व्य० हापाकेन भा० रत्नादे  
पुत्र जावड़ जीवा जगादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं  
श्रीअभिनंदनविंशं का०, प्र० तपागच्छाधिराज श्री-  
लक्ष्मीसागरसूरिभिः मूजिगपुरे ।

( १२९ )

सं० १५३६ वर्षे पौष वदि २ गुरौ श्रीब्रह्माण-  
गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठिरामा भार्या रत्नादे  
सुत वरदेवेन भा० वीलहणदे सुत मांजर भाखर  
सहितैः स्वपितृमातृश्रे० श्रीसुमतिनाथविंशं का०  
प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः कहीआणावास्तव्यः ।

( १३० )

सं० १५१७ वर्षे वैशाखसुदि १२ भोमे श्रीश्री-  
मालज्ञातीय श्रे० हला भा०हेली सुत सबसीकेन  
पितृमातृस्वपूर्वजश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथपंचतीर्थी का-  
रिता प्र० पिष्पलगच्छे भ० श्रीगुणरत्नसूरिभिः  
वालुकडग्रामे ।

( १३१ )

सं० १५४८ वर्षे वैशाखवदि १० रवौ श्रीश्री-

( १०४ )

मालज्ञा० सिद्धशा० भे सुखमसी भा०मांजू सुत  
मया भा० मांजू सुत तेजाकेन भा० मल्हईसहितेन  
पितृमातृभ्रातृनिमित्तमात्मभेयसे श्रीशीतलमाष  
बिष का०, प्र० पिष्पलगण्डे श्रीरत्नवेबसूरिपदे श्री  
पद्मानंदसूरिभिः पत्तनवास्तव्यः ।

( ११२ )

सं १४९९ बर्ये कार्तिकसुदि १५ गुरौ श्रीश्री  
मालज्ञातीय स्व० सुरा भा० सुहृद्वे पुत्र पतास्वा  
भ्यामात्मभेयोर्ष श्रीसभषनापरिषं कारित प्रति  
ष्ठित पिष्पलगण्डभिम्बीया श्रीधर्मशेखरसूरिभिः  
धारापत्रे ।

( ११३ )

सं० १५१३ बर्ये माघसुदि ३ शुके श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय म० सुरा भा० मोडी सुत हापाकेन भा०  
कली सु० समथर सहसा धरवेच बीरा पद्यायण  
महिराज महितेन पितृमातृ भे० श्रीभाविनापरिष  
का , प्र० श्रीब्रह्माणगण्डे श्रीमणिकंदरसूरिभिः,  
वराठद्रवास्तव्यः ।

( ११४ )

सं० १५२० बर्ये पौषवदि ४ गुरौ श्रीसिद्धशा

( १०५ )

खीय श्रीश्रीमाल व्यव० दूदा भा०माणिकदे सुत  
राणाकेन सम्राट्टयुतेनात्मश्रेयोर्थ श्रीसुमतिनाथर्वि०  
का०, प्र० श्रीपिडपलगच्छे श्रीविजयदेवसूरिशिष्य-  
शालिभद्रसूरिभिः ।

( १३५ )

सं० १५३४ वर्षे पौषव० १० दिने श्रे० मांजा  
भा० मालहणदे सुत भावड भा० टूवीनामन्या नि-  
जश्रेयसे श्रीआदिनाथर्विवं का० प्र० भ० श्रीलक्ष्मी  
सागरसूरिभिः संखारुवास्तव्यः ।

( १३६ )

सं० १४५० वर्षे माघवदि ९ सोमे श्रीमाल-  
ज्ञातीय धांधीयागोत्रे ठकुर हरिराज पु० ठ० हापा  
ठ०जयपालनिमित्तं ठ० हेमाकेन श्रीअजितनाथर्वि-  
वंका० प्र० ग्वरतरगच्छे श्रीजिनवल्लभसूरिभिः ।

( १३७ )

सं० १५३७ वर्षे वैशाखसुदि १० सोमे श्रीवीर-  
वंशे श्रे० मोखा भा० रामति पुत्र श्रे०देवा सुश्राव-  
केण पुत्र नारद पूना युतेन निजश्रेयोर्थ श्रीअंचल-  
गच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणासुपदेशेन श्रीअनन्त-  
नाथर्विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन पत्तननगरे ।

( १०६ )

( १३८ )

स० १५२७ वर्षे माघशुद्धि ७ रवौ उपवेश  
ज्ञातीय व्य० मांढण भा० करण् सुत मोका[किम]  
भा० ऊवी द्वि० भा० समु सुत आल्हणपांचायु  
तेमात्मभयसे भीसभयनायर्षिबं का०, प्र० श्रीजीरा  
पल्लीप भीठययचद्रसुरिपडे म० श्रीसागरचद्र  
सुरिभिः शुभं भवतु ।

( १३० )

स० १५०५ वर्षे वैशाम्बशुद्धि ९ शुके श्रीभी  
मालज्ञातीय म० साल्हा भा० फरफूद सुत सेमा  
भा० खेतलदेव्या सुत राजासहितेन स्वभेयोर्ष  
जीधितस्वामिभीममिमापर्षिबं का० श्रीपू० म०  
श्रीवीरप्रमसुरीणामुपवेशेन प्रतिष्ठिता थिरापद्र  
वास्तव्यः ।

( १४० )

सं० १५१६ वर्षे जायाडसुद्धि ३ रवौ श्रीभी  
माल० म० बत्सा भा० वीक्षलदेसुत मे० शिवाकेन  
मातृपितृभेयोर्ष श्रीअजितमापर्षिबं पूर्णिमापक्षे  
श्रीगुणसमुद्रसुरिपडे श्रीगुणवीरसुरीणामुपवेशेन  
कारित प्रतिष्ठितं च विधिना तदेवाग्रामे ।

( १०७ )

( १४१ )

सं० १५१६ वर्षे माघवदि ९ ज्योमे प्राग्वाट  
व्य० ज्योत्वा भा० कीलहणदे पु० देवा[ वैन ] भा०  
सूलेसिरी सुत भरमादिसहितेनात्मश्रेयसे श्री-  
गीतलनाथर्विवं का०, प्र० पूर्णिमापक्षे श्रीदेवचंद्र-  
सूरीणामुपदेशेन ।

( १४२ )

सं० १५०५ वर्षे वैशाखसु० ३ शुके थिरापद्र-  
गच्छे श्रीश्रीमाल ध्रु० धीरा आतृ नरसी धीरा भा०  
धांधलदं सुत इला, अर्जुन गोलाकेन स्वपितृमातृश्रे०  
श्रीआदिनाथर्विवं का०, प्र० श्रीविजयमिहसूरिभिः  
थराद्रवास्तव्यः

( १४३ )

सं० १५२० वर्षे चैत्रवदि ५ बुधे श्रीश्रीमालजा०  
पितृकान्हा मातृरूपिणि निमित्तं पुत्र सालिगेन  
भा० गेरीयुतेनात्मकश्रेयसे श्रीकुंथुनाथर्विवं का०,  
प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिपद्रे  
श्रीधर्मसूरिभिः ।

( १४४ )

सं० १५१५ वैशाखसुदि १३ रवौ श्रीश्रीमाल



( १०८ ) ✓

पु० महा भा० खेगलद सुत जयमिषेन भा०  
जयभादमहितेन पितृघातुनिमित्तमात्मभेयोर्थं श्री  
शद्रमभस्यामिषिष का०, प्र० पिप्यलग्गच्छे म०  
श्रीपिजयदेवसूरिस्पदनन श्रीशास्त्रिभद्रसूरिभिः,  
मजोद्वयमे ।

( १४५ )

सं० १०२४ वर्षे वैशाखसुदि ३ सोम श्रीमिद  
मतान श्रीमात्ता० भ० सन्वममी भा० मांजू सुत  
गणियाकेन भा० श्रीजू सुत आशपरसहितेन पितृ  
मातृभेयोर्थं श्रीश्यांसनापविषे का०, प्र० श्रीपिप्य  
लग्गच्छे श्रीठदयदेवसूरि पृष्ट श्रीरत्नदेवसूरिभिः  
श्रीपत्तन ।

✓ ( १४६ )

सं० १०२९ वर्षे फागुणसुदि २ गुरु श्रीउपस  
पक्षे बद्धराजाभ्यायां सा० दरगा भा० सीलादे पुत्र  
विषमसुभापकण भा० पलदाद पुत्र व्याघ्रसिंह  
भोजा श्रीमा लेना महितेन पितृप्यसाजनपुण्यार्थं  
अचलगच्छ गुरुश्रीजयकेसरिसूरीणासुपदेदान वि  
मलनापविषं का० प्रतिष्ठित य ।

( १४७ )

सं० १०२९ वर्षे वैशाखसुदि ३ प्राग्यादक्षातीप

( १०९ )

व्य० वीरम भा० झनु सुत राघवेन भ्रातृ हेमा  
हीरा वीसल भा० मचकू सुत अर्जुन सांगा सह-  
जादि कुटुंबयुतेन पितृश्रेयोर्ध श्रीसुमतिनाथविंव  
कारितं प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिभिः, जडवदासी ।

( १४८ )

सं० १५०७ वर्षे फागुणवदि ११ गुरौ व्यव०  
गोला[केन] भा० महगलदेनिमित्तं श्रीकुंथुनाथविंव  
कारापितं ब्रह्माणगच्छे श्रीमणिचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( १४९ )

सं० १३४१ श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय  
श्रे० साहडश्रेयोर्ध सुत लापाकेन विंव कारितं प्रति-  
ष्ठितं श्रीधरसूरिभिः ।

( १५० )

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठवदि ३ सोमे श्रीभावडार-  
गच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सोना भा० महीदेव्या  
स्वपुण्यार्थ श्रीवासुपूज्यविंव कारितं प्र० कालिका-  
चार्यसंताने पूज्य श्रीवीरसूरिभिः ।

( १५१ )

सं० १५२७ वर्षे माघवदि ५ दिने गुरौ प्राग्वाट-  
ज्ञातीय सा०करणा भा० मापूपुत्र सा०बीढाकेन भा०

( ११० )

राजसुत पुत्र सा० पालादिकुट्टपयुतेन जीमभयनाथ  
पिप का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

( १५२ )

म० १४७१ माघसुदि ३ श्रीश्रीमालज्ञातौ मे०  
वेदा भा० वेत्तृणवे सुत वृदाक्षेन पित्रोः मे० श्री  
धिमलनाथपिप का०, प्र० पिप्पलगच्छे धिभयिणा  
श्रीधर्मप्रभसूरिभिः ।

( १५३ )

स० १५०१ वर्षे पौषवदि ९ श्रीश्रीमालज्ञातीय  
से० नयणा सुत कर्णेन पितृष्य तुहणा मना रूगर  
वदा मातृष्य पात्नीमिमित्त श्रीनेमिनाथपिप कारा  
पितं प्र० सिदांतीश्रीसोमचद्रसूरिभिः ।

( १५४ )

स० १५१० वर्षे ज्येष्ठवदि १ शुक्ले अहमदावादीय  
प्राग्याट म० लीषा भा० मधु पुत्र अदा भा० मांजी  
नाम्न्या स्वयेपसे श्रीअजितनाथपिप कारित प्र०  
वृद्धतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ।

( १५५ )

स० १५२४ वर्षे वैशखवदि ५ श्रीमाल मे० मावा  
भा० छात्र सुत राजा भा० राजू पुत्र जीवठ छाडण-

( १११ )

रतनासहितैः पित्रोर्निमित्तं स्वश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथ  
विंशं का० प्र० धारणपट्टीय भ० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिभिः ।

( १५६ )

सं० १५०६ वर्षे माघसुदि... श्रीश्रीमालज्ञातीय  
श्रे० सूरु[केन] भा० रूपादे सुत धर्मानिमित्तं आ-  
विका सूड्यात्मश्रेयसे श्रीसंभवनाथविंशं का०, प्र०  
पि० श्रीधर्मशेखरसूरिपट्टे श्रीविजयदेवसूरिभिः ।

( १५७ )

सं० १५१० फागुणसुदि ११ शनौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० व्यव० पूनपाल भा० पाल्हणदे पुत्र हीरा हरि-  
याकेन पुत्र नगड नरपालयुतेन भ्रातृनिमित्तं श्री-  
अभिनंदनस्वामिर्विंशं का० श्रीभावडारगच्छे श्री-  
कालिकाचार्यसंताने श्रीवीरसूरिपुरन्दरैः ।

( १५८ )

सं० १३५९ श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय  
श्रे० झांझाकेन पितृधिरपाल्हश्रीमंत श्रेयसे श्री-  
शांतिनाथविंशं कारितं प्र० श्रीवीरसूरिभिः ।

( १५९ )

सं० १४४९ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुक्ले श्रीउपकेश-  
ज्ञा० पितृकुरसिंह मातृकामलदेः श्रेयसे सुत

( ११९ )

वीरकाकेन श्रीसुमतिनाथविषय कारित श्रीपार्श्वचन्द्र  
सुरीणामुपदेशेन ।

( १६० )

स० १५०३ वर्षे ज्येष्ठवदि ७ ब्रह्माणगण्डे मोरि  
बावास्तस्य श्रीभीमाली व्य० हीरा सुत वपरा भा०  
साङ्गी सुत मांडण भा० पाखूदे सुत समधर धनराज  
सहितनात्मभेयोर्थ श्रीवासुपूज्यविषय कारित प्रति  
ष्ठितं श्रीपञ्चसुरिभिः ।

( १६१ )

स० १४४२ वर्षे वैशाखवदि १ रवौ श्रीभीमा  
लक्षा० भे० हरपाल भा० हीरावेद्यात्मभेयसेजीवित  
स्वामिभीमाविनाथविषय का०, प्र० पिप्पलगण्डे श्री  
सागरचन्द्रसुरिभिः ।

( १६२ )

स० १५०३ वर्षे मार्गशिरवदि ५ श्रीमावडार  
गण्डे ( श्रीककुवाचार्य सं० ) हादा पु० स० कासा  
भा० कमलादे पुत्र भीमा वेला मालाकेन स्वपुण्यार्थ  
श्रीनमिमाथ कारापित प्र० श्रीवीरसुरिभिः ।

( १६३ )

सं० १४०३ प्रा० भे० माडलसी भा० माणिकदे

( ११३ )

सुत ठाकुरसिंहेन भा० पातू सुत वानरादियुतेन  
श्रीसुमतिनाथविंयं का०, प्र० तपा श्रीसोमसुंदर-  
सूरिभिः ।

( १६४ )

सं० १४८२ वर्षे वैशाखवदि ४ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० पितृ आपमल मातृजमादेवी पितृत्रयरणसिंघ-  
श्रेयसे सु० देवाकेन श्रीसंभवनाथविंयं कारितं प्र०  
पिष्पलगच्छे श्रीसागरभद्रसूरिभिः ।

( १६५ )

सं० १५२७ वर्षे कार्तिकवदि ५ सोमे श्रीश्री-  
मालज्ञा० सं० घृद्धशाखायां व्य० कर्माण भा०  
हमीरदे सुत नाभाकेन स्वपितृमातृ श्रे० श्रीअजित-  
नाथविंयं का०, प्र० श्रीविजयसिंहसूरिपट्टे श्रीशांति-  
सूरिभिः धिरापद्रगच्छे श्रीः ।

( १६६ )

सं० १५५२ वर्षे फागुणसुदि ३ श्रीश्रीमालज्ञातौ  
नियूगोत्रे व्य० जीता भा० वानू पुत्र भीमा भा०  
वरजू कामलदे पुत्र रामारंगाभ्यां श्रीसुमतिनाथविंयं  
का०, प्र० कंछोलीपूर्णिमापक्षे भ० श्रीविजयराज-  
सूरिभिः ।

( ११४ )

( ११७ )

सं० १५३७ वर्षे ज्येष्ठसुदि २ सोमे श्रीप्राग्वाट  
ज्ञातौ छत्रशास्त्रार्थां भे० हरदास मा० गोष्ठी पुत्र  
राणा पत्नी टक्कामास्या स्वपुण्यार्थं श्रीअजितनाथ-  
विंब कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीछद्मीसागर  
सुरिणि ।

( ११८ )

सं० १५३३ वर्षे माघसुदि १३ सोमे श्रीभीमात्-  
ज्ञातीय भे० ठाकुरसी मा० करमी सुत मेहाजठ  
मा० मास्ही सुत सधारण जगमाठसहितेन द्वि०  
भार्या देहूनि० श्रीसुमतिनाथविंबं का०, पूर्णि० म०  
श्रीकमलप्रभसुरिणा प्रतिष्ठितं जनाकुयो वास्तव्या ।

( ११९ )

सं० १४८४ वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय ज्य० सापरसुत  
ज्य० गदाकेन स्वघ्रातृपद्माभेपसे श्रीशांतिनाथविंब  
कारापितं प्र० तपाश्रीसोमसुवरसुरिणिः ।

( १२० )

सं० १४३६ वर्षे वैशाख वदि ११ प्राग्वाटज्ञातीय  
ज्य० असवीर मा० बांसछदे पु० मामाकेन त्रिज  
पिधोः भेयसे श्रीमहावीरविंबं कारितं श्रीपासंघ-  
घुरीणाशुपदेशेन ।

( ११५ )

( १७१ )

सं० १५२९ वर्षे माघसुदि १ बुधे श्रीब्रह्माण-  
गच्छे श्रीमालज्ञातीय श्रे० भावा भा० भावलदे  
सुत रामाकेन भार्यालाडीनिमित्तं पुत्र वजूरसहितेन  
स्वपूर्वजश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथविंशं का०, प्र० श्री-  
विमलसूरिपट्टे श्रीवृद्धिसागरसूरिभिः ।

( १७२ )

सं० १५३२ वर्षे वैशाखसुदि १३ सोमे थारा-  
पद्रीयगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० ठाकुरसी भा०  
पालहणदे पुत्र ऊदा[किन] भा० अहिवदे पितृ[व्य०]  
फाफा कालुआ झलीआ निमित्तं श्रीअजितनाथविंशं  
का०, प्रतिष्ठितं श्रीशांतिसूरिभिः ।

( १७३ )

सं० १२०४ वर्षे वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीपंडेरक-  
गच्छे देल्हा भा० देल्ही सुत रत्नसिंहश्रेयोर्थं  
कुमरसिंहेनश्रीपार्श्वनाथविंशं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीशांतिसूरिभिः ।

( १७४ )

सं० १५१३ वर्षे वै० सु० ३ श्रीमूलसंघे सर-  
स्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यसंतानीय भ० सकल-



( ११६ )

कीर्तिदेव तत्पदे श्रीविमलेंद्रकीर्तिगुरुणा प्रतिष्ठित  
हुबडशा० अ० बनड भा० वानू सुत काळा भा०  
बाल्ही भ्रा० कीका भा० गोमति भ्रा० सिंवा भ्रा०  
पूमा बच्छा श्रीशांतिमायर्षिब कारितं नित्यं प्रणमति ।

( १७५ )

स० १५३७ वर्षे क्येष्ठ सुदि २ सोमे श्रीबीरवंशे  
अ० रत्ना भा० रतनू पुत्र अ० घन्ना सुभाबकेण  
भार्या घन्नी पुत्र पासा पवमा सहितेन पत्नीपुण्यार्ष  
श्रीमच्छगच्छेश श्रीजयकेशरिसूरीणामुपदेशेन श्री-  
सुमतिनायर्षिब कारितं प्र० सधेन आवस्तीनगरे ।

( १७६ )

स० १४८५ माघ वदि ९ शुरौ श्रीमाबडारगच्छे  
श्रीश्रीमाळशा० अ० घरणा भा० करणादे पुत्र पून  
पाळेन सुत हीरा हरवेब यशापाळ मातृपितृभ०  
श्रीसंभवमायर्षिब का० प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंह  
सूरिमिः ।

( १७७ )

सं० १५९१ वर्षे पौषवदि १० बुधे श्रीश्रीमाळ-  
शातीय अ० पूना सुत डाहा भा० छाखू सुत मेहा  
समधर भा० छाखीवेड्या मातृपितृमिमिच्छमात्म

( ११७ )

श्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथधियं का०, प्र० श्रीब्रह्माण-  
गच्छे श्रीविमलसूरिभिर्वाविहीनामे ।

( १७८ )

सं० १४०४ वर्षे का० व० ९, सोमे श्रीश्रीमाल  
व्य० नरिया भा० नीनादेश्वरसे पितृ[व्य]खीमा  
वहजा श्रेयोर्थं आ० नरसिंहादिसर्वेषां नि० सुत  
तिलकाकेन श्रीपद्मप्रभपंचतीर्थी कारिता श्रीपूर्णमा-  
पक्षे श्रीसूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

( १७९ )

सं० १३८७ वर्षे वैशाखसुदि २ रवौ ब्रह्माणगच्छे  
श्रीश्रीमालजा० व्य० चयरा[किन]स्व श्रेयसे श्रे० घुर-  
सिंहसहितेन श्रीपार्श्वनाथधियं कारितं प्र० श्री-  
जज्जगसूरिभिः ।

( १८० )

सं० ११४८ श्रीनागकरणेन आत्मश्रेयोर्थं कारितं ।

( १८१ )

सं० १४५२ वैशाखसुदि ५ गुरौ राठ पुत्र महं०  
राणासुत लालाकेन पितृमातृ तथा पितृव्यवहारा-  
श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथधियं का०, प्र० श्रीपुण्यतिलक-  
सूरिणा ।

( ११८ )

( १८२ )

सं० १४५६ ज्येष्ठसुदि १३ गुरौ प्रा० अ० सांगण  
भार्या सुगुणादे पु० मेघाकेन घ्रातृ शुणमरपाल ।  
भगडा मातृस्वसा कुरीदे तेषां निमित्तं श्रीसंभबनाथ  
यिष का०, प्र० श्रीरत्नप्रभसुरीणामुपदेशेन ।

( १८३ )

सं० १४६५ वर्षे वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीश्री-  
मालज्ञा० ज्य० श्रीरा मा० श्रीलृणदे सुत अ० पर्वतम  
श्रीसंभबनाथयिष का० प्र० नागेन्द्रगण्डे श्रीरत्न  
सिंहचैरिभिः ।

( १८४ )

सं० १४५३ वर्षे वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
पितृभ्य मदीमल मातृ सुहृदादे घ्रा० श्रीमा ननुजा  
पंचजन भेषसे देपाकेन श्रीआदिनाथपचतीर्षी  
कारिता श्रीचनतिलकचरीणामुपदेशेन प्र० ।

( १८५ )

सं० १४९६ वर्षे फागुणवदि ३ रवौ श्रीश्रीमाल  
ज्ञासीप अ० फला भा० पोमी आतृअपकुरसीभेयोर्भ  
सुत रक्षिपाकेन श्रीकुंगुनाथयिष का०, प्र० पिप्पल  
गण्डे अ० प्रीतिरत्नसुरिभिः ।

( ११९ )

( १८६ )

सं० १४८४ वर्षे वैशाखवदि ११ रवौ श्रीश्रीमाल  
व्य० फूटर भा० हांसलदेव्या पितृमातृश्रेयोर्ध श्री-  
कुंड्युनाथविंयं कारितं प्र० पिप्पलगच्छे श्रीधर्म-  
शेखरसूरिभिः ।

( १८७ )

संवत् १०४६ चैत्रवदि १ अचलपुरसंघेन कारा-  
पितं ।

( १८८ )

सं० १४८९ वर्षे वैशाखसुदि ३ बुधे श्रीश्रीमाल-  
जातीय श्रे० हीरा[ केन ] भा० हीरादे सुत भाखर  
भा० साणी स्वभ्रातृश्रेयसे श्रीआदिनाथविंयं कारा-  
पितं ब्रह्माणगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीक्षमासूरिभिः ।

( १८९ )

सं० १५५२ वर्षे वै०व० ३ शनौ कुंडीशाखायां  
श्रीश्रीवंशे व्य० गहिया भा० झाझु सुत करणा भा०  
तारू सुत पांता भा० रामती पितुः पुण्यार्थं अंचल-  
गच्छे श्रीसिद्धांतसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीकुंड्युनाथ-  
विंयं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ।

( १९० )

( १९० )

सं० १४९९ वर्षे कार्तिकसुदि १५ श्रुतौ श्रीभी-  
मासज्ञातीय व्य० अर्जुन भा० कश्मीरवे सुत सापर  
पौत्र पमराजेन पितामहनिमित्तमात्मभेयोर्ष श्री-  
शांतिनाथर्षिब कारित प्रति० पिप्पलगच्छत्रिम-  
बीपामहारक श्रीधर्मशेखरसुरिमिः ।

( १९१ )

सं० १५१५ वर्षे कार्तिकवदि १४ शुक्ले श्रीमाष  
वारगच्छे श्रीभीमासज्ञातीय व्य० मेहावसेम भा०  
छाह पुत्र पूमा गांगा सांगा पितृव्य गेसा सहिते  
स्वपुण्यार्थ श्रीशीतलनाथर्षियं का०, प्रति० श्रीश्री  
सुरिपदे पूष्यश्रीजिनवेशसुरिमिः ।

✓( १९२ )

सं० १६७७ वर्षे वै०श० ८ श्रुतौ सासुतागोत्रे  
सा० कर्मसी भा० चरणश्री पु० सा० संज्ञणकेन श्री-  
पार्श्वनाथर्षिबं का०, प्र० श्रीमदेषसुरिमिः ।

✓( १९३ )

सं० ११९४ वर्षे वैशाखसुदि ९ बुधे ठसवाल  
ज्ञातीय ठा० देखा भा० सुहदा पुत्र सांज्ञणकेन  
पूर्वजनिमित्त श्रीपद्मप्रभर्षिबं का०, प्र श्रीजय  
बल्लभसुरिमिः ।

( १२१ )

( १९४ )

सं० १५४७ वर्षे वैशाखसुदि ३ सोमे प्राग्वाट-  
ज्ञातीय डीसावास्तव्य व्य० लखमणेन भा० रमकृ  
पुत्र लींवा तेजा जिनदत्त सोमा सूरा युतेन स्वश्रे-  
योर्थ श्रीशांतिनाथविंबं कारितं प्रतिष्ठितं अंचल-  
गच्छे श्रीश्रीसिद्धांतसागरसूरिभिः। व्य० लखमणेन  
भा०रमकृ पुत्र लींवा भा० टमकू ।

( १९५ )

सं० १५१७ वर्षे मार्गसु० १० सोमे श्रीउएसवंशे  
सा० राणा भा० राणलदे० पु० खरहत्थ सुश्रावकेण  
भा० माणकदे० पुत्र लखमण सहितेन अंचलगच्छे  
श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन पितृश्रेयोर्थ श्रीचंद्र-  
प्रभस्वामिविंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंधेन ।

( १९६ )

सं० १४९४ श्रावणवदि ९ रवौ श्रीश्रीमाल व्य०  
समरा भा० जाल्हणदे श्रेयसे सुत भरमाकेन श्री-  
सुविधिनाथपंचतीर्था कारा० प्रतिष्ठिता पिष्पलगच्छे  
त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिभिः ।

( १९७ )

सं० १५०७ वर्षे माघसुदि १० सोमे श्रीमाल-

( १२२ )

शालीय इय० पर्वत मा० राजसुदे पुत्र सुहाद्र मेहा  
महीपाभिः पितृमातृभेयोर्ष भीकुपुनायविब कारितं,  
प्र० नागेंद्रगण्डे भीपद्मानंदसूरिपदे भीविमपप्रम  
सूरिभिः ।

( १९८ )

स० १४८९ वर्षे वैशाखसुदि १ सोमे भीभीमाह  
शालीय स० साखा मा० भरमादे सुत सोलाके  
घ्रातृबहुभासुत साजमपुण्यार्थ भीशांतिनायविब  
का०, प्र० पिप्पल० भीसोमचंद्रसूरिभिः ।

( १९९ )

स० १३०९ वर्षे फागुणसुदि १३ बुधे सोराक  
गोष्ठी सा० हरवेधेन पुष्यार्थ भीपार्श्वनायविबमास्य  
अपसे कारितं, प्रतिष्ठितं चर्मघोषगण्डे भीजम  
प्रभसूरिशिष्यैः भीजामचंद्रसूरिभिः ।

( २०० )

सं० १२१७ वैशाखवदि १ भीमघ्राणगण्डे  
भीमपुम्मसूरीश्वरैः प्र० जोगा सुत विपुष्य  
भेयोर्ष का० ।

( २०१ )

सं० १४१९ वर्षे ज्येष्ठसुदि १३ श्रुते भे० सुप—

( १२३ )

पालपुत्र बीजाकेन श्रीअंधिका कागिता प्र० श्री-  
माणिक्यसूरिभिः ।

( २०२ )

सं० १४३७ वर्षे वैशाखसुदि ११ सोमे श्रीश्री-  
मालज्ञा० पितृव्यमातृ कीसलदे श्रेयोर्थ सुत काल-  
केन श्रीऋषभदेवविंशं कारितं प्र० पिष्पलनायक  
श्रीजयतिलकसूरिभिः ।

( २०३ )

सं० १२६१ सांतू आसल सं० धारण ।

( २०४ )

सं० १५७२ वर्षे कार्तिकसुदि २ सोमे श्रीआदि-  
नाथप्रतिमा कारिता ।

मोठामन्दिर ऋषभदेवचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २०५ )

सं० १४८० वर्षे फागुणसुदि १० बुधे श्रीकोरंटक-  
गच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उपकेशज्ञातीय श्रे० हेमा  
भा० भरमी सुत मना भा० तारू पु० आल्हा भा०

---

१ जै० घा० प्र० ले० स० मा० २ लेखाक ९३१ में जय-  
तिलकसूरि को धर्मतिलक लिखा है ।



( १११ )

( ११२ )

सं० १५१५ वर्षे वैशाखसुदि २ गुरौ प्राग्वाह  
ज्ञातीय अष्टिवागा [ केम ] भा० पोमी पु० वेला भा०  
लाबी पुत्र बिरुआयुते-नात्मभेयसे श्रीचंद्रमभर्षिर्ब  
का०, प्र० श्रीसिद्धांतीगण्डे म० श्रीसोमचंद्रसूरिभिः॥

( ११३ )

सं० १५१८ वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे श्रीभीमाख  
ज्ञातीय अ० धीरा[किम] भा० माली सुत आसु, मनु,  
पनु, देवु, पांडु, इंगर, अशु[युतेन] आत्मभेयसे श्री  
चंद्रमस्थामीर्षिर्ब कारापित वैद्यगण्डे म० श्रीरत्न  
वेषसूरिपद्मे म० अमरवेषसूरिप्रतिष्ठित गोष ....  
पावास्तव्यः ।

( ११४ )

सं० १५२५ वर्षे माघव० ६ दिने चांपानेरवासि  
गुर्जरशा० म० मरसिंग भा० आसुवेद्या सुत म०  
जिनकाम सुत पद्मकिरण श्रीबच्छ पहिराजादि  
कुटुंबयुतया मित्रभेयसे श्रीनमिनापर्यिप का०  
प्रतिष्ठित तपाभीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

( ११५ )

सं० १५३३ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुके श्रीभीमाख

( १२७ )

ज्ञा० श्रे० कर्मसी भा० लाहृ० सुत श्रे० भरमाकेन  
भा० देसलदे सहितेन पितृमातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थं  
श्रीसुविधिनाथविं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे भ० श्री-  
गुणदेवसूरिभिः धिरापद्रनगरे ।

( २१६ )

सं० १२४४ फागुणसुदि ३ बुधे आम्रयशसुत  
आसूकेन मातुः राजिमतीश्रेयोर्थं विं कारितं श्री-  
मतिप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः ।

( २१७ )

सं० १५४५ वर्षे फा०व० २ भोमे श्रीमालजातीय  
मं० भीमा भा० नागिनी सुत कान्हा भा० पूनली-  
देव्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथविं कारितं  
पूर्णिमापक्षे श्रीसाधुसुंदरसूरिपट्टे श्री श्री श्रीदेवसुंद-  
रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना गांफवास्नव्यः ।

( २१८ )

सं० १४८१ पौषव० ९ शुके श्रीश्रीमालजातीय  
व्य० विरुआ भा० भरमादे सु० बुहथाकेन मातृ-  
पितृश्रेयसे श्रीसंभवविं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे  
श्रीपद्मानंदसूरिभिः ।

( १९२ )

ज्ञातीय ज्य० पर्वत भा० राजलक्ष्मणे पुत्र सहस्र मेहा  
महीपाभिः पितृमातृभेयोर्धं श्रीकुण्डुनाथविष कारितं,  
प्र० नागेंद्रगण्डे श्रीपद्मानन्दसूरिपदे श्रीविनयप्रम  
सूरिभिः ।

( १९८ )

स० १४८९ वर्षे वैशाखसुदि १ सोमे श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय स० साखा भा० भरमादे सुत सोष्माकेन  
घ्रातृबहुभासुत साजमपुण्यार्थं श्रीशातिनाथविषं  
का०, प्र० पिप्पल० श्रीसोमचंद्रसूरिभिः ।

( १९० )

स० १३०९ वर्षे फागुणसुदि १३ बुधे सोराण्य  
गोष्ठी सा० हरदेवेन पुष्यार्थं श्रीपार्श्वनाथविषमात्म  
भेयसे कारितं, प्रतिष्ठितं घर्मघोषगण्डे श्रीबनर  
प्रमसूरिशिष्यैः श्रीज्ञानचंद्रसूरिभिः ।

( २०० )

स० १२१७ वैशाखशुदि १ श्रीब्रह्माणगण्डे  
श्रीप्रद्युम्नसूरीश्वरैः प्र० जोगा सुत पिप्पल  
भेयोर्धं का० ।

( २०१ )

सं० १४१२ वर्षे ज्येष्ठसुदि १३ गुरौ मे० लूण—

✓ (१२३)

पालपुत्र बीजाकेन श्रीअंबिका कारिता प्र० श्री-  
माणिक्यसूरिभिः ।

( २०२ )

सं० १४३७ वर्षे वैशाखसुदि ११ सोमे श्रीश्री-  
मालज्ञा० पितृव्यमातृ कीसलदे श्रेयोर्थं सुत काल-  
केन श्रीऋषभदेवविंशं कारितं प्र० पिष्पलनायक  
श्रीजयतिलकसूरिभिः ।

( २०३ )

सं० १२६१ सांतू आसल सं० धारण ।

( २०४ )

सं० १५७२ वर्षे कार्तिकसुदि २ सोमे श्रीआदि-  
नाथप्रतिमा कारिता ।

मोटामन्दिर ऋषभदेवचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २०५ )

सं० १४८० वर्षे फागुणसुदि १० बुधे श्रीकोरंटक-  
गच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उपकेशज्ञातीय श्रे० हेमा  
भा० भरमी सुत मना भा० तारू पु० आल्हा भा०

---

१ जै० घा० प्र० ले० स० भा० २ लेखांक ९३१ में जय-  
तिलकसूरि को धर्मतिलक लिखा है ।

( ११६ )

( ११७ )

सं० १५१५ वर्षे वैशाखसुदि २ शुरौ प्राग्घाट  
ज्ञातीय भेष्टिबागा[ केन ] भा० पोमी पु० बैला भा०  
खाबी पुत्र पिडमायुते-मात्मभेयसे श्रीचंद्रप्रभर्षिचं  
का०, प्र० श्रीसिदांतीगच्छे म० श्रीसोमचंद्रसुरिमिः॥

( ११८ )

सं० १५३८ वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे श्रीश्रीमाह  
ज्ञातीय भे० श्रीरा[केन] भा० भास्त्री सुत आसु, मनु,  
घनु, देयु, पांडु, इंगर, अयु[युतेन] आत्मभेयसे श्री  
चंद्रप्रभस्वामीर्षिचं कारापित वैद्यगच्छे म० श्रीरत्न  
वेषसुरिपद्मे म० अमरवेषसुरिप्रतिष्ठित गोत्र ---  
पावास्तव्यः ।

( ११९ )

सं० १५२५ वर्षे माघव० ६ दिने चांपामेरवासि  
शुर्जरज्ञा० म० भरसिंग भा० आसुवेष्या सुत म०  
जिमकाम सुत पद्मकिरण श्रीवच्छ पदिराजावि  
कुडुचयुतया निजभेयसे श्रीनमिनापरिष्यं का०  
प्रतिष्ठितं तपाश्रीलक्ष्मीसागरसुरिमिः ।

( १२० )

सं० १५३६ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुके श्रीश्रीमाह-

( १२७ )

ज्ञा० श्रे० कर्मसी भा० लाहृ० सुत श्रे० भरमाकेन  
भा० देसलदे सहितेन पितृमातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थं  
श्रीसुविधिनाथर्विवं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे म० श्री-  
गुणदेवसूरिभिः धिरापद्रनगरे ।

( २१६ )

सं० १२४४ फागुणसुदि ३ बुधे आम्रयशसुत  
आमूकेन मातुः राजिमतीश्रेयोर्थं विवं कारितं श्री-  
मतिप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः ।

( २१७ )

सं० १५४५ वर्षे फा०व० २ भोमे श्रीमालज्ञातीय  
सं० भीमा भा० नागिनी सुत कान्हा भा० पूतली-  
देव्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथर्विवं कारितं  
पूर्णमापक्षे श्रीसाधुसुंदरसूरिपट्टे श्री श्री श्रीदेवसुंद-  
रसूरीणासुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना गांफवास्तव्यः ।

( २१८ )

सं० १४८१ पौषव० ९ शुके श्रीश्रीमालज्ञातीय  
व्य० विरुआ भा० भरमादे सु० बुहथाकेन मातृ-  
पितृश्रेयसे श्रीसंभवर्विवं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे  
श्रीपद्मानंदसूरिभिः ।

( १११ )

( ११२ )

स० १५१५ वर्षे वैशाखसुदि २ गुरौ प्राग्व्याद  
शातीय भेष्टिवागा[ केन ] भा० पोमी पु० वेला भा०  
लापी पुत्र विरुभायुत-नात्मभेयसे श्रीचंद्रप्रभर्षिवं  
का०, प्र० श्रीसिद्धांतीगच्छे म० श्रीसोमचंद्रसूरिभिः॥

( ११३ )

स० १५३८ वर्षे वैशाखसुदि ५ शुधे श्रीश्रीमास  
शातीय भे० धीरा[केन] भा० भाषी सुत भासु, मनु,  
घनु, वेधु, पांशु, कूंगर, अशु[युतेन] आत्मभेयसे श्री  
चंद्रप्रभस्वामीर्विय कारापित वैद्यगच्छे म० श्रीरत्न  
देवसूरिपट्टे म० अमरदेवसूरिप्रतिष्ठित गोष ---  
पावास्तव्यः ।

( ११४ )

स० १५२५ वर्षे माघष० ६ दिने चांपामेरवासि  
गुर्जरशा० म० नरसिंग भा० आसूदेव्या सुत म०  
जिमकाम सुत पद्मकिरण श्रीबच्छ पहिराजादि  
कुदुपयुतया मिजभेयसे श्रीममिनाधर्षिवं का०  
प्रतिष्ठित तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

( ११५ )

सं० १५३३ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुके श्रीश्रीमास-

( १२७ )

ज्ञा० श्रे० कर्मसी भा० लाहृ० सुत श्रे० भरमाकेन  
भा० देसलदे सहितेन पितृमातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थं  
श्रीसुविधिनाथर्विवं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे भ० श्री-  
गुणदेवसूरिभिः धिरापद्रनगरे ।

( २१६ )

सं० १२४४ फागुणसुदि ३ बुधे आम्रयशसुत  
आमूकेन मातुः राजिमतीश्रेयोर्थं विवं कारितं श्री-  
मतिप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः ।

( २१७ )

सं० १५४५ चर्षे फा०व० २ भोमे श्रीमालजातीय  
मं० भीमा भा० नागिनी सुत कान्हा भा० पूतली-  
देव्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथर्विवं कारितं  
पूर्णिमापक्षे श्रीसाधुसुंदरसूरिपट्टे श्री श्री श्रीदेवसुंद-  
रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना गांफवास्तव्यः ।

( २१८ )

सं० १४८१ पौषव० ९ शुके श्रीश्रीमालजातीय  
व्य० विरुआ भा० भरमादे सु० बृहथाकेन मातृ-  
पितृश्रेयसे श्रीसंभवर्विवं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे  
श्रीपद्मानंदसूरिभिः ।



( १२८ )

( २१९ )

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ बुधे श्री श्री  
मालश्रातीय व्य० मेहण भा० मालहणदे पु० मांड  
णेन पुत्र धीरा सहितेनात्मभेयोर्ध श्रीसुमतिमाध  
र्विष का०, प्र० बृहद्गण्डे सत्यपुरीय श्रीपार्श्वचंद्र  
सुरिमिः श्रीः ।

( २२० )

सं० १५१३ वर्षे माघ सुदि ३ शुके श्रीठपकेषा  
श्रातीय परब्रह्मगोत्रे व्य० सिवा पुत्र वेवाकेन भा०  
बेबलसहितेन मातृससारदे पुण्यार्थ श्रीपद्मप्रमर्षिष  
कारित श्रीबृहद्गण्डे श्रीसर्वदेवसुरिमिः प्रतिष्ठितं  
श्रीरस्तु ।

( २२१ )

सं० १५१० वर्षे माघ सुदि १० बुधे श्रीश्री  
मालश्रातीय पितृ भामद मातृ श्रीलणदेवि भेयोर्ध  
सुत सरवण काळा समघर पत्नीः श्रीचंद्रप्रमस्वामि  
र्विष कारित पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्मसुरीणासुप  
बेद्येन प्रतिष्ठितं विधिना ब्रह्मणाम्नामे ।

( २२२ )

सं० १५१५ ज्येष्ठ बुदि ९ वा० शुभिमहीमेद  
श्रीपार्श्वनायर्विष कारितं [ प्रतिष्ठितं ]

( १२९ )

( २२३ )

सं० १७८५ मार्गशिर सुदि ५ श्रीश्रीमालजा-  
तीय चोरा जसराजेन पुन्यार्थ श्रीधर्मनाथस्य विंयं  
कारापितं । प्रतिष्ठितं कडुआमतीगच्छे साहाजी  
श्रीलाघा थोभणजी ।

( २२४ )

सं० १४११ ज्येष्ठ व० ९ शनौ श्रीमालजातीय  
महं सायाकेन स्वगोत्रजा वैरुड्यामूर्तिः का०, ब्रह्मा-  
णगच्छे श्रीलब्धिसागरसूरिभिः ।

( २२५ )

सं० १६१२ वर्षे पौषवदि १ गुरौ राजाधिराज  
श्रीअश्वसेन माता श्रीवामादेवी तत्पुत्र श्रीश्रीपार्थना-  
थस्य विंयं श्रीधारापद्रवास्तव्य लघुशाखायां श्रीमा-  
लजातीय महं. तोला महं. भोला कर्मक्षयार्थं कारितं ।

( २२६ )

श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे श्रीसागरचंद्रसूरिपट्टे श्रीसो-  
मचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० ( धातुचतुर्मुखः )

( २२७ )

सं० ११५९ सिवा का० पार्श्वनाथविंयं प्र० श्री-  
जयसेनसूरिभिः ।

( १२० )

देशाईसेरीषिमलनायचैत्ये धातुमूर्त्तय —

( २२८ )

सं० १५०६ वर्षे वैशाखसुदि ८ रघौ श्रीश्रीमा  
लक्ष्मीय वृष० मंडण सुत वरदा मा० वाङ्म-  
देव्या आत्मभेषसे श्रीचंद्रमस्तामिचतुर्विंशतिपङ्क  
विंशं का०, प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मशे  
खरदुरिभिः पारापद्रवास्तव्यः ।

( २२९ )

सं० १५१२ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ रघौ श्रीपारापद्र  
गच्छे श्रीमालक्ष्मीय मह० गोगन मा० नृञ्जी सुत  
रसाक्षिण मा० सुहृद्वे सायर भा० नाईदेव्या स्वपि  
तृमातृ आत्मभेषोर्य श्रीवपिमापचतुर्विंशतिपङ्क  
का०, प्र० श्रीविजयसिंहदुरिभिर्बडसीवास्तव्यः ।

( २३० )

स० १४८५ वर्षे माघसुदि १ शनौ श्रीश्रीमा  
लक्षा वृष० सुहृद्वसी मा० साजणदे अपरा मा०  
सिरिया सु० लालाकेन स्वपिञ्चोस्तया प्रा० श्रीदा  
भेषसे श्रीशांतिमापचतुर्विंशतिपङ्क का० प्र०  
पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरदुरिभिः ।

( १३१ )

( २३१ )

सं० १५८४ वर्षे माघवदि ११ रवौ श्रीराजावि-  
राज श्रीसुमित्रराजा मातापद्मावती ननुग्र श्री श्री  
श्री श्री श्रीमुनिव्रतस्वामिर्विवं कारितं सं० कहरै  
सुत वीहड सुत राजाराम कर्मक्षयार्थं त्रेयसे श्रीः ।

( २३२ )

सं० १६११ वर्षे वैशाखसुदि १० बुधे श्रीशक्ति-  
नाथस्य विवं सेवक धूडाहंसराजेन कारितं कर्मक्ष-  
यार्थं श्रीधिराद्रवास्तव्य श्रीश्रीमालीष वृद्धशास्त्रायां ।

( २३३ )

सं० १५६८ वर्षे माघसुदि ५ शुके श्रीत्रिआण-  
गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० जेसा भा० सलमृ सुन  
वासाकेन पितृमातृश्रेयोर्धमात्मश्रेयसे श्रीचंद्रप्रम-  
स्वामिर्विवं कारितं प्र० मुनिचंद्रसूरिभिर्विद्वान्जवा०

( २३४ )

सं० १५६९ ज्येष्ठसुदि ५ सोमे श्रीपार्श्वनाथविं  
सेवककालेन कारितं ।

( २३५ )

सं० १५१८ वर्षे फागुणसुदि ९ सोमे उपके

✓ ( १३२ )

ज्ञातीय सा० मवा भा० नामलदे सुत देवा भा०  
माडदेव्या आत्मभेयोर्ष श्रीसभमनाथपंचतीर्था का  
रापिता भावहारगण्ठे प्रतिष्ठित न श्रीभाषदेव  
सुरिभिः ।

( २३६ )

स० १५३२ वर्षे उपेष्ठवदि ३ रवौ पट्टलसामत  
भा० कमी सुत वाठाकेन भा० वीपीदे रतनादे प्रा०  
हीरु सुत ठाकुर प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्रीविमलनाथ  
र्षिष कारित प्रतिष्ठित तपागण्ठनायक श्री श्री  
श्रीलक्ष्मीसागरसुरिभिः ।

( २३७ )

स० १४८८ वर्षे कार्तिक सु० ३ शुभे अचलगण्ठे  
श्रीजयकीर्तिसुरेरुपदेशेन नागरज्ञातीय परी० चांवा  
[केन] भा० आल्हणदे सुत हापाभेयसे मबतु  
श्रीअभिमदनर्षिष कारापित प्र० श्रीसुरिभिः ।

( २३८ )

सं० १४९० कार्तिकवदि २ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा  
तीय ष्य वासरे भा० रामलदे सुत पनराजेन  
तेजपालभ्रातृभेयोर्ष श्रीश्रीतलनाथर्षिष कारित प्रति  
ष्ठित पिप्पलगण्ठे अभिषीया श्रीधर्मशेखरसुरिभिः  
धिरपत्रे ।

( १३३ )

( २३९ )

सं० १५२० वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे श्रीश्रीवंशे  
ठ० कान्हा सुत सारंग भा० हरखू पुत्र महीराज  
सुश्रावकेण भा० कुंअरि भ्राता सिवा सिंहा चउथा  
पु० जेठा सहितेन पितृमातृश्रेयोर्थ अंचलगच्छे श्री-  
जयकेशरिसूरीणा मुपदेशेन श्रीवासुपूज्यविंशं कारितं  
प्रतिष्ठितं संघेन ।

( २४० )

सं० १५२५ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा०  
व्य० सलखा भा० प्रीमी सुत व्य० सिंहाकेन भा०  
लीलू सुत महीराज भोजादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ  
श्रीकुंयुनाथविंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीब्रह्माणगच्छे  
श्रीवीरसूरिभिर्वहरवाडावास्तव्यः ।

( २४१ )

सं० १५८१ वर्षे माघवदि १० शुके श्रीश्रीमा-  
लज्ञा० वृद्धशाखायां सीनारवास्तव्य श्रे० लाला भा०  
लीलादे सुत वत्सा भा० वीजलदेव्या सुत घना हंसा  
कुटुंबयुतेन श्रीनिगमप्रभावक श्रीआनंदसूरिभिः  
श्रीगांतिनाथविंशं प्रतिष्ठितं ।

( २४२ )

सं० १५२३ वर्षे वैशाखसुदि १३ प्राग्वाटज्ञातीय

( १२४ )

व्य० भा० मेहा० खांपु सुत महिमाकेन भा० मरघु  
सुत लटकण घ्रातु नरवधावि कुदुबयुसेन स्वभ्रेयोर्ध  
भीवासुपूर्यर्षिच कारित प्रतिष्ठित तपागच्छे भी-  
लक्ष्मीसागरसुरिभिर्मृशिगपुरवास्ताव्याः ।

( २४३ )

सं० १५ ६ भावसुदि ६ रवौ भीम्रघ्माणगच्छे  
भीभीमालज्ञा व्य० वेधा सुत वेसल भा० मत्ति  
गल्लेव्या आत्मभेयसे जीवितस्वामि-भीसुमति  
नाथर्षिच का०, प्र० भीपञ्चनसुरिमिः ।

( २४४ )

स० १४९३ षष्ठे फा० सु० १० शुके भीभीमा  
लज्ञा अ० आल्हणसी भा० लादी तपोः पुत्रा अ०  
मूमवेन मातृपितृभयोर्ध भीशीतलनाथर्षिच का०,  
प्रति० भीसुरिमिः ।

( २४५ )

सं० १४९२ ज्येष्ठसुदि ५ शुके भीभीमालज्ञा  
तीय पितृ लाञ्छण मातृलाञ्छणवे पितृव्य सिद्धक  
अयेसे पुत्र पीपाकेन भीधिमलमाथर्षिच का , प्रति  
ष्ठित पिप्पलगच्छे भीमुनिप्रभसुरिमिः ।

( १३५ )

( २४६ )

सं० १५६४ वर्षे वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमालजातीय व्य० विरुआ भा० सिंगारदे सुत वीरम भा० हीमादे पुत्र वेलाकेन पितृमातृश्रेयोर्थ श्रीवासुपूज्यपंचतीर्थी कारापिता श्रीपूर्णिमापक्षीय श्रीरत्नशेखरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठिता ।

( २४७ )

सं १५८१ वर्षे माघसुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालजातीय महं० रत्नासुत . भा० पातमदेव्या कुटुंबीश्रेयसे श्रीमुनेसुव्रतस्वामिपंचतीर्थीविंबं कारापितं, आगमगच्छे श्रीसोमरत्नसूरिगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितं आदिआणवास्तव्यः ।

( २४८ )

सं० १५०७ वर्षे वैशाखसुदि ११ सोमे श्रीश्रीमालजातीय व्य० जयता भा० चामूणादे सुत आल्हणकेन पितृमातृनिमित्तं स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यविंबं का०, प्र० पिष्पलगच्छे त्रिभवीया भ० श्रीचंद्रप्रभसूरिभिः ।

( २४९ )

सं० १३९२ वैशाखव० ७ शुके श्रे० वयरसिंह



( १३६ )

भा० विजयादे....पित्रोः श्रेयोर्षं श्रीपार्ष्णिप्र० का०,  
प्र० श्रीवेद्येन्द्रसूरिपदे श्रीविजयचन्द्रसूरिभिः श्रीमास  
ज्ञातीयः ।

( २५० )

म० १६८१ व० यु० नानजीत्केन श्रीशांतिना  
नाथर्षिष कारित ।

( २५१ )

स १६२४ फागुणसुदि ४ भौमदिने श्रीसुमति  
नाथर्षिषं का० प्रसि० श्रीसूरिभिः ।

सुनारसेरीपार्श्वनाथशैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २५२ )

सं० १५०८ वर्षे वैशाखवदि ४ सोमे श्रीश्रीमास  
ज्ञातीय से० मयणा[केन] भा० दहीकु सुत श्रे०  
लाला हेमा वृषा कुटुम्बयुतेन पितृमातृभेषसे श्री  
शांतिनाथर्षिष कारित मिदांतीय श्रीसोमचन्द्र  
सूरिभिः प्रतिष्ठितं शुभ कस्याणमस्तु ।

( २५३ )

सं० १६१७ वर्षे पौषवदि १ गुरौ राधाधिराज  
श्रीअश्वसेन राणीबामादेवी तयोः पुत्र श्री श्री श्री

( १३७ )

पार्श्वनाथस्य विंशं कारितं श्रीधिराद्रयात्मन्य श्रीश्री-  
मालजातीय श्रे० कुरा धींगा पुत्राम्यां ।

आमलीसेरी सुपार्श्वचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २५४ )

सं० १५०८ ज्येष्ठ सु० ७ बुधे श्रीश्रीमालवंशे  
सांडलगोत्रे सा० हापा भा० वीरा पु० सा० पोपट  
सुश्रावकेण भा० मालहणदे दोहित्रौ लाग्वा मन्गवा  
सहितेन श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणामुप-  
देशेन पुत्रभलाश्रेयसे श्रीवासुपूज्यविंशं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ।

( २५५ )

सं० १४९९ वर्षे वैशाखवदि ४ गुरौ उपकेशजा०  
पितृमाला मातृमोखलदे श्रेयोर्थं सुत कीकाकेन  
श्रीनमिनाथविंशं का०, प्रति० भावडारगच्छे भ०  
वीरसूरिभिः पवित्रे खाटणगोत्रे शुभं भूयात् ।

( २५६ )

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० सोमे प्रा० शा०  
व्य० मोकलेन भा० दूयड़ी सुत हीरा व्य० सहज  
सुत ऊतलसहितेनात्मश्रेयसे श्रीश्रेयांसविंशं का०,  
प्र० श्रीजीरापल्लीगच्छे श्रीउदयचंद्रसूरिभिः ।

( १३८ )

( २५७ )

स० १६८३ वर्षे वैशाख्यमित्त ७ गुरौ राजधन्य  
पुरषासितः श्रीश्रीमालज्ञातीय मा० हरदासेन भा०  
हीरादे युतेन श्रीशीतलनाथपिय का० प्रतिष्ठितं ।

( २५८ )

स० १२६७ वर्षे क्येष्ठसुदि ५ पुष्ये मूलसंघ सा०  
हीरा भा० हीराद ।

( २५९ )

स० १२०० उहूलसूतया दोलिकया चतुर्विंशति  
पद्मकोप कारितः शुभ भवतु ।

राशियासेरी अभिनदनचैत्ये चातुमूर्त्तयः—

( २६० )

स० १५५३ वर्षे आषाढसुदि ९ शुक्ल प्राग्बाह  
ज्ञा० वृद्धशाम्बायां सं० संगे भा० हृषू सुत सं०  
अमा[किम] भा० सीखाई पु० श्रीमा सिंधु लम्बमण  
अलबा चमादियुतेन स्वभेयसे श्रीसुनिसुव्रतस्वामि  
विंश का०, पूर्णिमापक्षे श्रीमपल्लीय भ० श्रीचारित्र  
चंद्रसुरिपदे भ० सुनिचंद्रसुरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं  
श्रीपत्तनबास्तरूपः ।

( १३९ )

( २६१ )

सं० १५१९ माघसुदि ५ सोमे श्रीश्रीमालजातीय  
गांधिक हापा भार्या हमीरदे सुत जागाकेन भा०  
जमनादे पुत्र वेला जगम मादा वेदा एतैः सहितेन  
पितृमातृभ्रातृमांडणश्रेयोर्थ श्रीधर्मनाथचतुर्विंशति-  
पट्टं कारितं पूर्णिमापक्षे प्रधानभट्टारक श्रीजयसिंह-  
सूरिपट्टे श्रीजयप्रभसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं  
धिराद्रवास्तव्यः श्रीः ।

मोदीसेरी विमलनाथचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २६२ )

सं० १५१५ वर्षे फागुणसुदि ४ शनौ श्रीश्री-  
मालजा० पितृ रतना मातृ रतनादे सुत सा० गागच  
भा० ललितादे सु० गोवल भा० रूपिणीश्रेयोर्थ  
भ्रातृसं० हूंगर भा० झांझु सुत गोपासहितेन  
भोजविजयाभ्यां श्रीनमिनाथमुख्यश्वतुर्विंशतिपट्टः  
कारितः पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरिपट्टे श्रीसाधु-  
सुंदरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीसविनगरे ।

( २६३ )

सं० १५१९ वर्षे मार्गसुदि ५ शुके श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्य० हीमाला भा० हीमादे सुत वनाकेन

( १४० )

भार्या चांपू सुत पर्वत नरवर नाइक माल्हा जागा  
छासा सहितेन स्वभेयसे अंचलगच्छेशश्रीजयकेस  
रिसुरीणासुप० श्रीचंद्रप्रभस्यामिर्षियं का० प्रति  
ष्ठित च ।

( २६४ )

स० १५२० पौषवदि ५ शुक्ले श्रीमूखसंधे सर  
स्वतीगच्छे भ० सकलकीर्ति तत्पदे भ० विमलेंद्र  
कीर्तिमिः श्रीभादिनापर्यियं प्र० जो० काहा भा०  
झरू सु माणिक भा० बारू सु० हरवासेन का० ।

( २६५ )

सं १६६१ वर्षे फागुणवदि २ शुक्ले श्रीश्रीरुद्र  
आमति निममयाई परावषास्तम्प मुहतादे श्रीसुम-  
तिमापर्यिय कारितं ।

( २६६ )

स० १६६२ वर्षे फागुणवदि २ शुक्ले उवीवतगृही  
भा० हरणादे सुत बापाकेन श्रीअभिनवमर्षियं  
कारितं ।

( २६७ )

स० १५८ वैशाखवदि ५ श्रीयागवाट साह वृदा  
[ केन ] भार्या जाणी पुत्र जपवंतसहितेन स्वभेयमे

श्रीश्रेयांसनाथविंशं का०, प्र० पूर्णिमापक्षे भट्टारक  
श्रीजिनहर्षसूरीणामुपदेशेन वेलांगरी वास्तव्यः श्रीः

सुतारसेरी शांतिनाथचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २६८ )

सं० १४८३ वर्षे ज्येष्ठसुदि ९ भौमे श्रीश्रीमा-  
लज्ञातीय व्य० महीपाल भा० मीलनदे सुत हरि-  
भ्रम पौत्र चांपा व्य० पाल्हा सिंधु नरवदकेन पितृ-  
मातृसुतश्रेयोर्थ श्रीआदिनाथप्रमुखचतुर्विंशतिविंशं  
कारापितं प्र० धारापद्मगच्छे श्रीशांतिसूरिभिः ।

( २६९ )

सं० १५१८ वर्षे फागुणवदि १ सोमे श्रीउकेश-  
ज्ञातीय नाहरगोत्रे व्य० कुशलेन भा० कील्हणदे पुत्र  
तिहुणा महणा पोमा डामर सहितेन पितृपुण्यार्थ  
आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथचतुर्विंशतिपदं कारा-  
पितं धर्मघोषगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीपद्मानंदसूरिभिः ।

( २७० )

सं० १५८७ वर्षे वैशाखवदि ७ सोमे श्रीश्री-  
मालज्ञातीय श्रेष्ठि साइआ सुत श्रे० सवा[केन]  
भा० वानू पुत्र लटकण भा० लाखणदे समस्तकुटुंब-

( १४६ )

युतेन श्रीशांतिनाथर्विंबं कारापित प्रतिष्ठित श्री  
सूरिभिः काकरवास्तव्यः ।

( २०१ )

सं० १६१७ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ सोमे उत्सवास्त-  
ज्ञातीय व्य० रायमल भार्या श्रीबाई सुत हीरा मा०  
जीबाई सु० सिंघजीस्केन श्रीशांतिनाथर्विंबं कारा-  
पित तपागण्डे श्रीविजयदानसूरिभिः प्रतिष्ठित ।

( २०२ )

सं० १५१९ वर्षे मार्गसुदि ६ शनी श्रीप्राग्वाढ  
वशे छत्रसताने सं० भरसी भा० माई पु० सं०  
गोपासुभाषकेण मा० सुखेसिरि पुत्र देवदास सिंघ  
दामसहितेन स्वभेयसे लखगण्डाधिराज श्रीजय  
केशरिसूरीणासुपवेशेन श्रीसंभवनाथर्विंबं कारित  
प्रतिष्ठित श्रीसंभेन रत्नपुरवास्तव्यः ।

( २०३ )

सं० १४९४ वर्षे माघसुदि ६ सोमे श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय व्य० साहबण भार्या सोनखदे पुत्र अग्राम  
सिंहेन पितृव्य छाडाभेयसे पूर्णिमापक्षीय श्रीविज  
यप्रभसूरीणासुपवेशेन श्रीकुपुनाथर्विंबं कारित  
प्रतिष्ठित श्रीसंभेन ।

# श्रीजीरावलीतीर्थचैत्यदेवकुलिका-

देवकुलिकासंख्या २

( २७४ )

स्वस्तिश्रीसंवत् १४८१ वर्षे वैशाखसुदि ३ बृहत्तपापक्षे भद्रा० श्रीरत्नाकरसूरीणामनुक्रमेण श्रीअभयदेवसूरीणां पट्टे श्रीजयतिलकसूरीश्वरपट्टावतंस भद्रा० श्रीरत्नसिंहसूरीणामुपदेशेन श्रीवीसलनगरवास्तव्य प्राग्वाटान्वयमंडन श्रे० खेतसिंह नंदन श्रे० देहल ( देवल ) सिंह पुत्र श्रे० ग्वा तस्य भार्या सं० पिंगलदेव्यास्तयोः सुताः सं० सादा सं० हादा सं० मादा सं० लाग्वा सं० सिधाभिधैरैः कारिता ।

देवकुलिकासंख्या ३

( २७५ )

स्वस्तिश्रीसंवत् १४८१ वैशाखसुदि ३ बृहत्तपापक्षे भद्रा० श्रीरत्नाकरसूरीणामनुक्रमेण भद्रा० श्रीजयतिलकसूरीपट्टावतंस गच्छनायक श्रीरत्नसिंहसूरीणामुपदेशेन वीसलनगरवास्तव्य प्राग्वाटान्वयमंडन श्रे० खेतसिंह नंदन श्रे० देहलसिंह पुत्र



( १४४ )

श्वोत्था तस्य भा० पिङ्गलदेव्यास्तयोः सुताः स सादा  
सं० मादा स० लासा स० सिषामिधैरेतैः स्वभ्रंयसे  
ऽथ तीर्थे श्रीदेवकुलिका ग्रयं कारितं शुभं भवतु  
शुभमइत्युपरिभीपार्श्वेनाथ प्रणमति ।

देवकुलिकासख्या ४

( २०६ )

स्वस्तिश्री सं १४८१ वर्षे वैशाखसुदि ३ दिने  
बृहस्पतिगण्डे महा० श्रीजयतिष्ठकसूरिपद्मराजस  
गच्छनायक महा श्रीरत्नसिंहसूरीणामुपदेशेन श्रीस  
लनगरबास्तव्य प्राग्वाटशातीय भे० खेतसिंहनदन  
भे० श्वोत्था तस्य भार्या स० पिङ्गलदेव्यास्तयोः सुताः  
स० सादा स० हादा स० मादा स० लासा स०  
सिषामिधैरेतैः स्वभ्रंयसेऽथ तीर्थे श्रीदेवकुलिका  
कारिता शुभं ।

देवकुलिकासख्या ६

( २०७ )

संवत् १४८० वर्षे पौषसुदि २ रविविने श्रीज  
यतिष्ठकसूरिपद्मराजगच्छनायक श्रीजय  
तीर्थिसूरीणामुपदेशेन श्रीपुंगलबासित प्राग्वाटशा  
तीय शा भाणा पुत्र शा० जामद भार्या सयो

( १४५ )

देवकुलिकासंख्या ७

( २७८ )

सं० १४८७ वर्षे पौषसुदि २ रविदिने श्रीतपा-  
गच्छे श्रीदेवसूरिपट्टोघर श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनि-  
सुंदरसूरि श्रीजयसुंदरसूरि श्रीजिनचंद्रसूरेरूपदेशेन  
श्रीपत्तनवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय सा० लाला सुत  
सा० नाथू सा० मेघा सुत रूपचंद भीमाखीमाभिः  
स्वश्रेयोर्थं कारापिता ।

देवकुलिकासंख्या ८

( २७९ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवदि ७ कृष्णपक्षे गुरौ  
दिने तपागच्छनायक श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचं-  
द्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरेरूपदेशेन कलवर्गवा० उस्-  
वालज्ञातीय सा० घणसीसंताने सा० जयता भार्या  
तिलकू सुत सं० मोखसी श्रीजीराउलाभुवने देवकु-  
लिका कारिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् श्रीः॥

देवकुलिकासंख्या ९

( २८० )

सं० १४८३ भाद्रवादि ७ गुरौ कृष्णपक्षे श्री-

तपागण्डनायक श्रीदेवसुवरसूरिपदे श्रीसोमसुवर  
 सूरि श्रीशुभिसुवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीसुबमसुवर  
 सूरेरूपवेशेन कलबर्माभगरे श्रीओसबालशातीय  
 सा० षण्णसीसंताने सा० जयता भार्या तिलक सुत  
 सं० समरसी सं० मोक्षसी श्रीजीराठलासुबने देवकु  
 लिका कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्ष्णापप्रसादात् ।

देवकुलिकासंख्या १०

( २८१ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपदि ७ कृष्णपक्षे शुक्रदिने  
 श्रीतपागण्डे नायक श्रीदेवसुवरसूरिपदे श्रीसोम  
 सुवरसूरि श्रीशुभिसुवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीसुब-  
 मसुवरसूरेरूपवेशेन श्रीकलबर्माभगरे श्रीठसबाल  
 शातीय सा० षण्णसीसंताने सा० जयता भा० तिलक  
 सुत सं० समरसी सं० मोक्षसी श्रीजीराठलासुबने  
 देवकुलिका कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्ष्णाप  
 प्रसादात् ।

देवकुलिकासंख्या ११

( २८२ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपदकृष्णपक्षे ७ शुक्रे तपा  
 गण्डनायक श्रीदेवसुवरसूरिपदे श्रीसोमसुवरसूरि

श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरे-  
रूपदेशेन श्रीकलवर्गानगरे कोठारी झाड़सामंत-  
संताने को० नरपति भा० देमाई पुत्र सं० तुकड़े  
पासदे पूनसी मूला ( एतैः ) श्रीओसवालज्ञातीय  
कटारिया श्रीराउलासुवने श्रीदेवकुलिका कारापिना  
शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् ।

कटारियागोत्रवरं मदीयं, ताउंपिता मे जननी दंमाई ।

श्रीसोमसुंदरगुरुगुरुवंधदेवा, श्रीछीलैजमेडतामात्रशाले (?) ॥१॥

देवकुलिकासंख्या १२

( २८३ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपद कृष्णपक्षे ७ गुरौ श्री-  
तपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदर-  
सूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदर-  
सूरेरूपदेशेन श्रीकलवर्गानगरे श्रीउसवालज्ञातीय  
चरहडियागोत्रे झांझासंताने सा० उदयन वा० छीतू  
सुत सं० आसपालेन जीराउलासुवने देवकुलिका  
कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् ।

देवकुलिकासंख्या १३

( २८४ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवकृष्णपक्षे ७ गुरौ श्री-

१ यह शंकास्पद है । २ यह वाक्यविन्यास अशुद्ध है ।

( १४८ ) ✓

तपागच्छनायक श्रीवेबसुवरसूरिपदे श्रीसोमसुंवर-  
सूरि श्रीमुनिसुंवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीसुबन  
सुंवरसूरेरुपवेशेन श्रीकलवधामगरे माहरगोत्रे उस  
बाळशातीप सा० बीगासताने सा० उवयसी भा०  
शामखे सुत सा० पद्मसी श्रीजीराठलासुबने देव  
कुलिका कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादेन ।  
देवकुलिकासंख्या १४

✓ ( १८५ )

स० १४८१ वर्षे माद्रपदकृष्णपक्षे ७ गुरौ श्री  
तपागच्छनायक श्रीवेबसुवरसूरिपदे श्रीसोमसुंवर-  
सूरि श्रीमुनिसुंवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीसुबन  
सुंवरसूरेरुपवेशेन कलवधामगरे ठसवालशातीप  
साबलगोत्र सा० घणसीसताने सं० माला भा सं०  
पूनाई पुत्र जगसी म० खोळसी भा० बा० हीरू सुत  
स० कमलसिंहेन स्वमाता कस्तूरीभेपोर्य श्रीपार्श्व-  
नाथप्रसादात् श्रीजीराठलासुबने देवकुलिका  
कारापिता ।

देवकुलिकासंख्या १५

( १८६ )

स० १४८१ वर्षे माद्रपदकृष्णपक्षे ७ शुक्रदिने श्री  
तपागच्छनायक श्रीवेबसुंवरसूरिपदे श्रीसोमसुंवर

सूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवन-  
सुंदरसूरैरुपदेशेन श्रीकलवर्ग्रानगरे उसवालज्ञातीय  
मल्लुसीसंताने सं० रतना भार्या बा० वीरू सुत  
सं० आमलसिंहेन स्वपुत्र सं० गुणराज सं० हंस-  
राजसहितेन श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् श्रीजीराउला-  
भुवने देवकुलिका कारापिता शुभं भवतु ।

देवकुलिकासंख्या १७

( २८७ )

सं० १४७४ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे ५ तनी-  
वासरे खरतरपक्षे मं० लूणासंताने मं० दूला हापल  
संताने मं० मूला पुत्र भीमा हीरू चालहण. ..मं०  
हीराभिः ..।

देवकुलिकासंख्या १८

( २८८ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपदकृष्णपक्षे ७ गुरुदिने  
श्रीकृष्णविगच्छतपापक्षे श्रीपुण्यप्रभसूरिपट्टे गच्छ-  
नायक श्रीजयसिंहसूरैरुपदेशेन छामुकीगोत्रे चंद्र-  
पुरीय पद्मसिंह पुत्र चंद्रसिंह पुत्र भाणसिंह पुत्र  
पूनसिंह भा० पूनसिरि सा० घणसी सं० वावीथाई  
पुत्र सं० धनराजेन उएसवंशीयेन श्रीजीराउलाभुवने  
चतुष्किकाशिखरं कारापितं शुभं भवतु श्रीः ।

( १५० )

देवकुलिकासख्या १९

( १८९ )

स० १४८६ वर्षे भाद्रपामदि ७ शुक्रदिने श्रीतपा  
गच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपदे श्रीसोमसुंदरसूरि  
श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीसुषनसुंदरसूरे  
रूपदेशेन कलषप्रभास्तस्य सोमीहरगोत्रे उसवाल  
ज्ञातीय सं श्वेतमी पुत्र सं० क्षीमा स० नहणसी पुत्र  
स० करणसी स० पासवीर भगिनी, भा० तिलक  
प्रमृतिभिः श्रीजीराठलामुचने चतुष्टिककाशिखरं  
कारापित शुभं भवतु ।

देवकुलिकासख्या २०

( १९ )

सवत् १४८६ वर्षे भाद्रपामदि ७ शुक्रदिने श्री  
पमषोपगच्छे श्रीमलयचंद्रसूरिपदे श्रीविजयचंद्र  
सूरेरूपदेशेन माहरगोत्रे उपसवधो सा० आल्हा पुत्र  
आल्हा भार्या मणिबाई पुत्र स० रत्नसिंह पुत्र  
पासराज कलषप्रभास्तस्येन श्रीजीराठलामुचने चतु-  
ष्टिककाशिखर कारापित शुभं भवतु श्रीपार्ष्णाथ  
प्रसावात् ।

( १५१ ) ✓

देवकुलिकासंख्या २१

( २९१ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवावदि ७ गुरुदिने श्री-  
कृष्णर्षिगच्छे तपापक्षे श्रीपुण्यप्रभसूरिपट्टे गच्छ-  
नायक श्रीजयसिंहसूररूपदेशेन कलवर्गावास्तव्य  
गांधीगोत्रे उपकेशवंशे सा० ढाकल पुत्र सं० लोहिग  
पुत्र सा० आंवा भा० पोमाई पुत्र सा० अजेसी  
वींधव सं० आसुना श्रीजीराउलाभुवने चतुष्किका-  
शिखरं कारापितं ।

देवकुलिकासंख्या २२

( २९२अ ) ✓

सं० १४२४ वर्षे वैशाखवदि ३ गुरौ कलवर्गा-  
वास्तव्योपकेशज्ञातीय सा० धवकर्मणेन भा० कर्मा-  
देवी ग्वीमादेवी सहितेन ग्वीमदेवीश्रेयसे श्रीजीरा-  
उलीपार्श्वनाथदेवकुलिका कारापिता श्रीवृहद्गच्छेश  
श्रीदिन्नविजयसूररूपदेशेन ।

( २९२ब )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपदवदि ७ गुरौ श्रीमल्ल-  
धारीगच्छे श्रीमतिसागरसूरिपट्टे श्रीविद्यासागरसूरे-  
रूपदेशेन कलवर्गावास्तव्य गांधीगोत्रे सा० दहल



पुत्र मा० पोषा पुत्र सं० संसुखा मा० सघविणिराजू  
पुत्र तुकदे सं० सहदेवाभ्यां उसवालज्ञातीयान्यां  
भीष्मीराठछामुवने चतुष्टिका कारापिता शुभं भवतु।  
देवकुलिकासख्या २३

( २०३ )

सं० १४८३ भाद्रवावदि ७ तपागच्छनापक  
भीषेचसुवरसुरिपदे भीमोमसुवरसुरि भीममिसुवर  
सुरि भीजयचद्रसुरि भीम्वनसुवरसुरिगुरुरूपवेशेन  
कलवर्मानगरे भीमालज्ञातीय ठ० इंगर मा० चंपाइदे  
पुत्र मोम्बसी रतनसीन्यां भीष्मीराठछामुवने चतुष्टि-  
काशिलर कारापितं शुभं भवतु ।

देवकुलिकासख्या २८

( २९४ )

सं० १४८३ वर्षे वैशाखवदि १३ गुरो ओसबंधो  
दुग्धेशान्ये शंभलगच्छे भीजयकीर्तिसुरेरुपवेशेन  
शाह सम्बसी सा० भीमल मा० वेबल सा० सारंग  
सा झांझा भार्या चार्ड मेचू सा० पुंजा मजाविमि।  
देवकुलिका कारापिता ।

देवकुलिकासख्या २९

( २९५ )

सं० १४८३ वैशाखवदि १३ गुरो उसबंधो

(१५३)

दुग्धेशाखे अंचलगच्छे श्रीजयकीर्तिसूररूपदेशेन  
सा० लखमसी सा० भीमल सा० देवल सा० सारंग  
सुत सा० डोसा भार्या लखमादे सा० चापा सा०  
हूंगर सा० भोग्वा देरी करावी सही ।

(२९५व)

सं० १४८३ प्रथमवैशाखवदि १३ गुरौ श्रीअं-  
चलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पट्टोद्धरणश्रीजयकीर्ति-  
सूरीश्वरगुरूपदेशेन सा० सारंग भा० प्रतापदे पुत्र  
डोसी भा० लखमादे सा० चांपा सा० हूंगर, सारंग  
सुत भार्या भीखी भा० कौतिकदे पितृव्य पूजा  
देहरी श्रीदेवगुरुप्रसादात्कारापितं ।

देवकुलिकासंख्या ३०

(२९६)

संवत् १४८३ प्रथमवैशाखवदि १३ गुरौ अंचल-  
गच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पट्टोद्धरणजगच्चूडामणि  
श्रीजयकीर्तिसूरीश्वरसुगुरूपदेशेन पट्टणवास्तव्य  
ओसवालज्ञातीय मीठडिया सा० संग्राम सुत सा०  
सलखण सुत सा० तेजा भार्या तेजलदे तयोः पुत्राः  
सा० डीडा, सा० खीमा, सा० मूरा, सा० काला,  
सा० गांगा, सा० डीडा सुत, सा० नागराज, काला

( १५४ ) ✓

सुत सा० पासा, सा० जीवराज, सा० जिम  
वास, सा० तेजा द्वितीय भ्राता नरसिंह मा०  
फौतिकदे तयोः पुत्रौ सा० पासदत्त सा० देवदत्ता  
भ्यां श्रीजीराठसाध्वर्षनाथस्य चैत्ये देहरीघ्नप  
कारापिता श्रीदेवगुरुप्रसादात्प्रवर्षमानमद्र मांग  
लिक भूयात् ।

देवकुलिकासक्या ३१

( २९७ )

सं० १४८३ वर्षे प्रथमवैशाखवदि १३ पुरौ  
श्रीभबलगाण्डे श्रीमेरुगसूरीणां पद्मोदरणाश्रय  
कीर्तिसूरीश्वरसुगुरुप्रदेशेन पत्तनवास्तव्योसबाह  
शातीय मीठडिया सा० सग्राम सुत सा० सलक्षण  
सुत सा० तेजा भा० तेजलदे तयोः पुत्राः सा० डीडा  
सा० सीमा सा० भूरा सा० कासा सा० गांगा, सा  
डीडा सुत सा मागराज सा० कासा सुत सा०  
पासा सा० जीवराज सा० जिमवास सा तेजा  
द्वितीयभ्राता सा० नरसिंह भार्या कडसिगदे तयोः  
पुत्रौ सा० पासदत्त सा० देवदत्ताभ्यां श्रीजीराठ  
साध्वर्षनाथस्य चैत्ये देहरी ३ कारापिता श्रीदेव  
गुरुप्रसादात्प्रवर्षमानमद्र मांगलिक भूयात् ।

## देवकुलिकासंख्या ३२

( २९८ )

सं० १४८३ वर्षे प्रथमवैशाखवदि १३ गुणै  
 श्रीअंचलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पट्टोद्धरणश्रीजय-  
 कीर्तिसूरीश्वरसुगुरूपदेशेन पत्तनवास्तव्योसवाल-  
 ज्ञातीय मीठडिया सा० संग्राम सुत सा० सलग्वण-  
 सुत सा० तेजा भार्या तेजलदे तयोः पुत्राः डीडा  
 सा० खीमा सा० भूरा सा० काला सा० गांगा सा०  
 डीडा सुत सा० नागराज सा० काला सुत सा०  
 पासा सा० जीवराज सा० जिणदास सा० तेजा  
 द्वितीयभ्राता सा० नरसिंह भा० कडतिगट्टे तयोः  
 पुत्राभ्यां सा० पासदत्त सा० देवदत्ताभ्यां श्रीजी-  
 राउलापार्श्वनाथस्य चैत्ये देहरी ३ कारापिता  
 श्रीदेवगुरुप्रसादात्प्रवर्धमानभद्रं मांगलिकं भूयात् ।  
 सा० डीडा सुत सा० नागराज भार्या नारंगीदेव्या  
 आत्मश्रेयसे देहरी कारापिता ।

## देवकुलिकासंख्या ३३

( २९९ )

संवत् १४८३ वर्षे श्रीअंचलगच्छे श्रीमेरुतुंग-  
 सूरीणां पट्टे गच्छाधीश्वरश्रीजयकीर्तिसूरीश्वरसुगुरु-

( १५१ )

पदेशेन मीठडिया सा० नरसिंहभार्या मा० रुष्वा  
रमभेयसे देहरी कारापिता शुभ भवतु ।

देवकुलिकासंख्या ३४

( ३०० )

मघत् १४८३ वर्षे प्र वैशाखवदि १३ गुरौ श्री  
अबल्लगच्छे श्रीमेरुगसुरीणां पदे श्रीगच्छापीश्वर  
श्रीअयकीर्तिसुरीश्वरसुगुरुपदेशेन मीठडिया सा०  
तेजा भार्या तेजलदे तयोः सुत मा० डोडा सा०  
स्त्रीमा सा० मूरा मा० फाला मा० गांगा सा० डीडा  
सुत सा० नागराज सा० कासा सुत सा० पास  
मा० जीवराज सा० जिणदास सा० स्त्रीमा भार्या  
स्त्रीमावेभ्या आत्मभेयोर्ष दहरी कारापिता ।

देवकुलिकासंख्या ३५

( ३०१ )

सं० १४८३ वर्षे प्र० वैशाखवदि १३ गुरौ श्री  
अबल्लगच्छे श्रीमेरुगसुरीणां गच्छापीश्वर श्रीअय  
कीर्तिसुरीणांमुपदेशेन श्रीश्रीमालज्ञातीप श्रीस्तंम  
तीर्षदास्तव्य परीक्षः जमरा भार्या माऊ तयोः पुत्रः  
परीक्षः गोपाल प० राठल प० डोडा भा द्विचक्र  
पुत्र सा० पूना भा० ऊंशी प० सोमा प० राठल

( १५७ )

सुत प० भोजा, प० सोमा सुत आशा हृषकूभ्या-  
मात्मश्रेयसे देहरी कारापिता ।

देवकुलिकासंख्या ३८ स्तंभोपरि

( ३०२ )

सं० १५३४ वैशाखवदि १० सोमे सं० रतना  
साथी न्याति श्रीमालुगोत्रीयक सं० जीवा पुत्र सं०  
मांडण, जीवन, जीवदेव, ग्वेता सहित मांडेलगदधी  
यात्रा(र्थ) आया ।

देवकुलिकासंख्या ४१

( ३०३अ )

संवत् १४२१ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० बुधे मूलनक्षत्रे  
सिद्धिनामयोगे श्रीउपकेशज्ञातीय चीचटगोत्रे वीस-  
टान्वये सा० लखण सुत आजडात्मज शाह गोसल  
सुत सा० देसल भार्या भोली पुत्राः सा० सहज सा०  
माहण सा० समर, माहण भार्या भावलदे पुत्र सं०  
घना सा० कडूआ सा० लिंवा भागिनी धार्ई मुकतु  
समस्तसाथैः साध्वीभावलदेवीभिरात्मश्रेयसे श्री-  
पार्श्वनाथचैत्ये देवकुलिका का० उपकेशगच्छे ककुदा-  
चार्यसंताने कक्कसूरीणां पट्टालंकारदेवगुप्तसूरीणामुप-  
देशेन शुभं भवतु ।

( १५८ )

( ३०३५ )

सं० १४८३ वर्षे वैशाखसुदि ७ तिथौ घृहक्षपा  
गण्डाधिपति श्रीदेवसुंदरसूरिपद्मावतस श्रीसोम  
सुंदरसूरि श्रीसुनिसुंदरसूरि श्रीधयशंकरसूरि श्रीसु  
बमसुंदरसूरि श्रीजिनसुंदरसूरिरूपवेद्येन श्रीमास  
शालीय सुत ठ० सारंग पुत्र सा० गुणराज तत्पुत्र  
नागराजेन स्वभार्या भेपोर्यमप्रेक्षितम्बरं कारित ।

देवकुलिकासख्या ४२

( ३०४अ )

स्वस्तिश्रीशयोभ्युदयम्—

श्रीप्रतिष्ठानुपनन्दनः, सुसीमाङ्गमनो विद्या ।

पद्मप्रमथिनः पातु, रक्तोत्पलदसपुतिः ॥

स० १४२१ वर्षे कार्तिकसुदि ५ रवौ इस्तमक्षय  
कोडीभारनगरवास्तव्य मोडझातीय आगमिक गण्ड-  
भक्तसुभाषक ठ० जाल्हा, समवेद्य ठ० पीमा ठ०  
सणसब, जयता सुत स० अजितेन भार्या द्विबादे  
प्रभृतिकुटुंबकलितेन भवजयाय पद्मप्रमस्वामिर्बिर्बं  
कारित । नेडडभार्या अद्विबादेव्या श्रीपार्श्वनाथदेव-  
कुलिका कारिता आगमिकगण्डोपवेद्येन शुभं  
भूयात् ।

( १५९ )

( ३०४ ष )

सं० १४८३ वैशाखसुदि ७ भद्वारकश्रीदेवसुंदर-  
सूरिपट्टे श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजय-  
चंद्रसूरिपट्टे श्रीभुवनसुंदरसूरि श्रीजिनसुंदरसूरि-  
धर्मोपदेशेन श्रीमालज्ञातीय विजयसी सुत सा०  
जगतसिंह पुत्र सा० गुणपति रतनसिंह कालु भार्या  
गज रंगदेवेन कारिता श्रेयोर्थ ।

देवकुलिकासंख्या ४३-४४

( ३०५-३०६ )

सं० १४८३ वर्षे प्रथम वैशाखवदि ७ रवौ श्री  
तपागच्छनायकश्रीदेवसुंदरसूरितत्पट्टालंकारभद्वारक  
श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि-  
णामुपदेशेन योगिनीपुरवास्तव्य रूला सुत हंसराज  
पुत्री हंसादे अंगजरंगदेवेन कारितः शुभं भूयात् ।

देवकुलिकासंख्या ४५

( ३०७ )

सं० १४८३ वर्षे वैशाखसु० १३ तपागच्छाधि-  
राज श्रीदेवसुंदरसूरि तत्पट्टालंकार श्रीसोमसुंदर-  
सूरि श्रीजयचंद्रसूरेरुपदेशेन रतननगरीय सं० लख-  
मण सुत राघव संघवी मंत्री गोसल सुत सोम-



प्रभराज तस्य भाया रगादे सुत सोमदेवेन कारितो  
रंगादेव्याः अयोर्ष ।

देवकुलिकासख्या ४६

( ३०८ अ )

सं० १२६३ वर्षे व्यापाठवदि ८ शुरौ श्रीठपकेस  
ज्ञातीय सो० आंयड पुत्र जगसिंह तत्पुत्र ठवय भा०  
ठवयादे पुत्र मेणेन अस्य पार्श्वनाथस्यैत्ये देवकुलिका  
कारापिता श्रीधर्मधोपसूररूपवेशेन श्रीधनमेतकार्ये  
श्रीरस्तु ।

( ३०८ ब )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रबावदि ७ शुरौ श्रीतपा  
गच्छनायक श्रीवेवसुंवरसूरिपदे श्रीसोमसुंवरसूरि  
श्रीशुनिसुंवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीशुबमसुंवरसूरि  
रूपवेशेन अंभाइत वास्तव्य ठसबासज्ञातीय सोनी  
भरिभा पुत्र सो० पदमसिंह भायां व्यासहृष्यदेव्या  
श्रीजीराठसाशुबने बहुष्किता शिखरं कारापितं ।

देवकुलिकासख्या ४८

( ३०९ )

पातु वः पार्श्वनाथोऽयं, निष्कलैः सप्तभिः कर्मैः ।  
प्रयानां नारकानां च, अमद्भृति संघकाम् ॥१॥

( १६१ )

संवत् १४१३ वर्षे फा० सु० १३ स्वामिनः  
वृहद्गच्छीय श्रीदेवचंद्रसूरीणां पदे श्रीरामचंद्र-  
सूरिपट्टालंकारहारोपम श्री श्रीरामचंद्रसूरिभिः  
श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथस्य सुवने श्रीपार्श्वनाथस्य  
देवकुलिका कारिका ।

यावद् भूमोऽस्ति यो मेरुर्यावच्चन्द्रदिवाकरः ।

आकाशे तपतो यावन्नन्दिता देवगेहिका ॥ १ ॥

शुभं भवतु सकलसंघस्य जीरापल्लीयगच्छस्यैव ॥ ४३ ॥

देवकुलिकासंख्या ४९

( ३१० )

पातु वः पार्श्वनाथोऽयं, मकलैः सप्तभिः फणैः ।

मयाना नारकानां च, जगद्रक्षति संघकान् ॥ १ ॥

सं० १४११ वर्षे वैत्रवदि ६ बुधे अनुराधा-  
नक्षत्रे वृहद्गच्छीय श्रीदेवचंद्रसूरीणां पदे श्रीजिन-  
चंद्रसूरीणां तपोवनतपोधनेन तपस्वीकरपरिवृतानां  
श्रीपार्श्वनाथस्य देवकुलिका जीरापल्लीयैः श्रीराम-  
चंद्रसूरिभिः कारिता छः ।

यावद्भूमोस्ति यो मेरुर्यावच्चंद्रदिवाकरौ ।

आकाशे तपतो यावन्नन्दतां देवगेहिका ॥ १ ॥

( १६२ )

शुभ भवतु सर्वं जयतु ।

देवकुलिकासख्या ५०

( ३११ )

द्विषस्र्ठाटमूद, श्रीघांतिनापत्ता बळम् ।

कळानिषिमपु भिर्ष, नैष दोषाकरे मन ॥ १ ॥

सबत् १४१२२वर्षे आश्विनषदि ४ बुधदिने कृति  
कानक्षत्रे उपदेशाज्ञातीय व्य० जमपपाल भार्या  
राजुलदे पुष व्य० बीकमल भार्या पूजी पुष इगर  
पाल्हा पोल्हाकेन समस्तकुडुपसहितेन श्रीपार्श्व  
नापचैत्ये स्वकुडुपमेयोर्ष श्रीघांतिनापस्य देवग  
दिका कारापिता श्रीविजयसेमसूरीणां शिष्यश्री  
रत्नाकरसूरीणामुपवेशेन शुभ भवतु ।

देवकुलिकासख्या ५१

( ३१२ )

स १४८९ वर्षे भाद्रबावदि ७ सुरौ शीतपा  
गच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपदे श्रीसोमसुंदरसूरि  
श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयशंकरसूरि श्रीसुषमसुंदरसूरि  
रूपदेशेनकलचर्माबास्तव्य उसवासज्ञातीय मा०  
मांडण सीधी पुष देसाकेन श्रीजीराडलासु० देव  
कुलिकाशिष्यर कारापित ।

( १६३ )

देवकुलिकासंख्या ५२

( ३१३ )

संवत् १४८३ वर्षे भाद्रवावदि ७ गुरौ वीसा  
भार्गा वामादे पुत्र गो० सोनानी हीरा ।

( ३१४ )

सं० १४९२ वर्षे मार्गवदि १४ रविदिने घोघा-  
वास्तव्य आड भा० वा० अहडदे बेटी क्षमकुदेव्या  
शिग्वरं कारापितं सदाश्रेयोर्थ ।

पार्श्वनाथदेवकुलिका के छज्जा में-

( ३१५ )

वामादेसुत सीहड गोटी देहरी कारापिता ।  
मुख्यचैत्य के पृष्ठिभाग की देवकुलिका के  
स्तंभ पर-

( ३१६ )

संवत् १४८७ अर्हंनमः गृदीकर पीपलगच्छे  
त्रिभविद्या श्रीधर्मेशेग्वरसुरिशिष्य वा० देवचंद्रः  
नित्यं प्रणमति मुद्राकलासहिता अर्हं नमः ताल-  
ध्वजीय वा० महजसुंदरः नित्यं प्रणमति । अर्हं नमः  
नमो जिणाणं ।

( ११४ )

षट्शतसुषुक्का के स्तंभ पर—

( ११७ )

संवत् १८५१ वर्षे आषाढसुदि १५ दिने श्री  
जीराबलामविर शिखरजीरो सकलभहारकपुरवर  
भहारक श्री श्री श्री श्री १०८ श्रीरंगविमलसूरी  
श्वरेण जीर्णोद्धार कारापितं, हजार ३०२११) रुपिया  
शरणी लाम लीपो श्रीजीराबलीय गजपर सोमपुरा  
के० बला, सिरोही प्रप्यसचिता सा० रूपा सा०  
ज्योता सा० अणवा सा० बीरम सा० रामजी सा०  
इत्यादे काम करापितं ।

लोटानातीर्थचैत्ये कायोत्सर्गस्य प्रस्तर प्रतिमा—

( ११८ )

संवत् ११३० श्वेष्ठ शुक्ल ५ श्रीमिर्भुतिकुछे श्री  
नदेम आमपाछेन कारितं पाम्बेजिनयुग्ममुत्तमं प्र०  
श्रीशेखरसूरिभिः ।

पावुकोपरि—

( ११९ )

स० १८६९ पीपसुदि १३ गुरौ श्रीशपभदेव  
पावुकाव्यो मम, म० श्रीविजयलक्ष्मीसूरिभिः  
प्रतिष्ठित छोटीपुरपत्तने ।

( १६५ )

मंडपगत सपरिकर प्रस्तर प्रतिमा—

( ३२० )

संवत् ११४४ ज्येष्ठवदि ४ आद्धवती प्राग्वाट-  
वंशीय व्य० यापुश्रेष्ठी देवभार्या श्रीवर्धमानस्वामि-  
प्रतिमा कारिता, श्रीमद्देवाचार्येण लोटानक आदि-  
जिनचैत्ये प्रतिष्ठितं सहदेवेनाहेनगोत्रेण ।

धातुपंचतीर्थी—

( ३२१ )

सं० १०११ प्राग्वाट सा० नल पु० सिंहदेव भार्या  
जामलदेव्या का० श्रीशान्तिनाथः प्रतिष्ठिता उप-  
केशगच्छे श्रीदेवसूरिभिः ।

सेलवाड़ा में धातुचतुर्विंशतिः—

( ३२२ )

सं १३२८ वर्षे वैशाखवदि ५ गुरौ ब्रह्माणगच्छे  
श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० भूभव भार्या गूरी सुत  
सरवण ( श्रवण ) भार्या टमकू सुत धर्मा, उदा,  
पितृव्यजूगणेन श्रीधर्मनाथचतुर्विंशतिपट्टं कारापितं  
प्रतिष्ठितं श्रीविमलसूरिपट्टे भट्टारक श्रीबुद्धिसागर-  
सूरिभि राणपुरवास्तव्यः । श्रीः श्रीः ।

( १११ )

मुछालामहावीरचैत्य के दहिनी भमती की छत में—

( ३२३ )

संवत् १०३३ मांवलसिंह ।

प्राचीनखडित पवासनोपरि—

( ३२४ )

सं० १३१४ फासुनसुदि ५ दिने श्रीवशाशार्तीय श्रीभांडवगोत्र यशोमद्रसुरिमनानीय शिष्यमघ्नी सौहार कृतः श्रीप्रीतिसुरिभिः प्र० ।

वरमाणचैत्ये कायोत्सर्गस्य प्रस्तरप्रतिमा—

( ३२५ )

संवत् १३७१ वर्षे माघवदि १ मोम प्राग्बाट शार्तीय भ० झांझण भार्या राठलपुत्रेण सिंह भा० पवमा, लजाळ पुत्र पद्मा भा० मोहनि पुत्र बिजय सिंह पुत्र बिजयसिंहसहितन पार्श्वयुगलं कारित ।

( ३२६ )

स० १३५१ वर्षे श्रीब्रह्माणगच्छे मेता मडाहडिय भे० पूनसी भार्या पवमल पुत्र पद्मसिंहेन जिनयुग्मं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीः ।

( १६७ )

षट्चतुष्किका स्तंभोपरि—

( ३२७ )

सं० १४८६ वर्षे वैशाखवदि १ बुधे ब्रह्माणीय-  
गच्छे भट्टारक श्रीमत्पुण्यप्रभसूरिपट्टे श्रीभद्रेश्वर-  
सूरिपट्टे श्रीविजसेनसूरिपट्टे श्रीरत्नाकरसूरिपट्टे  
श्रीहेमविमलसूरिभिः पुण्यार्थे रंगमंडपः कारितः ।

पद्मशिलोपरि—

( ३२८ )

संवत् १२४२ वर्षे चैत्र सुदि १५ ब्रह्माण०  
श्रीमहावीरविंशं श्रीअजितदेवस्वामिदेवकुलिकायाः  
पूनिग पुत्री ब्रह्मदत्ता जिणहा पोलहा नानकदेवी  
सहितेन पद्मशिलाका कारिता सूत्र० फूहडेन घटिता ।

आरखीचैत्ये धातुमूर्त्ति—

( ३२९ )

सं० १३७३ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुके श्रीकुल-  
संघे भट्टा० श्रीपद्मानंदीगुरूपदेशेन ठ० झांझाकेन  
मातृ आजना पुत्रश्रेयोर्थ श्रीचंद्रप्रभविंशं प्रति-  
ष्ठापितं ।



( १५८ )

( ३३० )

स० १४०६ वर्षे काशुणसुदि १० गुरो श्रीश्री  
मालझासीय व्य० सलम्बा भार्या सोहगदेव्याः  
श्रेयोर्थं सुत व्य० धांभाकेम श्रीपार्ष्णमाथविष कारित  
प्रतिष्ठित श्रीधमेश्वरसूरिभिः ।

दयाणा चैत्ये कायोस्सर्गस्थ प्रस्तरप्रतिमा-

( ३३१ )

संवत् १०११ आषाढ सुदि ३ ञानिश्चर समह  
भार्या नयणादेवी पुत्र बसिया भार्या बपजलक्ष्मी  
पुत्र लाम्बसिंहेन श्रीपार्ष्णयुग्मः कारितः, इह  
गच्छीय श्रीपरमानन्दसूरिशिष्य श्रीपद्मदेवसूरिभिः  
प्रतिष्ठितं ।

कासोलीचैत्ये मूलनायक परिकर-

( ३३२ )

संवत् १३४३ वर्षे कपूळिका श्रीपार्ष्णमाथगोष्ठिक  
श्रेष्ठि श्रीपाल भार्या सिरियादेवी पुत्र मरदब भे०  
बोडा भाया श्रीरी पुत्र श्रीरामदेव मह० देवसिंह  
मह० सलम्बा पु० गळा भे० कर्मा भार्या अनुपमदे  
पु० मह० अजयमिंहेन भे० प्राट् स्तीवा मोहम

( १६९ )

सहितेन श्रे० जगसिंह पुत्र श्रे० घनसिंह शंभुपाल  
श्रे० पूनड पुत्र धीरा श्रे० साहड पु० विजयसिंह  
श्रे० झांझण पु० रामसिंह प्रभृति सहितेन पितृ  
मातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथपरिकरहारः कारितः कच्छो-  
लीगच्छीयगुरुणामुपदेशेन श्रीः ।

पिंडवाडाचैत्ये धातुप्रतिमा-

( ३३३ )

सं० १००१ श्रेयांसनाथः श्रीय० पुंवणकारीयं  
श्रेयोर्थ ।

भीलडियातीर्थचैत्ये धातुपंचतीर्थी-

( ३३४ )

सं० १३६७ वर्षे वैशाख सुदि ९ प्राग्वाठे श्रे०  
तिहणसिंह भार्या हांसलश्रेयोर्थ पुत्र सोमाकेन श्री-  
आदिनाथविंशं का०, प्रतिष्ठितं मडाहडियगच्छीय  
श्रीचंद्रसिंहसूरिशिष्य श्रीरविकरसूरिभिः ।

( ३३५ )

सं० १५३५ वर्षे माघ वदि ९ शनौ कुतवपुर-  
वासी प्राग्वाट व्य० काजा भार्या देवी पुत्र भोला-  
केन भा० राजू सुत हांसा रतादिकुटुंबयुतेन स्व-

( १० )

पितृभयसे श्रीशांतिनाथविश्व का०, प्र० तपागच्छे  
श्रीलक्ष्मीनागरसूरिभिः ।

पादुकायुगलोपरि—

( ३३६-३३७ )

सबत् १८३७ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे त्रयोद  
शीतिथौ चंद्रवासरे महारक्त श्री श्री श्री १० ८ श्री  
श्रीरविजयसूरीश्वरद्युक्त्यो नमो नमः, श्रीइतपिजग  
यणिपादुका छ श्रीमहिमाविजय ग० पादुका छे ।

भूमिगृहे पञ्चसीर्थी—

( ३३८ )

स० १५०७ वर्षे माघे कांबलिघासे भ० इगर  
भा० रूपी पुत्र माताकेम भा टीबू पुत्र कमाहेमा  
दिकुदुपयुतेन श्रीसुमतिनाथविश्व का० प्र० तपा  
गच्छेश श्रीसोमसुंवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरिशिष्य श्री  
श्रीरत्नशेखरसूरिभिः श्रीः ।

( ३३९ )

सबत् १३३४ वैशाखबदि ५ बुधे श्रीगौतम  
स्वामिभूतिः श्रीजिनेश्वरसूरिशिष्य श्रीजिनप्रबोध  
सूरिभिः प्रतिष्ठिता कारिता च सा० बोद्धिष्ठसुत

( १७१ )

व्य० वहजलेन मूलदेवादि भ्रातृसहितेन च स्वश्रेयोर्थं  
स्वकुटुंबश्रेयोर्थं च ।

पवासनभित्तिस्तंभोपरि—

( ३४० )

श्रीजीराउलजी भूः ङ ठं कं ।

सोपानस्तंभोपरि—

( ३४१ )

सा० जस ववल संघपति ।

भीलडीग्रामगृहचैत्ये प्रस्तरप्रतिमा—

( ३४२ )

सं० १८९२ वर्षे वैशाखसुदि १३ शुके श्रीभील-  
डिया महाजनसमस्तेन श्रीनेमिनाथविंबं कारापितं ।

सं० १८९२ वर्षे वैशाखसुदि १३ शुके श्रीचन्द्र-  
प्रभविंबं कारापितं श्रीभीलडीयानगरना संघसम-  
स्तेन श्रीईडरनगरे प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे ।

अंबिका प्रस्तरमूर्तिः—

( ३४३ )

सं० १३४४ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० बुधे श्रे० लख-  
मसिंहेन अंबिका( मूर्तिः ) कारिता ।

( १७९ )

अधिष्ठायकमूर्ति प्रस्तरमयी—

( १४४ )

सं० १३४४ ज्येष्ठसुदि १० शुभे अ० लम्बमसिंहेन  
कारिता ।

नेसडा(पालनपुर)चैत्ये धातुमूर्त्ति—

( १४५ )

स० १२४४ माघसुदि १० सोमे वीसाबाळ अ०  
राणा सुत आससेम आत् प्रेमसेन सा० कलत्र रत्न  
देवेम भार्या मिरियादेवीअपोर्य चतुर्विंशतिजिन  
प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्रीप्रसन्नसूरिभिः ।

( १४६ )

सं १३६९ फा व० ५ सोमे श्रीमालज्ञातीय  
पितृजेता मातृ लाडी अपोर्य सुत साजनभावकेन  
श्रीमुनिचंद्रसूरीणामुपदेशेन श्रीआविनाथ ( पच  
तीर्थी ) विच कारितं प्रतिष्ठित श्रीसूरिभिः ।

वात्पम(दियोदर)चैत्ये धातुमूर्त्तिः—

( १४७ )

संवत् १४४९ वर्ये वैशाखसुदि ६ शुके अंचल-

( १७३ )

गच्छे श्रीमेस्तुंगसूरीणासुपदेशेन शाला ठ० राणा  
भा० भोली सुत ठ० विक्रमेन स्वपित्रोः श्रेयसे  
श्रीमहावीर( पंचतीर्थी )वियं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीसूरिभिः ।

पादुकोपरि—

( ३४८ )

सं० १७८२ चर्षे वैशाखशुदि १५ गुरौ पं० श्री-  
जयविजयजी पं० शुक्लविजयजी पं० श्रीनित्यविजय-  
जी पं० श्रीहीरविजयजी पं० श्रीजीवविजयजी  
पादुका कारिता ।

वासणा (पालनपुर) चैत्य धातुमूर्तिः—

( ३४९ )

सं० १२४० माघसुदि १३ दिने लक्ष्मणसी रणसी  
श्रे० षोणदेवपालेन प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता  
श्रीयशोदेवसूरिभिः ।

वामभागे प्रस्तरप्रतिमा—

( ३५० )

सं० १९५५ फाल्गुनवदि ५ सांथुवास्तव्य ओ०  
धृ० शा० केशरीमल कस्तूरध्वेन ( चंद्रप्रभ )वियं

( १७४ )

कारितं महारक श्रीराजेन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठित प्र०  
का० असरूपजीतमह्येन आहोरनगरे श्रीसुपर्मा  
तपा( सौधर्मबृहत्तप ) गच्छे ।

दक्षिणभागे प्रस्तर प्रतिमा—

( १५१ )

स० १९५५ का० ब० ५ समस्तसंचेम ( चंद्रग्रहण )  
विषय कारित प्रतिष्ठित श्रीराजेन्द्रसूरिभिः प्र० का  
असरूपजीतमह्यार्या आहोरनगरे ।

मूलनायक प्रस्तरप्रतिमा—

( १५२ )

स० १९५० का० ब० ५ गुरौ प्राग्वाट केराधुत  
रूपा तह्णाजीस्केम ( चंद्रग्रहण ) कारित, प्र० म०  
श्रीराजेन्द्रसूरिभिः, प्र० का० असरूपजीतेन तपा  
गच्छे आहोरे ।

प्रतिष्ठाप्रशास्ति—

( १५३ )

श्रीराजेन्द्रसूरि श्रीधनचन्द्रसूरि श्रीभूपेन्द्रसूरि  
मद्गुरुभ्यो नमः । सवत् १९०७ वर्षे भासोत्तममासे  
मारवाडी काशुण्णकृष्णपक्षे पष्ठि पवर्तमाने नम्वातियौ

( १७१ )

कुंभलग्ने स्थिरांशे स्वातिनक्षत्रे सोमवासरे प्रभात-  
समये श्रीवासनानगरवास्तव्य श्रीवीसाश्रीमाली-  
वंशीय श्रीसंघेन श्रीचन्द्रप्रभुत्रयविंशं कारितं प्रति-  
ष्ठितं (स्थापितं) भट्टारक श्रीवर्तमानाचार्य श्री १००८  
श्रीविजययतीन्द्रसूरिआदेशात् मुनिसत्तम श्रीमत्-  
हर्षविजयेन भीमसिंहराज्ये श्रीसौधर्मवृहत्तपागच्छे  
शुभं भवतु ।

लुआणा(दियोदर) चैत्ये प्रस्तरमूर्त्ति—

( ३५४ )

सं० १९५५ फागुण वदि ५ गुरौ प्रतिष्ठितं भ०  
श्रीराजेन्द्रसूरिभिः, सियाणासमस्तसंघेन विमल-  
नाथ विंशं कारितं सुधर्मतपागच्छे ।

( ३५५ )

सं० १९५५ फागुणवदि ५ सियाणावास्तव्य-  
संघेन ( श्रीमहावीर ) विंशं प्रतिष्ठितं भ० श्रीराजे-  
न्द्रसूरिभिः, कारितेन जसरूपजीतमलेन सौधर्म-  
तपागच्छे ।

धातुसय—मूर्त्तयः—

( ३५६ )

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ९ सोमे श्रीश्रीमाल-



( १७६ )

झातीय इय० पाल्हा मा० पाल्हावे सुत बानरेत  
भा० श्रीकण्ठ सुपुत्रसहितेन पितृमातृपैतृष्य०  
जाल्हा भ्रातृ पीताम्र पूर्वज भेयोर्ध श्रीअजितनाथ  
चतुर्विंशतिपङ्कः का० पूर्णि० श्रीराजतिळकसूरिभिः  
प्र० जाणवीयास्तव्यः ।

( १५७ )

सं० १५२२ बर्षे माघसुदि ९ शनौ श्रीप्राग्बाट  
झातीय भेष्टिबिठ्ठा भार्या आजी सुत स० मांङ्ग  
भार्या सं० झाली सुत स० अर्जुमकेन भा० अहिबदे  
सहितेन अपरा भार्या रामतिनिमित्त श्रीमुनिसु  
वतस्वामिर्षिय कारितं प्रतिष्ठित श्रीकृष्णपापशे  
प्रभुमङ्गारक श्री श्री श्री श्रीजिनरत्नसूरिभिः सह  
आला वास्तव्यः ।

( १५८ )

स० १५२३ बर्षे वैशाखसुदि ३ प्राग्बाटझा०  
सं० नापा[केन] भा० लम्बमावे सुत बोमा ठाह्य,  
हांसा जाबड भाबड तद्भार्या अमरी नापी कर्नाई  
मेघाई आसू तत्पुत्र नाकर झडका रूपा सूर्यादि  
कुतुबपुतेन श्रीविमलनाथर्षिच का०, प्र० तपागच्छे  
श्रीरत्नशेखरसूरिपदे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिर्वीरम  
प्राग्बास्तव्यः ।

✓(१७७)

( ३५९ )

सं० १५१७ वर्षे फागुणसुदि ३ शुक्ले श्रीश्री-  
मालजातीय साह नागसी भार्या डाही सुत सा०  
वानर भार्यया आसीनाम्न्या आत्मश्रेयोर्थ श्री-  
अजितनाथादिपंचतीर्थोच्चं श्रीविमलगच्छे श्री-  
धर्मसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना अहमदावादे ।

( ३६० )

सं० १५०५ वर्षे माघसुदि ५ रवौ श्रीश्रीमाल-  
जातीय श्रे० वगरसी भा० सामलदे सुत समधरेण  
पितृश्रेयसे श्रीकुंथुनाथविवं पूर्णिमापक्षे श्रीगुण-  
समुद्रसूरीणामुपदेशेन कारितं प्र० विधिना ।

( ३६१ )

सं० १५३२ वर्षे वैशाखसुदि १० शुक्ले श्रीश्री-  
वंशे सं० घना भार्या घांधलदे पुत्र सं० पांचा  
सुश्रावकेण भार्या फकू पुत्र महं० सालिगसहितेन  
पितुः पुण्यार्थं श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणा-  
मुपदेशेन श्रीसुविधिनाथविवं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीसंघेन लोलाहाग्रामे श्रीरस्तु ।

( ३६२ )

सं० १६२४ वर्षे शाके १४८९ प्रवर्तमाने माघ-

( १७६ )

ज्ञातीय व्य० पास्हा भा० पास्णादे सुत बानरेत  
भा० श्रीकलदे सुपुत्रसहितेन पितृमातृपैतृभ्य०  
जास्हा घ्रातृ पीताम्र पूर्वज भेयोर्धं श्रीअजितनाथ  
चतुर्विंशतिपट्टः का० पूर्णि० श्रीराजतिष्ठकसुरिभिः  
प्र० जाणवीवास्तव्यः ।

( १५७ )

सं० १५२२ वर्षे माघसुदि ९ शनौ श्रीप्राग्बाढ  
ज्ञातीय भेदिबिहवा भार्या बाजी सुत स० मारुड  
भार्या स० शाली सुत स० अर्जुनकेन भा० अहिबदे  
सहितेन अपरा भार्या रामतिनिमित्त श्रीमुनिसु  
व्रतस्वामिर्बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबृहत्तपापक्षे  
प्रभुमहारक श्री श्री श्री श्रीजिनरत्नसुरिभिः सह  
आला वास्तव्यः ।

( १५८ )

स० १५२३ वर्षे वैशाखसुदि ३ प्राग्बाढशा०  
सं० मापा[केन] भा० लम्बमादे सुत चोमा ठाह्य,  
हांसा जाबड भाषड तदुभार्या अमरी नापी कनाई  
मेघाई आसु तस्युष नाकर शटका रूपा सुरादि  
कुतुबयुतेन श्रीबिमलनाथर्बिंबं का०, प्र० तपागच्छे  
श्रीरत्नशेखरसुरिपदे श्रीलक्ष्मीसागरसुरिभिर्बीरम  
ग्रामवास्तव्यः ।

( १७९ )

कुंयुनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० श्रीनागेंद्रगच्छे  
श्रीगुणसमुद्रसूरिभिः वाराहीवास्तव्यसोरतिया ।

( ३६६ )

सं० १६६५ वर्षे वैशाखसुदि ६ बुधे श्रीराजपुर-  
पुरे श्रीश्रीमालज्ञातीय सा० वहोला नागा भा० सूनी  
तत्सुत शिवसी[सिंहेन] भार्या रत्नादे सुत मा०  
मेघसिंघ भार्या वीरादे प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रेयसे  
श्रीपार्श्वनाथर्विवं का०, प्र० तपागच्छे भट्टा० श्रीहीर-  
विजयसूरि भट्टा० श्रीश्रीविजयसोमसूरिभिः ।

( ३६७ )

संवत् १५८२ वर्षे वैशाखसुदि १० शुके श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्य० वल्लटा भा० मांकु सुत सोमा भा०  
सुहवदे सुत श्रीपाल भा० सिरियादेव्या स्वपूर्वज-  
निमित्तमात्मश्रेयसे श्रीनमिनाथर्विवं कारितं प्रति-  
ष्ठितं श्रीचैत्रगच्छे धारणपट्टीयभट्टारक श्रीविजय-  
देवसूरिभिर्लूदाग्रामवास्तव्यः श्रीः ।

( ३६८ )

सं० १५१५ वर्षे आषाढसुदि ५ श्रीश्रीमालज्ञा०  
परी० हांसा भार्या वरजु सुत भोजाकेन भार्या सोनू  
कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथर्विवं कारितं

( १७८ )

मासे सुदिपक्षे १ सोमे ओसवशाज्ञातीय मे०  
घरणाभार्या घरणादे पु० वेवचद भा० सुजागर्दे  
प्रमल्लदेव्या स्वकुटुम्बभेषसे साधुपूर्णिमापक्षे महा  
१६ श्री श्री श्री श्रीविद्याचन्द्रसूरीणास्तुपदेशेन श्री  
वासुदेव्यमापस्य विंशं कारापितं प्रतिष्ठित श्रीसंवेन।

( ३६३ )

संवत् १५१३ वर्षे पौष वदि ३ शुक्ले महाज्ये  
सुहृदसी भार्या सुहृददे सुत भोजाकेन भा० अमरी  
मातृपितृनिमित्त आत्मभेयोर्षं श्रीशांतिमापविंशं  
का० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीकमलसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( ३६४ )

संवत् १५१० वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे पचमी-  
दिने बृहशाखायां मोहशातीय भणशाती मांगा  
भार्या सोमाई सुत तुलजाई क्वरित श्रीशांतिनाथ  
निमित्तमात्मभेयोर्षं प्रतिष्ठितं तपागच्छे बृहशाखायां  
श्रीधररत्नसूरिभिः पत्तननगरे ।

( ३६५ )

स० १५१० का० सु० ३ शुरो श्रीश्रीमालज्ञा०  
मे० मोहल भा० सोहगर्दे पु० गोहवेन मातृपितृ  
भेयोर्षं पितृव्य मातृतिहुणा भा० मांग्भेयोर्षं च श्री

( १८१ )

धातुपञ्चतीर्था-

( ३७२ )

सं० १४२५ वर्षे वैशाखसुदि ११ दिने श्रीब्रह्माण-  
गच्छे श्रीमालजातीय पितामही रामादेवी पितृनाथा  
मातृलीलादेवी श्रेयसे ठ० श्रीपालेन श्रीशांतिनाथ-  
विंशं कारितं प्र० श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः ।

( ३७३ )

सं० १४८८ वर्षे मार्गवदि ५ गुरौ श्रीमाल-  
जातीय व्य० आंजण भार्या भोली सुत व्य० आका-  
केन श्रीपार्श्वनाथविंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसोम-  
सुंदरसूरिभिः श्रेयस्करी श्रीः ।

( ३७४ )

सं० १४२५ वर्षे माघसुदि ८ व्य० जयता भार्या  
हांसीदे पुत्र वाहडेन स्वपितुः पितृव्यश्रेयोर्थं श्री  
श्रीपद्मप्रभविंशं कारापितं ।



( १८० )

पूर्णिमापक्ष श्रीसागरतिलकसूरीणासुपदशन प्रति  
ष्ठित श्रीः ।

मोटीपाषण्ड(बाधतालुका)चैत्ये—

( १६९ )

सं० १४७२ ज्येष्ठशुक्र ११ सोमे श्रीश्रीमास  
शास्तीप पितृ बुद्धरा भा० मासही पितृमातृनिमित्त  
सुत हेमा पूडा धमादियुतः श्रीशांतिमाधम्यतुर्षि  
शक्तिजिनपदः करापित म० नागेंद्रगच्छे श्रीरत्न  
सिंहसुरिभिः ।

जेतडा(धराद)चैत्ये प्रस्तरप्रतिमा—

( १७० )

सं० १८१६ वर्षे माघशुक्र ७ शुके श्री शर्वाप  
जिमर्षिष कारापित गेताग्राम समस्तश्रीसय श्रीश्री  
मासशास्तीपेन म श्रीविजयजिनेन्द्रसुरिभिः प्रति  
ष्ठित श्रीतपागच्छ ।

( १७१ )

सं० १८१२ माघ सु० ७ शुके श्रीचन्द्रमभजिनर्षिष  
का० ग्रामगेलासमस्तसंधे श्रीश्रीमासशास्तीपेन म०  
श्रीविजयजिनेन्द्रसुरिभिः प्रतिष्ठित श्रीतपागच्छे ।

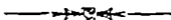
का संकेत मान कर इन्होंने गाढ़ी वहीं रोक दी और आशा-पूरी माता को वहीं प्रतिष्ठित की । नाढ़ टूटी, हमलिये माता का नाम भी ' नाणदेवी ' पड़ गया, जो अभी तक चला आता है । नाणदेवी का उपरोक्त स्थान थराद से ईशान कोण में अर्ध-मील के अन्तर पर है । जैन जैनेतर सब ही लोग इमको मानते हैं ।

प्राचीन लोग शकुन, शुभ लक्षणों और सकेतों में अधिक विश्वास रखते थे । उपरोक्त भूमि पर उन्होंने कुत्तों के पीछे अशकोंको दौड़ते हुए देखा । वस, उन्होंने भूमि को वीरप्रम-विनी समझा और वहीं पर बस गये । ग्राम का नाम थिर-पालघर के नाम के पीछे ' थिरपुर ' रक्खा, जो आज थराद के नाम से विख्यात है ।

थराद के उत्तर में मारवाड़, पूर्व में पालनपुर, दक्षिण में सुईग्राम और पश्चिम में वाव है । बढ़ते बढ़ते थराद एक अति विशाल नगर बन गया । घरुवंश के चौहानक्षत्रियों का थराद पर ७६५ वर्ष तक अर्थात् विक्रम सं० १०१ से सं० ८६६ ( ईस्वीसन् ७८० ) तक राज्य रहा । घरुवंश के राजा, वीरवाढ़ी एवं महात्मा मोहनदास के वंशजों के सदा रहे और ठेठ तक उनका अच्छा सम्मान रक्खा ।



# लेखों का अनुवाद और अवलोकन ।



धरावनगर और उसका प्राचीन गौरव—

धरावद जिसको धिराव, धिरापद या धिरपुर भी कहते हैं, विक्रम सं० १०१ में बना है । इस नगर का बसानेवाला धिरपाठपठ था जो चौहानवंशीय क्षत्री था । यह मिश्र-माल का रहनेवाला था । यह आषाढी माता का परम भक्त था । ये दो भाई थे । पिता की मृत्यु के पश्चात् दोनों भाईयों में कुछ उत्पन्न हुआ । यह आषाढी माता की मूर्ति गाड़ी में बिठा कर अपने स्वयंनों के सहित मिश्रपाठ का त्याग कर उत्तर-गुजरात बनासखंडा की ओर चले पड़े । इसके साथ में महारमा मोहनदास और वीरबाहीबा इन्द्र भी था । जमी जिस स्थल पर धरावनगर बना है, वहाँ जाते-जाते गाड़ी की नाक ( नाव ) टूट गई । उपरोक्त भूमि को पवित्र समझ कर और नाक के टूटने को माता

उनकी छः पीढ़ी पर्यन्त रहा । अन्तिम चौहान राजा पूंजाजी के ऊपर मुसलमानोंने आक्रमण किया और थराद को जीत लिया । हम प्रकार संवत् १२३० से १३०० तक थराद पर यवन अधिकार रहा । मुसलमानों के हाथ में थराद के चले-जाने पर राणा पूंजाजी की विधवा राणी अपने शिशु लड़के को लेकर अपनी माता के घर चली गई । कुंवर जब युवा-वस्था को प्राप्त हुआ तो वीर निकला और थराद के राज्य के लोगों की महाय पाकर उमने पुनः थरादराज्य पर अपना अधिकार कर लिया । उसने ' वाव ' नामक नवीन-नगर को अपनी राजधानी बनाई, जहाँ पर अभी तक भी उसके वंशज राज्य कर रहे हैं । यवनों के मय से थराद से उमने राजधानी उठा ली । अबसर पाकर नाडोल के चौहानोंने थराद पर पुनः अधिकार कर लिया । परन्तु अठारहवीं शताब्दि के उत्तरार्ध में थराद पर राधनपुर के नवाबों का अधिकार हो गया जो विक्रमसं० १८१५ तक रहा । विक्रमसं० १८१५ में वर्तमान ठाकुरों के पूर्वज खानजीने थराद पर अधिकार किया जो अद्यावधि उनके वंशजों के अधिकार में ही चला आ रहा है । थराद के वर्त्तमान ठाकुर ( दरबार ) भीमसिंहजी है और उनके ज्येष्ठ पुत्र युवराज जोरावरसिंहजी हैं । यह तो हुआ थराद के ऊपर शासन करनेवाले राजा और उनके शासनकालों का संक्षिप्त परिचय ।

पुरुष के सत्री आज भी पराद क आम-वास के ग्रामों में बसे हुए हैं और जैनधर्मी हैं। आज के नरेशों का अब राज्यतिसक होता है तब वीरबाहीबख का पुरुष अपने अंगूठे को पीर कर रक्त निकालता है और मोहनदास के बख का पुरुष उस रक्त से सिंहासनासीन होनेवाले नरेश के ललाट पर तिसक करता है। जैनधर भी इन दोनों के बखों के पुरुषों को पुत्र-लग्न के समय एक एक टका प्रदान करते हैं। यह पद्धति उनके पूर्व सम्बन्ध एवं शौर्य को प्रकट करती है। पुरुषधियों क दीर्घकालीन शासन में पराद की अच्छी उद्यति हुई। जैन आबादी बढ़ते बढ़ते दो हजार सातसौ परों तक बढ़ गई। राजा पिरपाल बर स्वयं जैन था। पराद में जैनियों का सदा अतिशय प्रभाव रहा।

अन्य कुलों एवं घबनों का राज्य—

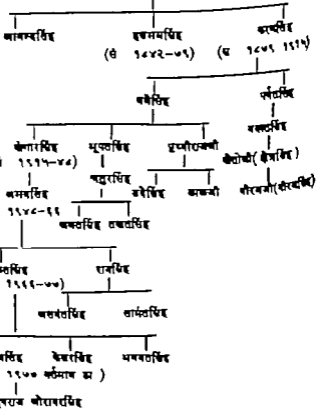
पुरुषधियों क शासनकाल के पश्चात् परमारों का राज्य रहा। अन्तिम परमार राजा निस्सन्तान था। यह धर्म से जैन था। उसने माडोल के राजा को, जो उसका मायेज था पराद का राज्य लेकर स्वयं आयबली बीजा ब्रह्म करली। पराद के ऊपर माडोल के सोहानों का राज्य

उनकी छः पीढ़ी पर्यन्त रहा । अन्तिम चौहान राजा पूंजाजी के ऊपर मुसलमानोंने आक्रमण किया और थराद को जीत लिया । इम प्रकार संवत् १२३० से १३०० तक थराद पर यवन अधिकार रहा । मुसलमानों के हाथ में थराद के चले-जाने पर राणा पूंजाजी की विधवा राणी अपने शिशु लड़के को लेकर अपनी माता के घर चली गई । कुंवर जब युवा-वस्था को प्राप्त हुआ तो वीर निकला और थराद के राज्य के लोगों की महाय पाकर उमने पुनः थरादराज्य पर अपना अधिकार कर लिया । उमने ' वाव ' नामक नवीन-नगर को अपनी राजधानी बनाई, जहाँ पर अभी तक भी उसके वंशज राज्य कर रहे हैं । यवनों के भय से थराद से उसने राजधानी उठा ली । अवसर पाकर नाडोल के चौहानोंने थराद पर पुनः अधिकार कर लिया । परन्तु अठारहवीं शताब्दि के उत्तरार्ध में थराद पर राधनपुर के नवाबों का अधिकार हो गया जो विक्रमसं० १८१५ तक रहा । विक्रमसं० १८१५ में वर्तमान ठाकुरों के पूर्वज खानजीने थराद पर अधिकार किया जो अद्यावधि उनके वंशजों के अधिकार में ही चला आ रहा है । थराद के वर्तमान ठाकुर ( दरबार ) भीमसिंहजी है और उनके ज्येष्ठ पुत्र युवराज जोरावरसिंहजी हैं । यह तो हुआ थराद के ऊपर शासन करनेवाले राजा और उनके शासनकालों का संक्षिप्त परिचय ।

वर्तमान ठाकुर का वंशचक्र—

ठाकुर बाबूसिंहजी

( विष्णु सं १८१५ )



## यवन आक्रमण के पूर्व थराद-

थराद की जाहोजलाली और आभूध्रेष्ठी—

घरुवंशीय, परमार और नाडोल के चौहान इस प्रकार तीनों कुलों का थराद पर राज्य विक्रम की तेरहवीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध तक रहा। इतनी शताब्दियों तक हिन्दू राज्य रहने के कारण थराद व्यापार, कला, वाणिज्य, व्यवसाय, धन और ममृद्धि में गुर्जर और सौराष्ट्र के प्रमुख नगरों में गिना जाने लगा। इस नगर में जैनियों का मदा प्रभुत्व रहा। अनेक धनी मानी कोटीध्वज जैन यहां और इसके ग्रामों में रहते थे। विक्रमस० ११११ में जब मरुघरप्रदेश के प्रसिद्ध, ऐतिहासिक, समृद्ध नगर भिन्नमाल को जीत कर मुसलमानोंने नष्ट-भ्रष्ट किया, तब वहाँ से ग्यारह कोटीद्रव्य का स्वामी शखसेठ का वंशज महमाशाह और श्रीमाली-ज्ञातीय काश्यपगोत्रीय श्रे० जूना का वंशज थरादराज्य के अचवाड़ीग्राम में आकर बसे। इसी प्रकार श्रीमालीज्ञातीय षुद्धशाखीय इक्कीस कोटीद्रव्य के स्वामी सोमासेठ का वंशज तिहुअणसी(त्रिभुवनसिंह) और तीन कोटीद्रव्य का स्वामी श्रीमालीज्ञातीय चंडीसर का वंशज वीरदाम खेनप में आकर बसे। इस प्रकार थरादराज्य में विपुल धनशाली श्रीमन्तों का प्रभुत्व बढ़ता ही गया और वह अक्षुण्ण रहा। थराद में श्रीमालीज्ञातीय श्रेष्ठी संवपति आभू अधिक

गौरवशाली एवं प्रसिद्ध भीमन्त हुआ है, वह अपार वैभव-  
शाली था। जैसा वैभवपति था, वैसा ही वह धर्मानुष्ठी  
एवं उदार भीमन्त था। उसने अपनी आयु में तोनसौ माठ  
माधारण स्थितिवाले स्वधर्म ज्ञाति भाईयों को भीमन्त  
बनाया। तीर्थयात्रा में उमन चारह कोड़ स्वयं-महोर व्यय  
की। उसकी तीर्थयात्रा में ७०० जिनमन्दिर थे। उसने  
तीन छोड़ टक व्यय करके मर्ब आयमसत्रों की एक एक प्रति  
सुवर्णाक्षरों में और द्वितीय प्रति स्याही से लिखवाई तथा  
उसने मातो धमसेत्रों में साठ कोड़ द्रव्य व्यय किया।  
धिरापद्रगच्छ की उत्पत्ति बरादनगर में हुई। धिरापद्रगच्छीय  
वादिबेताल भीमान्तिहरि विक्रमसं० ११८५ में विद्यमान  
थे। इस गच्छ का जन्म बराद की उत्पत्ति का परिणाम है।

बराद के उत्पत्ति काल में वहाँ पर एक अति विशाल  
बौद्धमन्दिर बना था, जिसके १४४४ स्तम्भ थे। इस है कि  
आज वह नामशेष रह गया है। उस जगह आज केवल  
सृष्टिकामय जमीन है। यह सुसलमान बंधुओं का कार्य है।  
आज भी उस जगह पर दो फीट ऊँची इँटे निकलती हैं  
तथा समय समय पर अपूर्व खरीमरी के अनेक ललित  
प्रस्तरलच्छ निकलते रहते हैं। महाराजा गुर्जरप्रसाद  
कुमारपालने भी बराद में एक विशाल चतुर्भुज विनायक  
बनवाया था। एक प्रतिमा पर प्रसिद्ध, हेमचन्द्राचार्य का  
नामोल्लेख भी है। परन्तु तेरहवीं शताब्दि के श्राद्ध में

थराद पर यवनों का घातक आक्रमण हुआ और इस आक्रमण से थराद की जाहोजलाली को बड़ा घका लगा । १४४४ स्तम्भों का मन्दिर तथा कुमारपाल का बनवाया मन्दिर तोड़ डाला गया । थराद का व्यापार, वाणिज्य भी नष्ट हो गया । धीरे धीरे थराद की स्थिति सुधरी, परन्तु वह पूर्व की शोभा फिर नहीं आ पाई । सं० १२३० में थराद पर यवनों का आक्रमण हुआ था और सं० १३०० तक थराद यवनों के अधिकार में रहा । चौदहवीं शताब्दि के प्रारम्भ में पुनः इस पर नाडोल के क्षत्रियों का और नाव पर जैमा ऊपर कहा जा चुका है राणा पूजा के पुत्रने अपना राज्य पुनः स्थापित किया । इस प्रकार थरादराज्य के दो विभाग हो गये, परन्तु यवनराज्य तो समाप्त हो गया । चौदहवीं शताब्दि से थराद यवनों के आक्रमण से बचा और उसकी शोभा एवं समृद्धि तो घटी, परन्तु आबादी पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ पाया । क्योंकि यवनराज्य केवल सत्तर (७०) वर्ष पर्यन्त ही रहा, अधिक नहीं रह सका ।

इस शिलासंग्रह में २७३ शिलालेख तो केवल थराद के ही हैं । ये लेख थराद के जिनालयों में विराजित घातुमय चौबीशियों, पंचतीर्थियों और छोटी बड़ी प्रतिमाओं के हैं । इनमें जूना से जूना लेख ग्यारहवीं शताब्दि का है । शताब्दि चार लेखों की संख्या इस प्रकार है ।



गौरबघासी एवं प्रसिद्ध भीमन्त हुआ है, वह अपार वैभव-  
 घासी था। जैसा वैभवपति था, वैसा ही वह धर्मानुरागी  
 एवं उदार भीमन्त था। उसने अपनी आपु में तीनसौ माठ  
 माधारण स्थितिवाले स्वधर्मी ज्ञाति मार्यों को भीमन्त  
 बनाया। तीर्थयात्रा में उसने बारह कोड़ स्वर्ण-महोर ध्वज  
 की। उसकी तीर्थयात्रा में ७०० जिनमन्दिर थे। उसने  
 तीन कोड़ टंक व्यय करके सर्व आगमग्रन्थों की एक एक प्रति  
 सुवर्णखरों में और द्वितीय प्रति स्पाही से लिखवाई तथा  
 उसने मातो धमधेनों में सात कोड़ द्रव्य व्यय किया।  
 विरापद्रमण्ड की उत्पत्ति बरादनगर में हुई। विरापद्रमण्ड्रीय  
 वादिवेताल भीशान्तिहरि विक्रमसं० ११८५ में विद्यमान  
 थे। हम गण्ड का जन्म बराद की उन्नति का परिणाम है।

बराद के उन्नति काल में वहाँ पर एक अति विशाल  
 जैनमन्दिर बना था, जिसके १४४४ स्तम्भ थे। हाल है कि  
 आज वह नामशेष रह गया है। उस जगह आज केवल  
 मृत्तिकाभय जमीन है। यह सुसम्मान बंधुओं का कार्य है।  
 आज भी उस जगह पर दो फीट लम्बी हट्टे निकलती हैं  
 तथा समय समय पर अपूर्व कारीगरी के बनेक लंबित  
 प्रस्तरलक्ष्य निकलते रहते हैं। महाराजा गुर्जरमन्नाद  
 कुमारपालने भी बराद में एक विशाल चतुर्भुज शिनालक  
 बनवाया था। एक प्रतिमा पर प्रसिद्ध, हमचन्द्राचार्य का  
 नामोच्छेद भी है। परन्तु तेरहवीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध में

कि थराद में जैन-वस्ती घट अवश्य गई थी, परन्तु इतनी अवश्य रही कि जहाँ प्रसिद्ध प्रसिद्ध गच्छों का निर्वाह प्रायः हो सकता था। लेखों में सब से अधिक लेख पिष्पलगच्छ के हैं, फिर पूर्णिमा, ब्रह्माण और तपागच्छों के अन्य गच्छों के लेखों से अधिक हैं। परन्तु यह तो स्पष्ट है कि थराद में लगभग वींश गच्छों के अनुयायियों के या उनके अनुरागियों के घर रहे हैं। जहाँ एक साथ १०-१५ गच्छों के घर मिलते हों, वह नगर उस काल में अवश्य समृद्ध और उन्नत ही माना जायगा। शताब्दिवार लेखों में अधिक लेख पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दि के हैं। जिसमें सोलहवीं शताब्दि के तो १६० लेख हैं। ये लेख विविध गच्छों के भिन्न भिन्न आचार्यों के एवं श्रावकों के नामों से संग्रहित हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि थराद एक बार पुनः पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में समृद्ध, वैभवशाली और धर्मकृत्य, व्यापार-वाणिज्य में आगे बढ़ गया था। लेखों में ७० लेख श्रीमालीज्ञाति के हैं। अतः यह भी सिद्ध है कि थराद में श्रीमालीज्ञाति के घर अधिक संख्या में थे। केवल लेखों की संख्या पर ही गच्छ, समृद्धि और ज्ञाति का लेखन किया गया हो, सो बात नहीं है। विभिन्न संवत्, विभिन्न श्रावक और भिन्न भिन्न नाम के आचार्यों पर अधिक जोर रख कर ऐसा लिखा गया है।

विक्रमसं० १८६९ में थरादराज्य में मयंकर दुष्काल

शताब्दि	सेख संख्या	शताब्दि	सक संख्या
११	१	१५	१
१२	२	१६	१५६
१३	८	१७	२०
१४	१३	१८	३
			<hr/> २०३

### गण्डवार सेम्बों की संख्या ।

गण्ड	संख्या	गण्ड	संख्या
अंशस	१७	नागन्द्र	१०
भागम	४	निगम	२
उपकेस	२	पिप्पस	५०
कुरुभामति	२	पुर्णिमा	३०
कोरंट	२	बृहस्पता	२
स्वरतर	७	प्रयाण	२३
वेत्र	७	माषडार	१२
बीरापछी	४	बडेरक	२
तपा	२३	सरस्वति	२
पारापत्र	८	सैद्धान्तिक	१
धर्मपोष	४		<hr/> २२५

वेच केसों में गण्डनाम नहीं है ।

उपरोक्त दोनों अनुक्रमविधियों से यह सिद्ध होता है

कि थराद में जैन-वस्ती घट अवश्य गई थी, परन्तु इतनी अवश्य रही कि जहाँ प्रसिद्ध प्रसिद्ध गच्छों का निर्वाह प्रायः हो सकता था। लेखों में सब से अधिक लेख पिप्पलगच्छ के हैं, फिर पूर्णिमा, ब्रह्माण और तपागच्छों के अन्य गच्छों के लेखों से अधिक हैं। परन्तु यह तो स्पष्ट हैं कि थराद में लगभग वींश गच्छों के अनुयायियों के या उनके अनुरागियों के घर रहे हैं। जहाँ एक साथ १०-१५ गच्छों के घर मिलते हों, वह नगर उम काल में अवश्य समृद्ध और उन्नत ही माना जायगा। शताब्दिवार लेखों में अधिक लेख पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दि के हैं। जिसमें सोलहवीं शताब्दि के तो १६० लेख हैं। ये लेख विविध गच्छों के मित्र भिक्ष आचार्यों के एवं श्रावकों के नामों से संग्रहित हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि थराद एक बार पुनः पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में समृद्ध, वैभवशाली और धर्मकृत्य, व्यापार-वाणिज्य में आगे बढ़ गया था। लेखों में ७० लेख श्रीमालीज्ञाति के हैं। अतः यह भी सिद्ध है कि थराद में श्रीमालीज्ञाति के घर अधिक संख्या में थे। केवल लेखों की संख्या पर ही गच्छ, समृद्धि और ज्ञाति का लेखन किया गया हो, सो बात नहीं है। विभिन्न संवत्, विभिन्न श्रावक और मित्र भिक्ष नाम के आचार्यों पर अधिक जोर रख कर ऐसा लिखा गया है।

विक्रमसं० १८६९ में थरादराज्य में मयंकर दुष्काल

पड़ा और अनेक कुल पराद छोड़ कर अल्पत्र चले गये । अहमदाबाद, पालनपुर रावनपुर, डीसा, धानेरा, बाँयवरा, चढावरा, बीसनगर, बीरमगाम, और काठीयाबाद नगरों में तथा दक्षिण में पूना आदि नगरों में ऐसे अनेक कुल हैं जो 'परादरा' कहलाते हैं । इन कुलों में से अनेक लोग सुधार करने के लिये पराद में नाजदेवी और समकाठ देवी के दर्शनो को प्रतिवर्ष जाते हैं । इस समय पराद में श्वेताम्बर जैनो के ६०० घर आबाद हैं और ४ भीमाठ जैन कहाते और सभी त्रिस्तुतिक आमनाय वाले हैं ।

मन् १९४८ में इन पक्षियों के छेसक को आचार्य दश भीमविजयपतीद्रसरीश्वरजी महाराज के दर्शनार्थ पराद जाने का अवसर प्राप्त हुआ था । मैं परादनगर को दूर दूर तक उसक बाहर घूम कर देखा अनेक दर और समूहे दर देखे । कलापूर्ण प्रस्तर-सभ्य देखे । अधिक आकर्षित करनेवाली एक मस्जिद देखी जो राजप्रासाद के सिंहास के बाई और है । उसमें जैनमन्दिरों के लण्डित पत्थर लगे हुए देखे । आंगन में एक सबड़ा हुआ था, जो सुना क्यूँ रहा था कि मैं मन्दिर की देहली के बाहर का परपर काल के अनेक उरपाठ सहन करके भी पराद सुली, समुद्र और गौरवघाटी है ।

( १९३ )

श्रीवीरचैत्य में वासुपूज्यमन्दिर की धातु पंचतीर्थियों

( १ )

सं० १५०५ माघ शु० ९ शनिश्चरवार के दिन धंधुका निवासी श्रीमालज्ञातीय व्यव० पर्वत भार्या खीमल-देवी पुत्री मांजुबाईने अपने कल्याणार्थ आगमगच्छीय श्री हेमरत्नसूरिगुरु के उपदेश से श्रीसुविधिनाथ का पंचतीर्थी विंव प्रतिष्ठित करवाया ।

( २ )


सं० १५१५ ज्येष्ठ शु० ९ शुक्रवार के दिन गुर्जगवाड़ा निवासी श्रीमालज्ञातीय व्यव० जेमा भार्या जानूदे पुत्र मूल-चंदने पूर्णिमागच्छीय श्रीसाधुरत्नसूरि के उपदेश से श्रीसु-विधिनाथ का पंचतीर्थी विम्ब करवा कर उसकी प्रतिष्ठा करवाई ।

( ३ )

सं० १५१३ पौषक० ५ रविवार को श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि-महाजन घना, सारग, गेला, घर्मा, राजा, दूदा, नारद आदि कुटुम्बियोंने चैत्रगच्छीय श्रीलक्ष्मीदेवसूरि के द्वारा पूर्वज सांगा के निमित्त श्रीअजितनाथ प्रतिमा(पंचतीर्थी) प्रतिष्ठित करवाई ।

सं० १५८३ ज्येष्ठ शु० ११ बुधवार के दिन उपस  
( उपकण्ठगण्ठीय ) श्रीकुरुदाचार्यसन्तानीय उपकेशवातीय  
श्रेष्ठिगोत्रीय (संठिया) श्राह महाराज पुत्र ससत्त्वर्ण भार्या  
पुंजारदबी पुत्र हरिराजन मा० हेमादबी पुत्र मीमराज सहित  
श्रीशान्तिनाथ का पंचतीर्थी विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
श्रीयद्यदेवधरि द्वारा हुई ।

सं० १५३६ श्रीभीमालहातीय ज्य० नाबा मा० धर्मिणी  
बाई पुत्र रत्नामज मा० गूरीबाई, शिवदत्तम स्वभार्या कुञ्जरि  
बाई आदि परिव्रजनों के सहित श्रीशान्तिनाथ का विम्ब  
अपने आता रत्नामज के कस्यानार्थ पूर्णिमापक्षीय श्रीगुम्ब  
रत्नधरि क उपदक्ष से करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विधिपूर्वक  
काकरग्राम में हुई ।

सं० १५२८ वैशाखशु० ३ शनिवार के दिन श्रीभीमाल  
हातीय ज्य० लहरा ( सद्पन ) मा० फरूबाई पुत्र मोटाक  
( मोटमस )ने अपने पिता माता एवं पितामह बापा और  
अपने कस्याज के लिए श्रीशान्तिनाथप्रभु का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा पिम्पसमण्ठीय  श्रीधर्म  
सागरधरिके द्वारा भोवसीग्राम

( १९७ )

इस विम्ब की प्रतिष्ठा होनेकी तिथि यही है जो लेखाङ्क ५ में है । दोनों लेखों में आचार्य, संवत् और ग्राम भोगली ही है । अतः वणचीर और उदिरा महोदर हैं ।

( १३ )

सं० १४१७ वैशाखशु० २ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० लीम्बा, भा० नामलदेवी पुत्र महजाने भा०  
सहजलदेवी पिता लीम्बा के कल्याणार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी  
का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीउदया-  
नन्दसूरिके पट्टाधीश श्रीगुणदेवसूरिके द्वारा हुई ।

( १४ )

सं० १४९५ आषाढशु० ९ रविवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० गोरा भा० देल्हणदेवी के  
पुत्र भारमल भा० पोमादेवी के पुत्र हूंगर और भास्वरने  
पितृजनों के श्रेयार्थ श्रीधर्मनाथजी का विम्ब करवाया, जो  
श्रीमद् जज्ञगसूरिके पट्टाधीश पञ्जुनसूरिके द्वारा प्रति-  
ष्ठित हुआ ।

( १५ )

सं० १४२९ माघकृ० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० अभयसिंह भा० आल्हणदेवीने पितृ कमा-  
(कर्मचन्द्र) के कल्याणार्थ श्रीमूलनाथक पार्श्वनाथप्रभु का  
श्रेयस्कर विम्ब श्रीनरप्रमसूरिके उपदेश से करवाया ।



( १९४ ) ✓

( ४ )

सं० १५०१ पौषकृ० ६ श्रीभीमालङ्कातीय मन्त्रीसन्ताने पिता भे० जेसिम(अयसिंह), माता पत्रापदी, स्वमार्पा राष्ट्रवाइने माता-पिता, पुत्र के भेयोर्ष सिद्धान्तयच्छीय श्रीसोमचन्द्रहरि के द्वारा भीष्मपुनापत्री का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया । पर में सर्वत्र सौभाग्य हो ।

( ५ )

सं० १५२८ वैशाख शु० ३ अतिवार के दिन मोरसी ग्राम निवासी श्रीभीमालङ्कातीय म्य० बापा मार्पा रतनदेवी के पुत्र बनधीरने पिप्पलगाच्छीय त्रिमयीया मङ्गा० श्रीपर्मसागरहरि के द्वारा श्रीबिमलनाथ प्रभु का पंचतीर्थी विम्ब स्वमार्पा धापीदेवी, माता, पिता और पितृजनो के भेषार्प प्रतिष्ठित करवाया ।

( ६ )

सं० १४२१ वैशाखशु० ५ अतिवार के दिन पुत्र देला कने नागेन्द्रगच्छीय भीगुबाकरहरि के द्वारा अपने पिता अपन्त, माता अयतसदेवी और पितृम्य कर्मज (कर्मराज) क भेय के छिये श्रीपार्थनाथ प्रभुका पंचतीर्थी विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ७ ) ✓

सं० १४३३ वैशाखशु० ९ अतिवार के दिन कोरपूरक

गच्छीय श्रीनन्नाचार्यानुयायी ओसवालज्ञातीय मंडपुत्र-  
शाखीय(भणशाली) श्रे० महिमदेव भा० मंदोदरी के पुत्र  
नरश्रेष्ठीने स्वमाता पिता के श्रेयके लिये श्री शान्तिनाथप्रभु  
का पंचतीर्थी विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीभावदेव-  
सूरिने की ।

( ८ )

स० १५१९ मार्गसिर गुरुवार के दिन श्रीमालज्ञातीय  
लघुशाखीय व्य० जेसा (जसराज) भार्या हरखू (हर्षाबाई)  
के पुत्र व्य० राजाने स्वभार्या भवकूबाई सहित अपने कल्या-  
णार्थ पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरि के उपदेश से श्रीपार्श्व-  
नाथ का पंचतीर्थी विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ९ )

सं० १५१२ मार्गसिर शुक्ला पूर्णिमा सोमवार के दिन  
भावडारगच्छीय श्रीमालज्ञातीय व्य० पद्मराज, भा०  
पाल्हणदेवी पुत्र माला( मालराज ) भा० माल्हणदेवी पुत्र  
रत्नराज, पर्वत, संघा, मोकल, देवा, जाणा ( ज्ञानराज )  
सहित व्य० मालाक(मालराज)ने अपने पितामह के भ्राता  
व्य० घड़मिह के कल्याणार्थ श्रीसुमतिनाथ का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीकालकाचार्यसन्तानीय पूज्य  
श्रीवीरसूरि के द्वारा हुई ।

( १९४ ) ✓

( ४ )

सं० १५०१ पौषकृ० ६ भीभीमासुद्धाठीय मन्त्रीसन्ताने पिता भे० जसिग(अयसिंह), माता पत्रापरी, स्वमार्या राजूबाईने माता-पिता, पुत्र क भेयोर्धे सिद्धान्तगन्धीय भीसोमचन्द्रसरि क द्वारा भीहनुनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया । पर में सर्वत्र सौभाग्य हो ।

( ५ )

सं० १५२८ वैशाख शु० ३ अतिवार के दिन मोमठी ग्राम निवासी भीभीमासुद्धाठीय स्व० बापा मार्या रतनूदेवी क पुत्र बनबीरन पिप्पलगण्ठीय त्रिमयीया मन्ना० भीषर्म-सागरसरि के द्वारा भीषिमरुनाथ प्रभु का पंचतीर्थी बिम्ब स्वमार्या घापीदेवी, माता, पिता और विह्वनों के भेषार्थ प्रतिष्ठित करवाया ।

( ६ )

सं० १७२१ वैशाखशु० ५ अतिवार के दिन पुत्र देसा-कमे नागेन्द्रगण्ठीय भीगुणाकरसरि के द्वारा अपने पिता अयन्त, माता अयतलदेवी और विह्व्य कर्मज (कर्मराज) क भेष के लिये भीषार्धनाथ प्रभुका पंचतीर्थी दि१५ प्रतिष्ठित करवाया ।

( ७ ) ✓

सं० १७२६ वैशाखशु० ९ अतिवार के दिन खोरपट्टक-

गच्छीय श्रीनन्नाचार्यानुयायी ओमवालज्ञातीय मंडपुत्र-  
शाखीय(भणशाली) श्रे० महिमदेव मा० मंदोदरी के पुत्र  
नरश्रेष्ठिने स्वमाता पिता के श्रेषके लिये श्री शान्तिनाथप्रसू  
का पंचतीर्थी विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा श्रीभावदेव-  
सूरिने की ।

( ८ )

सं० १५१९ मार्गसिर गुरुवार के दिन श्रीमालज्ञातीय  
लघुशाखीय व्य० जेसा ( जमराज ) भार्या हरखू ( हर्षाबाई )  
के पुत्र व्य० राजाने स्वभार्या भवकूबाई सहित अपने कल्या-  
णार्थ पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरि के उपदेश से श्रीपार्श्व-  
नाथ का पंचतीर्थी विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ९ )

सं० १५१२ मार्गमिर शुक्ला पूर्णिमा सोमवार के दिन  
भावडारगच्छीय श्रीमालज्ञातीय व्य० पद्मराज, मा०  
पालहणदेवी पुत्र माला( मालराज ) मा० मालहणदेवी पुत्र  
रत्नराज, पर्वत, संघा, मोकल, देवा, जाणा ( ध्यानराज )  
सहित व्य० मालाक( मालराज )ने अपने पितामह के भ्राता  
व्य० घड़मिह के कल्याणार्थ श्रीसुमतिनाथ का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीकालकाचार्यसन्तानीय पूज्य  
श्रीवीरसूरि के द्वारा हुई ।

✓ (१०६)

( १० )

सं० १५८३ ज्येष्ठ शु० ११ शुक्रवार के दिन उपस  
( उपरुद्रगण्डीय ) श्रीकृष्णार्चसन्तानीय उपकेड्डातीय  
श्रेष्ठिगोत्रीय (सठिया) छाह महाराज पुत्र प्रसन्नार्थ मार्या  
पुंभारदेवी पुत्र हरिराजन मा० हेयादवी पुत्र भीमराज सहित  
श्रीशक्तिनाथ का पञ्चतीर्थी विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
भीषमदेवद्वारि द्वारा हुई ।

( ११ )

सं० १५३६ श्रीश्रीमाठजातीय ज्य० नाथा मा० चर्मिणी-  
बाई पुत्र रत्नामज मा० गूरीबाई, शिवदत्तने स्वभार्या कुम्हारि  
बाई जादि परिवर्तों क सहित श्रीशक्तिनाथ का विम्ब  
अपने भ्राता रत्नामज के कर्याणार्थ पूर्णिमापक्षीय भीपुण्य  
रत्नद्वारि क उपदक्ष स करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विधिपूर्वक  
काकरग्राम में हुई ।

( १२ )

सं० १५२८ वैशाखशु० ३ अतिवार के दिन श्रीश्रीमाठ  
जातीय ज्य० ठदिरा ( ठदपन ) मा० फरूबाई पुत्र मोटाक  
( मोटमस )ने अपने पिता माता एव पितामह बापा और  
अपने कर्याण क लिए श्रीशक्तिनाथप्रसू का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा पिण्यरुद्रगण्डीय त्रिमयिया महाराज भीषम  
सागरद्वारिक द्वारा मोयलीग्राम में हुई ।

( १९७ )

इस विम्ब की प्रतिष्ठा होनेकी तिथि वही है जो लेखाङ्क ५ में है । दोनों लेखों में आचार्य, संवत् और ग्राम भोयली ही है । अतः वणवीर और उदिरा महोदर हैं ।

( १३ )

सं० १४१७ वैशाखशु० २ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० लीम्बा, मा० नामलदेवी पुत्र महजाने मा०  
सहजलदेवी पिता लींबा के कल्याणार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी  
का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीउदया-  
नन्दसूरिके पट्टाधीश श्रीगुणदेवसूरि के द्वारा हुई ।

( १४ )

सं० १४९५ आपाढशु० ९ रविवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० गोरा मा० देल्हणदेवी के  
पुत्र भारमल मा० पोमादेवी के पुत्र हूंगर और भाखरने  
पितृजनों के श्रेयार्थ श्रीधर्मनाथजी का विम्ब करवाया, जो  
श्रीमद् जज्ञगसूरि के पट्टाधीश पञ्जुनसूरि के द्वारा प्रति-  
ष्ठित हुआ ।

( १५ )

सं० १४२९ माघकृ० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० अमरसिंह मा० आल्हणदेवीने पितृ कमा-  
(कर्मचन्द्र) के कल्याणार्थ श्रीमूलनायक पार्श्वनाथप्रभु का  
श्रेयस्कर विम्ब श्रीनरप्रमसूरि के उपदेश से करवाया ।

( १९८ )

( १९९ )

सं० १५०१ चौपङ्क० ९ बुनिवार के दिन मचलगण्डे-  
धर श्रीमपकीर्तिहरि के उपदेश से छा० काखू भार्या  
कमलादेवी पुत्र हरिननन स्वस्ती मासूजदेवी के कस्याचार्य  
श्रीमदितनाथ का विम्ब करवाया और यह भीसंप द्वारा  
प्रतिष्ठित हुआ ।

( १७० )

सं० १५१३ चौपङ्क० ५ रविवार क दिन बाबीग्राम  
निवासीश्रीभीमासहायीय जे० तिहुपा(त्रिभुवन) मा०  
कमादेवी के पुत्र डादान मा० चारणपट्टी और मेष् पुत्र  
माखर महित माता पिता के कस्याचार्य श्री मदितनाथ का  
विम्ब करवाया, जो पित्रगण्ठीय म श्रीलक्ष्मीदेवहरि क  
द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

( १८० )

सं० १५११ माचङ्क ५ सोमवार (गुरुवार) क दिन  
श्रीभीमासहायीय ज्य० बानर के पुत्र जोपराम की स्त्री रत्न-  
बाईन अपन पति क आत्मकस्याच के लिय श्रीवितस्वामि  
श्रीकृष्णनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीराम  
तिलकहरि क उपदेश स श्रीहरि द्वारा हुई ।

---

१ जेकाह ९४ १९१ १५६ को देखते हुए सोमवार के  
काव पर गुरुवार ही जाविये ।

( १९९ )

( १९ )

सं० १५०९ माघशु० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
झातीय श्रे० सोना( मोनमल ) ने स्वभार्या गजीबाई,  
भ्राता बदा ( वृद्धिचन्द्र ), भा० पूरीबाई के निमित्त श्री-  
सुमतिनाथ का विम्ब करवाया, जो सिद्धान्तगच्छीय श्री-  
सोमचन्द्रस्वरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

( २० )

सं० १३४९ ज्येष्ठशु० २ भावहारगच्छीय शा० सोमा  
( सोमचन्द्र ) भा० सोमश्री के पुत्र छाडा, नागा, गजधरने  
स्वमातृ के कल्याणार्थ श्रीपार्श्वनाथ का विम्ब करवाया, जो  
श्रीविजयमिहस्वरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

( २१ )

सं० १४३२ फाल्गुनशु० २ शुक्रवार के दिन श्रीश्री-  
मालझातीय व्य० बागमल भार्या विजयश्री के कल्याणार्थ  
पुत्र विजयकर्णने श्रीनरप्रमस्वरि के उपदेश से श्रीवासुपूज्य-  
स्वामी का विम्ब करवाया ।

( २२ )

सं० १५०९ माघशु० १० शनिवार के दिन थिरापट्टे  
निवासी श्रीश्रीमालझातीय पितामह हापा पितामही हासल-  
देवी पुत्र चूंडा भा० चांपलदे सुत देवाने भा० लूणादे सहित



पिता माता, पितृमन चापा, इमा भाहू बीमा और अन्य सर्व पूर्वजों के कस्याचार्य श्रीश्रीरत्ननाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिम्पलगच्छीय श्रीसोमपन्द्ररि क पहावीय श्री उदयदररि के द्वारा हुई ।

सेठों की सेरी के श्रीवीरचैत्य की चौबीशी तथा पचसीपिया—

( २३ )

सं० १४८३ ज्येष्ठकृ० ८ रविवार के दिन श्रीभीमाठ राष्ट्रीय व्य० सिम्बा मा० ससमादे पुत्र सरुसा मा० प्रेमलदे पुत्र गोसा, सीम्बा, सिंहने अपने माता पिता क कस्याचार्य श्री मेमिनाचप्रसू का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा ब्रह्माव गच्छीय श्रीवीररि क पहावीय श्रीमधिपन्द्ररिने की ।

( २४ )

सं० १५०५ वैशक० १३ रविवार के दिन रावरनिवासी श्रीब्रह्माण्डगच्छीय श्रीभीमाठरातीय व्य० बाबय पुत्र मेवा ( मेपराय ) मार्या श्रीमसदेवी पुत्र सीमा, गोसठ, देसठ, गासठ की पुत्री सिमारदे पुत्र बडुमा, कर्मसिंहने अपने पितृजनों के भेषार्थ श्रीदिमठनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भीपञ्चन(प्रपुत्र)रिने की ।

( २५ )

सं० १५२५ फागुनशु० ७ शनिवार क दिन उदपादा-

( २०१ )

निवासी श्रीश्रोमालझातीय झाहु रामा श्रे० कुंमा, मा० काश्मीरश्री पुत्र लापाकने मा० फलीबाई, पुत्र घना, मा० झाबलीबाई, पांची बाई, पुत्र मेहराज आदि कुटुम्ब महित अपने कल्याणार्थ श्रीगान्तिनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा ब्रह्माणगच्छीय श्रीवीरसरिने की ।

( २६ )

सं० १५२८ चैत्रकृ० १० गुरुवार के दिन श्रीश्रीवंशीय मंत्री सांगा मा० टीवूबाई पुत्र मं० सुश्रावक रत्नाने मा० धारिणीदेवी पुत्र वीरा, हीरा, नाना, बाबा महित पितृव्य मंत्री सहसा के श्रेयार्थ अचलगच्छीय गुरु श्रीजयकेशरसरि के उपदेश से श्रीसुविधिनाथ प्रभु का चिम्ब करवाया और प्रतिष्ठा श्रीसंघने करवाई ।

( २७ )

सं० १६१७ ज्येष्ठ शु० ५ काकरग्राम निवासी श्रीश्री-मालझातीय श्रे० नवा मा० घनीबाई पुत्र श्रे० घरणा मा० प्रोमी पुत्र जेसा रत्नाने श्रीविमलनाथप्रभु का चिम्ब नागेन्द्रगच्छीय मट्टा० श्रीधरसघसरि के पट्टाधीश मट्टा० श्रीज्ञानसागरसरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २८ )

सं० १५१३ माघकृ० ७ बुधवार के दिन प्राग्वाट-झातीय लघुसन्तानीय परीक्षक बाला (बालचन्द्र) मा० डाही-

( २०२ )

बाई पुत्र मोघा(मोन्नराज) से मा० हाडीबाई, पुत्र नाया,  
सज्जन सहित पिठा याठा के कन्याचार्य श्रीमान्तिनाथ का  
विम्ब करवाया, जो पूर्णिमापञ्चीय श्रीमाधियामङ्गा० श्रीजय  
शेखरेश्वरि के उपदेख से लायताग्राम में प्रतिष्ठित हुआ ।

( २९ )

सं० १५८० वैशाख शु० १३ शुकवार के दिन श्री  
भीमालहाडीय सं० हीरा मा रासीबाई पुत्र मई० हेमा  
मा० इमीरवे पुत्र सं० तेजाने मा० नीतिबाई, पुत्र इंयर,  
भूंयर, माया सहित अपने कन्याचार्य श्रीसुपायनाथ का विम्ब  
पूर्णिमापञ्चीय श्रीपुष्परत्नेश्वरि के पञ्चाशीष्ठ श्रीसुमतिरत्न  
ेश्वरि के उपदेख से विधिपूर्वक प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३० )

सं० १५१७ वैशाखशु० ३ कातुमा निवासी प्रतापट  
हाडीय प्य कृपा मा० रूडीबाई पुत्र देवसी( देवसिंह )  
मा० बाह्डीबाई पुत्र देवाळ( देववाळ )ने भांडा( मडपाळ )  
आदि हनुमन् सहित अपने कन्याचार्य श्रीविमलनाथ का  
विम्ब करवाया, जो तपागञ्चीय श्रीरत्नशेखरेश्वरि के पञ्चर  
श्रीतन्मीसागरेश्वरि द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

( ३१ )

सं० १५६३ आशुम शु० ८ शनिवार के दिन बिरा

( २०३ )

पट्टनगर निवासी श्रीश्रीमालझातीय आजु( अर्जुन ) मस्वा  
न्य० मेघा पुत्र आशा भा० अमरीबाईने अपने कल्याणार्थ  
जीवितस्वामि-श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का चिम्ब करवाया, जो  
श्रीपूर्णिमापक्षीय भ० श्रीसुमतिनाथप्रभस्वरि के द्वारा प्रतिष्ठित  
हुआ ।

( ३२ )

सं० १५१६ संघवी गेलाने ( पूर्णिमापक्षीय ) श्रीगुण-  
धीरस्वरि के उपदेश से श्रीगौतमस्वामी का चिम्ब मपरिकर  
करवाया ।

( ३३ )

सं० १६५१ फाल्गुनक० १० शनिवार के दिन थिरापट्ट  
निवासीने श्रीमुनिसुव्रतस्वामी का चिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३४ )

सं० १२९१ माघ शु० ५ गुरुवार के दिन पिप्पल-  
गच्छानुयायी व्य० वीरा( वीरचन्द्र ) पुत्र झाझणने तथा  
पुत्र नेनक, नेढक, ब्रह्मा, केशुने तथा आम्रदेवने श्रीअयभ  
देव के मन्दिर में दो कायोत्सर्गस्थ जिन-चिम्ब करवाये ।  
हम चैत्य का जीर्णोद्धार बला अभयकुमार आदि कुटुम्ब  
समुदायने करवाया । प्रतिष्ठाकार्य श्रीसर्वदेवस्वरि के द्वारा हुआ ।

लेख में दो कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा होने का उल्लेख है,  
परन्तु वर्तमान में यह एक ही प्रतिमा विद्यमान है जो

मध्य अति चमत्कार पूज और श्रेतवर्ष ६८ ईंसी बड़ी प्रस्तर प्रतिमा है। इस समय यह बीरप्रसू के मंदिर में उनके दहिने भाग में स्थापित है। बीरप्रसू की विशाल प्रतिमा के छिमे एक त्रिस्तंभरी मन्दिर चरादसुष की ओर से बन रहा रहा है, उसीमें बीरप्रसू के साथ यह प्रतिमा स्थापित होगी।

आदिनाथवैद्य में चौबीसी-पञ्चतिथियाँ—

( ३५ )

सं० १५१९ भाषकृ० २ शनिवार के दिन कोहर निवासी श्रीभीमासहायीय भ० साया भा० साहादेवी पुत्र वास्ता, हासा, भा० हमीरदेवी पुत्र बेला, गेला न बेला की श्री बचस्रदेवी सहित पिता, मातृगण और पूर्वजों के श्रेयाय भीष्मसनाय चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जो विष्णुगण्डीय श्रीमनिमुन्दरधरि के पट्टपर श्रीचमरचन्द्रधरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

( ३६ )

सं० १५१५ वैशाख २ गुरुवार के दिन सत्यपुर ( मांभोर ) निवासी श्रीभीमासहायीय परीकृत खेता मा० खेतलदेवी पुत्र ईशर मा० रामलदेवी पुत्र मोकल मा० मदि गलतबीने पुत्र बरुता सहित अपने पिद्वानों के कस्यानार्थ श्रीवितस्वामि श्रीआदिनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, त्रिस्तंभी प्रतिष्ठा विष्णुगण्डीय श्रीचन्द्रप्रमधरि द्वारा हुई।

( २०५ )

( ३७ )

सं० १५०८ पौषकृ० ३ सोमवार के दिन काकरग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय भंडारी भोला भा० वाहीवाईने अपने कल्याणार्थ जीवितम्बामि श्रीविमलनाथ का चिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा चैत्रगच्छीय धारणपट्टी म० श्री-ज्ञानदेवहरिने की ।

( ३८ )

सं० १५३४ ज्येष्ठशु० १० के दिन प्राग्गटज्ञातीय व्य० गोपाल भा० लाखीवाई पुत्र व्य० लाखा ( लक्ष्मण ) भा० कीमीवाईने प्रमुख परिजनो के महित अपने कल्याणार्थ श्री-शान्तिनाथ का चिम्ब करवाया, जिसकी तपामच्छीय श्री-सोमसुन्दरहरि, मुनिसुन्दरहरि श्रीरत्नशेखरहरि के पट्टहर श्रीलक्ष्मीमागरहरिने प्रतिष्ठित किया ।

( ३९ )

सं० १५३३ वैशाखशु० ६ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० कर्मसिंह भा० लाछीवाई पुत्र श्रे० मामाकने अपनी भार्या देवलीवाई के महित माता पिता और आत्म-श्रेयार्थ श्री सुविधिनाथ का चिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा थरादनगर में नागेन्द्रगच्छीय भट्टा० श्रीगुणदेवहरिने की ।

( ४० )

सं० १५२२ पौषकृ० १ गुरुवार के दिन उपकेशज्ञातीय

( २०१ )

भेष्टिगोत्रीय महाजन मोला पुत्र म० बनराजने मा० साव्हा देवीन म० लीश क पुण्यार्थ भीष्मीठठनाथ का विम्ब कराया, जिसकी प्रतिष्ठा पारकरनगर में उपकथमच्छीय भीष्मकुरा चार्धमन्तानीय भी ककहरिने की ।

( ४१ )

सं० १७५७ माघशु० ५ के दिन पिरापद्रनिवासी भी भीमालङ्कातीय बृद्धशास्त्रा में बोहरा ( बहुपरा ) देवराजने मा० मानीबाई, पुत्र सो० बासा, साकला पुत्र मोधराबादि सहित स्वभेयार्थ श्रीसंभवनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय महा० श्रीविजयप्रभसुरि के पट्टाधीय संविद्यवाधीय महा० श्रीज्ञानविमलसुरिने की ।

( ४२ )

सं० १५१० माघशु० ४ रविवार के दिन श्रीभीमालङ्कातीय व्य० मोला मा० भावळदवी के पुत्र स्यसिंहने आता हीमला के पुण्यार्थ तथा अपने परिश्रमों क भेयार्थ श्री पान्तिनाथपत्नीर्षी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा विष्णुगच्छीय त्रिमविपागच्छनाथक ओधर्मशेखरसुरिने बिरपद्र( वराद ) नगर में की ।

( ४३ )

सं० १५०९ वैशाखशु० ८ रविवार के दिन पारापद्रनगर

( २०७ )

निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० मोला पुत्र सं० लूणसिंह  
भा० लूणादेवीने निज श्रेयार्थ जीवितस्वामि श्रीश्रेयांसनाथ  
का पंचतीर्थी विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा पिप्पल-  
गच्छीय त्रिभवीयागच्छनायक भट्टा० श्रीधर्मशेखरसूरिने की।

( ४४ )

सं० १५१७ माघशु० १० बुधवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० शार्दूलमल पुत्र  
भारमलने अपनी भार्या कर्पूरदेवी, पुत्र डाहा, वेला, और  
माता पिता के कल्याणार्थ श्रीअजितनाथ का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा मर्हडका ग्राम में श्रीपञ्जूनसूरि (प्रद्युम्नसूरि)  
ने की।

( ४५ )

सं० १५०८ वैशाखकृ० ४ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० नयनराजने भा० टही कुवाई, पुत्र लक्ष्मण,  
हेमराज, दूदराज आदि परिवार सहित पितृव्य कुतुहण भा०  
हासुवाई के श्रेयार्थ श्रीशीतलनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा सिद्धान्तगच्छीय श्रीसोमचन्द्रसूरिने की।

( ४६ )

सं० १५०६ वैशाखशु० ८ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्यव० वरसिंह भा० तिल्लुश्रीने निजश्रेयार्थ जीवित-



स्वामि श्रीभेषासनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विष्णुहयच्छीय त्रिमयीया श्रीवर्मदेश्वरेश्वरिन की ।

( ४७ )

सं० १३१८ माघशु० १३ प्राग्वाट सोनीगोत्रीय सामा की पुत्री सोनीदेवीन श्रीमादिनाथ प्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तथागच्छीय श्रीविद्यपदानेश्वरिने की ।

( ४८ )

सं० १५१० माघशु० १ छुडवार के दिन उपकेन्द्र ब्रह्म में मण्डलासीमोत्रीय महाजन माला मा० मास्वदेवी के पुत्र काका भावकने अपने वन्दुमय गुणिया, ईमर, पुत्र मादा, बदा, राजा प्रभुस परिवार सहित श्रीशान्तिनाथ का विम्ब स्वपुष्पार्थ करवाया, जो सारतरगच्छीय श्रीविद्यप-  
राजेश्वरि क पदुपर श्रीविनमद्वेश्वरि क द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

( ४९ )

सं० १५२८ वैशाखशु० ५ गुरुवार क दिन प्राग्वाट ज्ञातीय संपरी कासा मा मास्वदेवी पुत्र सं० रत्ना मा० साम्बुर्बाई सं० श्रीमाक ( श्रीमराज ) न मा० इक्ष्मति परिवार सहित स्वकस्याथार्थ बृहत्पापघीय श्रीज्ञानसाधरेश्वरि के द्वारा श्रीसुविदिनाथ का विम्ब कराया ।

( ५ )

सं० १७९९ कार्तिकशु० १५ गुरुवार के दिन

( २०९ )

श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० खीदा मा० काठवाई पुत्र घोराने अपने कल्याणार्थ श्रीशीतलनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिष्पलगच्छीय त्रिभवीया म० श्रीधर्मशेखरसूरिने थिरापद्रपुर में की ।

( ५१ )

सं० १२६३ वैशाखशु० ६ गुरुवार के दिन शा० टीला पुत्र शा० लूणाने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीदेवसूरि के शिष्य श्री-वयरसेनसूरिने की ।

( ५२ )

सं० १५३४ वैशाखकृ० १० रविवार ( सोमवार ) के दिन प्राग्वाटज्ञातीय व्यव० शैलराज भा० तेजूबाई पुत्र अजा( अजयराज ) भा० वमीबाई पुत्र नरपालने पितृव्य व्य० वाछा( वत्सराज ) डाहा, पांचा आदि परिजनों सहित श्रीश्रेयांसनाथ का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा हीसा-नगर में श्रीसूरिने की ।

( ५३ )

सं० १६१५ चैत्रकृ० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-

---

१ लेखाङ्क ३०२ में सोमवार लिखा है ।

( २१० )

द्वितीय महाजननी सोमराज मा० समरकण्ठदेवी, द्वितीया मा०  
मृगादेवी के पुत्र बाछान माता, पिता, पिदुघनों के भेयार्थ  
भीष्मद्रुमस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
पूर्वमागष्ठीय भीषीरप्रमद्वरि के पङ्कपर भीष्मद्रुमप्रमद्वरिने  
सविधि की ।

( ५४ )

सं० १४९७ वैशाख० ६ शुक्रवार के दिन पडली  
नगर निवासी भीसाबासद्वितीय भे० कठ्ठा मा० माहू के  
पुत्र समधरन मा० छाह्री( सफ्ती ) के सहित अपने पिता  
क कस्याबाब भीसुपार्थनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा पूर्वमापष्ठीय भीमागिया भीष्मद्रुमप्रमद्वरि के उप  
देश से हुई ।

( ५५ )

सं० १३४० वैशाख० ५ शुक्रवार के दिन भीमन्यं  
बडनेगुरु के उपदेश से साधुप्रमसिंहसुनि के द्वारा प्रतिमा  
( प्रतिष्ठित ) करवाई ।

( ५६ )

सं० १५१५ माघ० १ शुक्रवार के दिन भीभीमास  
द्वितीय पिता देपास, माता पापुबाई के भेयार्थ उनके पुत्र  
सीमा और खेताने भीनमिनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी

( २११ )

प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीमाधुरत्नसूरि के उपदेश से हडिया-  
नगर के श्रीसंघने की ।

( ५७ )

सं० १३६९ वैशाखकृ० ८ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय  
परीक्षक मंडराज के श्रेयार्थ उसके पुत्र पाताने श्रीचतुर्विंशति-  
तीर्थकरो का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय  
श्रीभुवनानन्दसूरि के शिष्य श्रीपद्मचन्द्रसूरिने की ।

( ५८ )

सं० १४८८ ज्येष्ठशु० ३ सोमवार के दिन श्रीमालज्ञातीय  
माहणसिंह जयन्तसिंह मा० जयतलदेवी पुत्र वीरधवल हरि-  
धवल विक्रमने एकमत होकर मातापिता और स्वकल्याणार्थ  
श्रीविमलनाथ चतुर्विंशति जिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
त्रिभुविया पिप्पलाचार्य श्रीधर्मशेखरसूरिने की ।

( ५९ )

सं० १५१७ पौषकृ० ५ (गुरुवार) के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्यव० माहण पुत्र व्य० सूरामा० सुहवदेवी  
पुत्र व्य० सुदा, राणाने अपने कल्याणार्थ श्रीशान्तिनाथ  
चतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय  
त्रिभुविया म० श्रीधर्मशेखरसागरसूरिने थरादनगर निवासी  
सर्व पूर्व पुरुषों की शान्ति बढ़ाने के लिये की ।

( २१२ )

( ६० )

सं० १४८२ वैशाख० ४ गुरुवार के दिन श्रीश्री  
मासहातीय म्य० छविरे मा० हांसलदेवी पुत्र मोला मा०  
मासलदेवी पुत्र नेमा, खणाने माता पिता तथा भ्राता हेमला  
के कर्मचार्य भीमत्रिभुजाय चतुर्विधति दिनपट्ट करवाया,  
बिसकी प्रतिष्ठा पितृसमन्वीय त्रिमयिया श्रीधर्मप्रमदरि  
के पट्टपर श्रीधर्मशेखरहरिने की ।

( ६१ )

सं० १५१६ पौष० ५ गुरुवार के दिन परादनिवासी  
धिरापद्मगच्छाजुयायी श्रीश्रीमाल हातीय म्य० सुत मा०  
श्रीदेवी पुत्र बीसलन मा० नीनादेवी, पुत्र बीरा, खला,  
हनुम सहित अपनी माता और पिता के कर्मचार्य भी  
भेयांसनाथ चतुर्विधतिपट्ट करवाया, बिसकी प्रतिष्ठा श्री  
विजयसिंहहरिने की ।

( ६२ )

सं० १४५३ वैशाख० २ सोमवार के दिन भोसवाल  
बंशीय मह० माहण मा० आसलदेवी पुत्र सुया, बाठा,  
पेरमल, केन्हा आदि भ्राताजनोन अपन माता भ्राता सर्व  
जनोके मर्ष श्रीचतुर्विधतिदिनपट्ट करवाया, बिसकी प्रतिष्ठा  
श्रीराठसीपुरीमन्वीय श्रीवीरचन्द्रहरि के पट्टपर श्रीशशि-  
न्द्रहरिने की ।

( २१३ )

( ६३ )

सं० १५३५ पौषकृ० १२ रविवार के दिन उपकेश-  
वंशीय श्रे० हीरा भा० हीरादेवी पुत्र सुश्रावक पासु (पारस-  
मल) ने अपनी भार्या पूर्णिमादेवी पुत्र क्षेमराज भूतराज  
और देवराज सहित अपने श्रेयार्थ अंचलगच्छीय श्रीजय-  
केशरसूरि के उपदेश से श्रीसंभवनाथ का विम्ब करवाया,  
प्रतिष्ठा वागूडीग्राम में श्रीसंघने करवाई ।

( ६४ )

सं० १५०७ माघशु० १३ शुक्रवार के दिन वीरवंशीय  
सं० लीम्बा भा० मोटीवाई पुत्र सं० सुश्रावक नारदने स्व-  
भार्या जयरुदेवी सहित अंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के  
उपदेश से श्रीधर्मनाथ का विम्ब पिता के श्रेयार्थ करवाया  
और श्रीसंघने प्रतिष्ठित करवाया ।

( ६५ )

सं० १५०१ पौषकृ० ६ बुधवार के दिन वराहीगोत्रीय  
श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० महिपाल पुत्रव्य० सिंह भा० सुहव-  
देवी पुत्र नाथा, राहुल, धरणने अपनी माता के कल्याणार्थ  
श्रीश्रेयांमनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा थारा-  
पट्टीयगच्छीय श्रीमर्वदेवसूरि के पट्टधर श्रीविजयसिंहसूरिने की।

( ६६ )

सं० १४७९ माघशु० ४ काकवंशीय चोहराशास्त्रीय

( २१४ )

छा० राबिगसिंह पुत्र गगासिंह मा मद्रपलदेवी पुत्र मांबठ  
सिंहने पुत्र बस्ता, तेखा सहित स्वमार्पा क्षेत्रदेवी और  
बछाठदेवी के भेपार्थ श्रीशान्तिनाथजी का विम्ब करवाया,  
विसको अरतरगण्ठीय श्रीधिनमद्रसरिने प्रतिष्ठित किया ।

( ६७ )

सं० १५११ भाषशु० ५ भीभीमालजातीय व्य० सांडा  
पुत्र अदरु मा० गेठीबाई पुत्र हरराजन मा० बाठबाई सहित  
अपने पिता के भेपार्थ श्रीबादिनाथ का विम्ब करवाया,  
विसको क्षेत्रगण्ठीय धारणपट्टीय श्रीलक्ष्मीदेवसरिन प्रतिष्ठित  
किया ।

( ६८ )

सं १५५३ वैशाखशु० १३ सामवार क दिन वासी  
नगर निवासी भीभीमालजातीय व्य० मना मा० डाडीबाई  
पुत्र रहिमाने स्वमार्पा रंगीबाई सहित अपने पिता, माता  
और पितृजनो के एव आता क निमित्त तथा अपने भेपार्थ  
श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब करवाया विसकी प्रतिष्ठा पिप्पल-  
गण्ठीय श्रीपद्मानन्दसरिन की ।

( ६९ )

सं० १५ ५ वैशाखशु० ३ शुक्रवार के दिन अष्टाय  
गण्ठानुयायी भीभीमालजातीय व्य० मेवाने पुत्र गोसठ

( २१५ )

मा० शृंगारदेवी पुत्र कर्मसिंह सहित पितृ देमलदेव, मातृ महंगदेवी के श्रेयार्थ श्रीनमिनाथ का विम्ब करवाया, जिसको श्रीपञ्जूनसूरिने प्रतिष्ठित किया ।

मेघा के पिता देमलदेव थे और महंगदेवी माना श्री । प्रथा की दृष्टि से पितृमातृ का उल्लेख मेघा के पूर्व होना चाहिये था ।

( ७० )

सं० १४८५ माघशु० १० शनिवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय सं० ठाकुरसिंह मा० हनकूदेवी पुत्र सं० काला ( कल्याणसिंह ) ने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीपद्मप्रमम्बामी का विम्ब करवाया, जिसकी विधिपूर्वक प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीविद्याशेखरसूरि के उपदेश से हुई ।

( ७१ )

सं० १५१७ माघकृ० ८ बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० वीरा भा० शानीवाई पुत्र जोगाने मा० मानू-वाई पुत्र महीराज कुडुम्ब सहित अपने श्रेयार्थ श्रीनमिनाथ का विम्ब पूर्णिमापक्षीय श्रीगुणममृद्रसूरि के पट्टवर श्रीपुण्य-रत्नसूरि के उपदेश से दोलावाड़ा ग्राम में सविधि प्रतिष्ठित करवाया ।

( ७२ )

सं० १५३५ माघशु० ३ रविवार के दिन उपकेशवंश



(२१६)

यें रायचठा सेठिया गोत्रीय घरवा पुत्र बेठराबने मा०  
बिमलादेवी पुत्र सेमा, बेठा, गवा आदि के भेषार्थ भीनमि  
नाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सरतरमण्डीय  
भीमिनचन्द्रसरिने की ।

(७२)

सं० १४९३ फागुनशु० १ तपकेसूर्यधीव नवसुधा  
घासा यें घा० पासा पुत्र घा० पीसा, कमला भाबकोंने  
भीजादिनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सर  
तरमण्डीय भीमिनचन्द्रसरिने की ।

(७४)

सं० १५९८ वैशख० ५ बुधवार के दिन कावेसरिशाम  
निवासी भीभीमासहाठीय भे प्रपितामह पेसा प्रपितामही  
प्रथमादेवी पितामह नीम्बराब पितामही कमदेवी पिता  
मेशराब मातु आशादेवी के पुत्र पारसराब, सख्खने अपने  
पूजक तथा माता पिता के भेषार्थ भीसीतसनाथतुर्दिवसि  
विनपट्ट करवाया, जिसकी विम्बलमण्डीय भीसमरचन्द्रसरि  
के पट्टपर भीसुमचन्द्रसरिने प्रतिष्ठित किया ।

(७५)

सं० १४०१ भीभीमासहाठीय भे० केरदुधा मा०  
मज्पार्ई पुत्र बाठर्बदने अपने माता साठर्बद के भेषार्थ

( २१७ )

श्रीचतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी सविधि प्रतिष्ठा आगमगच्छीय श्रीअमरसिंहसरि के उपदेश से हुई ।

( ७६ )

सं० XX६५ माघशु० १२ शुक्रवार के दिन माद्रीपुर निवासी प्राग्वाटज्ञातीय व्य० पूनमचन्द्रने अपने पिता जसराज के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीश्रीसरिने की ।

( ७७ )

सं० १५०६ माघशु० १० शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय भ्रे० चूणा भा० वापलदेवी पुत्र देवराजने माता पिता  
के श्रेयार्थ श्रीजीवितस्वामि श्रीशीतलनाथजी का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिष्पलगच्छीय श्रीसोमचन्द्रसरि  
के पट्टघर श्री उदयदेवसरिने पट्टघलियाग्राम में की ।

( ७८ )

सं० १४९९ कार्तिकशु० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्य० महन भा० महणदेवी पुत्र बना, बरदाने  
अपने आता कर्मसिंह, राघवसिंह के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभ-  
स्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिष्पलगच्छीय  
त्रिमविया म० श्रीधर्मशेखरसरिने की ।

( ७९ )

सं० १५२७ ज्येष्ठशु० १० बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-

( २१८ )

द्वितीय भे० सुंदा (चन्द्रराज) भे० सुरदेवन पुत्र देव, पोपट  
आदि परिवारों सहित भार्या बागूबाई के भेपार्य भीष्मपु  
नाथस्वामी का विम्ब करवाया, विमकी प्रतिष्ठा पूर्विका-  
पक्षीय भीष्मपरस्नहरि के उपदेश से विधिपूर्वक हुई ।

( ८० )

सं० १५८१ माघ० १० शुक्रवार के दिन भीभीमाल  
द्वितीय इन्द्रराज दे० मा० साता ने मा० लीलादेवी पुत्र  
भास्वराज मा० उमादेवी पुत्र साता, हीरा, आदि परिवार  
सहित निगमप्रभावक भीष्मनान्दमागरहरि क द्वारा भीष्मन्ति  
नाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ८१ )

सं० १५१० कार्तिक० ४ रविवार के दिन भीभी  
मालद्वितीय भ्य० सुबसिंह मा० सुणादेवी पुत्र सुप्रामसिंहने  
मा० बाल्मीदेवी के भेपार्य भीष्मन्तिनाथजी का विम्ब  
करवाया, विमकी प्रतिष्ठा विरापट्ट में विष्णुमन्त्रीय त्रिम  
विया भीष्मेश्वरहरिने की ।

( ८२ )

सं० १५२९ अश्वि० १ शुक्रवार के दिन विराटपुर  
निवासी भीभीमालद्वितीय भे० धना मा० बापलदेवी पुत्र  
प्रेमराजने मा० बाधादेवी पुत्र बापा सहित माता पिता के

( २१९ )

श्रेयार्थ श्रीपद्मप्रभपंचतीर्थी करवाई जो श्रीआगमगच्छीय श्रीअमररत्नसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित हुई ।

( ८३ )

सं० १५१६ आषाढशु० १ शुक्रवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय व्य० कान्हा मा० कमलादेवी के पुत्र गुहिराज, सूरदेवने मातापिता व आत्मधेयार्थ श्रीनमिनाथजी का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा पिष्पलगच्छीय श्रीमोम-चन्द्रसूरि के पट्टघर श्रीउदयदेवसूरिने की ।

( ८४ )

सं० १५१७ चैत्रपूर्णिमा के दिन श्रीमालज्ञातीय क्षेड-रियागोत्र में स० कानू (कन्हैयालाल) पुत्र रणवीर श्रावकने मा० हर्षादेवी के सुपुण्यार्थ श्रीशान्तिनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय जिनमद्रसूरि के पट्टघर श्रीजिनचन्द्रसूरिने की ।

( ८५ )

सं० १२२० ज्येष्ठशु० ९ रविवार के दिन श्रियाहडने श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिमा करवाई जिसकी प्रतिष्ठा प्रभुश्री-हेमचन्द्रसूरिने की ।

( ८६ )

सं० १५११ माघशु० ५ गुरुवार-के दिन श्रीश्रीमाल-

( २२० )

शाहीय व्य० सायर मा० संसारदेवी पुत्र व्य० हरसिंह मा०  
नयनादेवी के पुत्र अयसिंहने भीषर्मनाथप्रभु का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिम्पठमच्छीय त्रिमयीया भीषर्म  
सेसरसरि के पङ्कपर भीषर्मसुन्दरसरिने की ।

( ८० )

सं० १५२५ ज्येष्ठ शु० ५ सोमवार के दिन बहरवाड़ा  
ग्राम निवासी श्रीभीमासहाहातीय व्य० मोठराज मा० गुठ  
देवी पुत्र हेमराजने मा० हीरादेवी माधु (माग्धी) पुत्र  
विजयराजसिंह परिव्रजों क सहित अपने कस्याचार्य भी  
अक्षितनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भी  
ब्रह्मात्मच्छीय भीभीरसरिने की ।

( ८८ )

सं० १५१० फाल्गुनशु० ११ धनिवार के दिन भीभी  
मासहाहातीय व्य पुण्यपाल मा० वास्वाम देवी के पुत्र  
हीराचन्द्र, हरिचन्द्रने पूर्वजों के शेषाय भीमादिनाथप्रभु  
का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भीमावडारगच्छीय  
भीकाष्ठिकाचार्यसन्तानीय भीभीरसरि के उपदेश से हुई ।

( ८९ )

सं० १५९१ माघ० ५ शुक्रवार के दिन भीभीमास  
शाहीय व्य० देवठ( देवराज ) मा० वासीबाई पुत्र हेमराज

( २२१ )

भा० वरजुवाई के पुत्र माजूने अपने पिता माता व आत्म-  
कल्याणार्थ श्रीनमिनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिमविया भट्टा० श्रीधर्मसागरसूरि के  
पट्टघर भ० श्रीधर्मप्रभसूरिने की ।

( ९० )

सं० १५३० कार्तिकशु० १२ सोमवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्यव० लीम्बराज भा० लाडूवाई पुत्र धर्मसिंह  
भा० घांघलदेवीने भ्राता वीना के व आत्मश्रेयार्थ श्रीशीतल-  
नाथजी का विम्ब कराया, जिमकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय  
श्रीमृनिसिंहसूरि के पट्टघर श्रीअमरचन्द्रसूरिने की ।

( ९१ )

सं० १५०१ फाल्गुनशु० ५ गुरुवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० तेजपाल भा० मूलावाई  
पुत्र लाखाने भा० ललितावाई, पुत्री रत्नू, पिता-माता के  
श्रेयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का विम्ब श्रीपज्जूनसूरि के द्वारा  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( ९२ )

सं० १५२४ मार्गशिरकृ० २ के दिन प्राग्वाटज्ञातीय  
व्य० तेजपाल भा० श्रीदेवी पुत्र व्य० पोपमल भा० पांतीदेवी  
पुत्र ब्रजांगदेव, देवपालने प्रमुख परिजनों सहित अपने

( २२२ )

श्रेयार्थ श्रीसुविधिनाथजी का विम्ब करवाया, बिसकी प्रतिष्ठा  
सपामच्छेश्वर श्रीरत्नशेखरहरि के पदुपर भीलहमीसामर  
हरिने की ।

( ९३ )

सं० १५१७ पौष० ५ गुरुवार के दिन राहबड़ग्राम  
निवासी श्रीमाळझातीय भे० वीरमदेव मा० विठ्ठलदेवी के  
पुत्र राहल, श्रीमदेव भा० धीरमदेवी पुत्र हापाने अपन पिता  
माता के श्रेयार्थ श्रीसुविधिनाथजी का विम्ब करवाया,  
बिसकी प्रतिष्ठा पुर्विमापणीय श्रीसुनिसिंहहरिने की ।

( ९४ )

सं० १५११ माघशु० ५ गुरुवार के दिन श्रीभीवाल  
झातीय ब्यब० कर्मसिंह भा मदीबाई पुत्र महिपालने पिता  
माता व आरमश्रेयार्थ श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब करवाया,  
दिसकी प्रतिष्ठा पुर्विमापणीय श्रीराधवल्लभहरिने स्विराष्ट्र  
( पराद ) पुर में की ।

( ९५ )

सं० १५३६ फागुनशु० २ सोमवार के दिन साधी  
ग्राम निवासी श्रीभीवालझातीय भे० लखसिंह मा० बमड-  
बाई पुत्र मोहरामने मा० बमडबाई, पुत्र रहियादि परिवर्तों  
सहित अपने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीशेखरनाथजी का

( २२३ )

विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमागच्छीय श्रीगुणधीर-  
सूरि के उपदेश से हुई ।

( ९६ )

सं० १५०१ पौषकृ० ६ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० वगसा भार्या जेसलदेवी के पुत्र धड़सिंहने  
अपने पिता, माता, भ्राता के श्रेयार्थ जीवितस्वामि श्रीसुमति-  
नाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय  
श्रीपद्मानन्दसूरि के पट्टघर श्रीविनयप्रभसूरि के द्वारा हुई ।

( ९७ )

सं० १५०५ वैशाखशु० २ बुधवार के दिन लढाऊ-  
गोत्रीय सं० नगराज भा० लाठीवाई पुत्र सं० धनराजने  
मा० सुवर्णादेवी पुत्र सं० कालू प्रभुख परिवर्तों के साथ  
अपने श्रेयार्थ श्रीसुविधिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा श्रीखरतरगच्छीय गुरुश्रीलिनमद्रसूरिने की ।

( ९८ )

सं० १४९३ वैशाखशु० ५ बुधवार के दिन फलौदिया-  
गोत्रीय शा० छाहू भा० छाजूवाई पुत्र सावाने अपने पुण्यार्थ  
श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा धर्म-  
घोषगच्छीय मट्टा० श्रीपद्मशेखरसूरि के पट्टघर म० श्रीविजय-  
चन्द्रसूरिने की ।



( २२४ )

( ९९ )

सं० १४३५ माघकृ० १२ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल  
जातीय सं० खेडसिंह सुत सं० हादाने श्रीशान्तिनाथजी का  
विम्ब करवाया, बिसकी प्रतिष्ठा श्रीवीरसिंहधरि के पदपर  
श्रीवीरचन्द्रधरिने की ।

( १०० )

सं० १५१० पौषकृ० ५ गुरुवार क दिन श्रीश्रीमान्-  
जातीय व्य० सुरदेव भा० सुहदेवी पुत्र रुदा राणाकने  
अपने माता पिता के कस्याचार्य श्रीशान्तिनाथजी का विम्ब  
करवाया, बिसकी प्रतिष्ठा विम्बलगच्छीय त्रिमरिया श्रीधर्म  
साधरधरिने की ।

( १०१ )

सं० १५७२ वैशाखकृ० ४ रविवार के दिन श्रीश्री  
मासजातीय व्य० मूर पुत्र व्य० पोपटने भा० प्रेमलदेवी,  
माता गोपाल के पुत्र हादासहित अपने जेवार्थ श्रीसुविधि  
नाथजी का विम्ब करवाया बिसकी प्रतिष्ठा पूर्विमापजीय  
प्रधानघासा मे श्रीशुबनप्रमधरिने की ।

( १०२ )

सं० १४३४ वैशाखकृ० बुधवार क दिन श्रीमालजातीय  
व्य० बाठिल भा० प्रेमलदेवी मे० मासरावने श्रीशान्ति

( २२५ )

नाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छा-  
चार्य श्री मुनिप्रभस्वरिने की ।

( १०३ )

सं० १४६२ वैशाखशु० ५ शुक्रवार के दिन प्राग्वाट-  
ज्ञातीय भे० प्रलेपनदेव भा० साथलदेवी के पुत्र भापलदेवने  
श्रीआदिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भडा-  
हड़ाग्राम में श्रीहरिमद्रस्वरिने की ।

( १०४ )

सं० १५०६ वैशाखशु० ६ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय भ्रे० लाखा भार्या पातलीबाई के पुत्र कीकाने अपने  
कर्याणार्थ श्रीनमिनाथजीका विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
श्रीजिनमाणिक्यस्वरिने की ।

( १०५ )

सं० १४३० माघकृ० ८ सोमवार के दिन ओसवाल-  
ज्ञातीय व्य० आशधर भा० रामलदेवी के पुत्र सादरावने  
पितृजनों के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथप्रभु का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलाचार्य श्रीधर्मदेवस्वरिसन्तानीय श्री  
श्रीतिस्वरिने की ।

( २१६ )

( १०६ )

सं० १३०९ माघकृ० २ के दिन भीभीमालङ्कारीय भे०  
नरसिंह मा० नयनादेवी, खेमराज साहमठ पुत्र कर्मदेवने  
भीमान्तिनाथजी का विम्ब करवाया, भिसकी प्रतिष्ठा चैत्र  
गण्डीय भीहरिभन्द्रसरिन की ।

( १०७ )

सं० १३९९ फाल्गुनशु० १३ सोमवार के दिन बयडडी  
ग्राम के संपन प्रतिष्ठा कराई । -----

( १०८ )

सं० १७०८ मार्गशिरशु० २ रविवार के दिन धा०  
यधराजने तथा कडुग्रामतगण्डीयुपायी माधवी लामाजीने  
भी पार्षनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित किया ।

( १०९ )

सं० १९८३ ज्येष्ठशु० ३ के दिन कडुग्रामतगण्डीयुपायी  
धराद के ठाकुर रत्नपाल मा० ठाकुराणी रमादेवीने भी  
सुमतिनाथजी का विम्ब करवाया, भिसकी प्रतिष्ठा धरादकी  
ठगपासने की ।

( ११० )

सं० १६९२ फाल्गुनशु० २ बुधवार के दिन धराद

( २२७ )

नगर निवासी व्य० हारमलने पिताश्री माजनसिंह के पुण्यार्थ  
श्री वासुपूज्यस्वामी का विम्ब करवाया ।

( १११ )

सं० १३६४ वैशाखशु० १३ के दिन श्रे० छाड़राज पुत्र  
क्षेमराज भा० जयतुदेवी पुत्र केलहण भा० लूणीवाई पुत्र  
हरपाल भा० कर्पूरदेवी पुत्र रत्नसिंहने भा० गौरादेवी महित  
काका देवल, पुण्यपाल, पिता पितृव्य नरपाल के श्रेयार्थ  
श्रीआदिनाथ प्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्री  
महेन्द्रसूरि के प्रद्वधर श्रीअभयदेवसूरिने की ।

( ११२ )

सं० १४३६ वैशाखकृ० ११ भोमवार के दिन श्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० बीवा, भा० हमीरदेवी के पुत्र भूदेवने अपने  
माता पिता के कल्याणार्थ श्रीपार्श्वनाथप्रभु का विम्ब कर-  
वाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीविजयप्रभसूरि के  
पद्वधर श्रीउदयानन्दसूरिने की ।

( ११३ )

सं० १४७९ माघकृ० ७ सोमवार के दिन भावडार  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातिय व्य० भर्मराज के पुत्र सरवण-  
( श्रवण )ने पुत्र पर्वत के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का विम्ब  
श्रीविजयसिंहसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १५८ )

( ११४ )

सं० १६१७ पौष० १ गुरुवार के दिन राजाधिराज भीष्मसेन, रानी भीषापादेवी के पुत्र भीभी ५ भीषार्थ नायबी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिरापद्र निवासी सपुत्राला में भीमालहातीय भे० बीबा पूना मूळने अपने कर्मों के क्षयार्थ करवाई ।

( ११५ )

सं० १६१७ पौष० १ गुरुवार के दिन राजा भी कुम्भराजा राक्षिभीप्रभावतीदेवी के पुत्र भीभीमङ्गिनाथभी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिरापद्रनगरनिवासी भीभीमालहातीय मह० पदसिंह, रंगराज, उदयवंत, धन पाठ संपरीने अपने कर्मों के क्षयार्थ करवाई ।

( ११६ )

सं० १५७८ माघ० शुक्रवार के महाराजाधिराज भीरवर महाराजि भीनन्दादेवी के पुत्र भीभीभीभी भी भीतलनाथभी का विम्ब करवाया ।

( ११७ )

सं० १६१३ वैशाख शु० १० गुरुवार के दिन राजाधिराज महाराज भीमामिनरेश्वर राक्षिभीमलदेवी के पुत्र

( २२९ )

श्रीश्रीश्री श्रीआदिनाथप्रभु का विम्ब थिरापट्टनिवासी श्री-  
श्रीमालज्ञातीय नीतूवाईने अपने कर्मों के श्रेयार्थ करवाया ।

( ११८ )

सं० १५११ ज्येष्ठकृ० ९ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय सं० सोना (सुवर्णराज) मा० सेतलदेवी पुत्र गदराज  
मा० मोलीबाई पुत्र कालूचन्द्र मा० कामलदेवी, भ्राता घर्मा,  
नरिया ने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीनमिनाथजी का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विष्णुलगन्गीष भट्टा० श्रीउदय-  
देवसरिने बालहर ग्राम में की ।

( ११९ )

सं० १५०६ चैत्रकृ० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय सं० जयसिंह मा० त्रापुदेवी के पुत्र वनगजने पितृ  
सारंग, भ्राता कर्मण(कर्मसिंह) के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी  
का विम्ब करवाया, जिसकी सविधि प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय  
श्रीवीरप्रभसरि के उपदेश से निउरवाड़ा ग्रामे में हुई ।

( १२० )

सं० १५३६ माघकृ० सोमवार के दिन उपकेशवंशीय  
आ० राणा, मा० रयणाबाई के पुत्र खरहत्थ भावकने  
स्वभार्या भाणिकबाई पुत्र लक्ष्मण, केशवण, कीर्त्ति, पौत्र  
मदराज, सरराज भाणिकराज महित पुत्र रावण के श्रेयार्थ

( ६३० )

भीमबंसगण्ठीय भीमपकेसरसरि के उपदेश से भीसमभ  
नाथप्रभु का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १२१ )

सं० १५११ माघशु० ५ शुक्रवार के दिन भीभीमाळ  
हातीय प्य० कर्मसिंह मा० मदीबाई पुत्र बाबा ( प्यात्र  
सिंह )ने अपन पिता माता के भेषार्थ भीमभितनाथजी का  
विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीपू०महा० राजतिठक  
सरि के उपदेश से भीसरिने बिरापत्रनगर में की ।

( १२२ )

सं० १५६० वैशाखशु० ३ बुधवार के दिन भीभी  
माळहातीय प्य० सारंगदब मा रंगीबाई क पुत्र लक्ष्मबने  
स्वमार्या पादूबाई पुत्र रहिया, दबपाळ सहित अपन पिता  
क और अपन भेषार्थ भीशान्तिनाथप्रभु का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगण्ठीय म० भीसोमरत्नसरि के पद  
पर महा० श्री हेमसिंहसरिने की ।

( १२३ )

सं० १५२१ ज्यशु० ९ सोमवार के दिन पूंजपुरनिवासी  
उपदेशहाति में माहरगोत्रीय कुशलराज मा० केसवदेवी के  
पुत्र माहरराजन अपने पितृव्य के तथा अपन भेषार्थ श्री  
धर्मधोषगण्ठीय भीशानन्दसरि के द्वारा भीसुमतिनाथ  
प्रभु का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २३१ )

( १२४ )

सं० १५३२ ज्येष्ठशु० १३ बुधवार के दिन उपकेश-  
झातीय व्यव० कीका भा० सरस्वती पुत्र खेता मा० रंगी-  
नाई पुत्र रूपचन्द्रनं भ्राता देवराज के तथा अपने श्रेयार्थ  
श्रीनमिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा मत्स्यपुर  
में भावहारगच्छीय श्रीभावदेवसुरिने की ।

( १२५ )

सं० १५६० वैशाखशु० ३ के दिन सं० खेता मा०  
हांसलदेवी के पुत्र सं० खेता के भ्राता सं० अर्जुनदेवने स्व-  
भार्या अधिकादेवी, पुत्र सं० मांडन, भ्रातृज सं० डूंगर, वना,  
जेसा आदि परिजनों के सहित बृद्धपितृव्य सं० मेहराज के  
श्रेयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीसोमसुन्दरसुरि के पट्टघर श्रीकमल-  
सुरिने की ।

( १२६ )

सं० १५४३ ज्येष्ठशु० ११ के दिन श्रीश्रीमालझातीय  
व्य० ममघर भा० जीवनीदेवी के पुत्र व्य० धर्मसिंहने स्वमा०  
मणिकदेवी पुत्र महिराज, चरजा आदि सहित अपने श्रेयार्थ  
श्रीशीतलनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीश्री-  
सुरिने तथा पूज्य श्रीसौभाग्यरत्नसुरिने की ।



( २३१ )

( १२७ )

सं० १५— माघ० २ गुरुवार के दिन सह्याद्रि  
ग्राम निवासी प्राग्वाटशाहीय भे० धामा मा० पंमादेवी के  
पुत्र परबतन स्वमार्या मटकुदेवी पुत्र कर्मज आदि कुटुम्बी  
जन सहित भीमिमलनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा इद्रतपागच्छीय भ० भीमिनसुन्दरसरिने की ।

( १२८ )

सं० १५२३ वैशाख० १३ क दिन प्राग्वाटशाहीय  
भ्य० सुंभराज मा० अश्वदेवी के पुत्र हापाकन स्वमा०  
रत्नादेवी पुत्र वापड़, बीरराज, भागा आदि कुटुम्बीजन  
सहित अपने भेषार्थ भीममिनन्दनप्रसू का विम्ब कर  
वाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छनाथक भीरुस्मीसागरसरिने  
भृशिंगपुरमें की ।

( १२९ )

सं० १५२६ पौष० २ गुरुवार क दिन कछीत्राया  
ग्राम निवासी ब्रह्मायगच्छीय भीष्मीमातृशाहीय भ० रामा  
मा० रत्नदेवी के पुत्र बरदेवन स्वमा० बीरुणदेवी पुत्र  
मांभर, मास्तर सहित अपने माता पिता क भेषार्थ भी  
सुमतिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भी बुद्धि  
सागरसरिने की ।

( २३३ )

( १३० )

सं० १५१७ वैशाखशु० १२ मंगलवार के दिन बालु-  
कढ़ ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० हलराज भा०  
हेलीबाई के पुत्र शिवसिंहने अपने पिता, माता तथा पूर्वजों  
के श्रेयार्थ श्रीश्रेयांसनाथ पंचतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा  
पिष्पलगच्छीय भट्टा० श्रीगुणरत्नसूरिने की ।

( १३१ )

सं० १५४८ वैशाखकृ० १० रविवार के दिन पत्तन  
निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय सिद्धशाखा में शा० लक्ष्मणसिंह  
भा० मांजूदेवी पुत्र मदा ( मदनसिंह ) भा० मांकूदेवी पुत्र  
तेजसिंहने अपनी भा० मल्हादेवी सहित पिता, माता, भ्राता  
एवं अपने श्रेयार्थ श्रीशीतलनाथजी का बिम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा पिष्पलगच्छीय श्रीरत्नदेवसूरि के पट्टघर श्री  
पद्मानन्दसूरि के द्वारा हुई ।

( १३२ )

सं० १४९९ कार्तिकशु० १५ गुरुवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्यव० सूरु मा० सुहवदेवी के पुत्र पता ( प्रताप-  
मल ) और रुद्रदेवने अपने कल्याणार्थ श्रीसंभवनाथजी का  
बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिष्पलगच्छीय त्रिमत्रिया  
श्रीधर्मशेखरसूरिने थारापद्र नगर में की ।

( २३४ )

( १३३ )

सं० १५१३ माघशु० ३ गुरुवार क दिन बराठद्वाम  
निवासी श्रीश्रीमालाहातीय म सुरा मा० नाडीबाई के पुत्र  
हापराबने स्वमा० कासीदेवी, पुत्र समभर, सहसा, बरदेव,  
बीरा, पंचायन, महीराज सहित अपने पिता माता के भेषार्थ  
श्रीजादिनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा महा  
गच्छीय श्रीमणिवन्द्रसरिने की ।

( १३४ )

सं० १५२७ पौषशु० ४ गुरुवार क दिन श्रीश्रीमाला  
हातीय सिद्धसाखा में व्यव० इदा मा० माणिकदेवी के पुत्र  
रायाने अपने माता के सहित अपने भेषार्थ श्रीसुमतिनाथजी  
का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलमच्छीय श्री  
विजयदेवसरि के शिष्य घालिमद्रसरिने की ।

( १३५ )

सं० १५३४ पौषशु० १० के दिन संसाराठ वाम निवासी  
शे० मांजा मा० मासुवदेवी पुत्र भावइ मा० तूबीबाईने  
अपने भेषार्थ श्रीजादिनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा महा० श्रीलक्ष्मीधामसरिने की ।

( १३६ )

सं० १४५० माघशु० ९ सोमवार के दिन श्रीमाला

( २३५ )

ज्ञातीय घाँघलियागोत्र में ठक्कुर हरिराज पुत्र ठ० हापराज  
ठ० जयपाल के श्रेयार्थ ठ० हेमराजने श्रीअजितनाथजी का  
विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय भ० श्री-  
जिनवल्लभसूरिने की ।

( १३७ )

स० १५३७ वैशाखशु० १० सोमवार के दिन श्रीवीर-  
वंशीय श्रे० मोखा (मोक्षराज) मा० रामतीबाई के पुत्र  
सुश्रावक देवराजने पुत्र नारद पूना सहित अपने श्रेयार्थ  
श्रीअंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीअनन्त-  
नाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पत्तननगर में  
श्रीसंघने करवाई ।

( १३८ )

सं० १५२७ माघकृ० ७ रविवार के दिन उपकेश-  
ज्ञातीय व्य० मांडन मा० कर्णुबाई पुत्र मोका मा० अदी-  
बाई द्वितीया मा० समूबाई के पुत्र आल्हणने आता पांचा  
सहित अपने श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा जीरापल्लीय श्रीउदयचन्द्रसूरि के पट्टघर  
भट्टा० श्रीसागरचन्द्रसूरिने की ।

( १३९ )

सं० १५०५ वैशाखकृ० ९ शुक्रवार के दिन थिरापट्ट-

( २१९ )

नगर निवासी श्रीश्रीमालहातीय महाप्रनी साष्टा मा०  
फरुखदेवी पुत्र खेमराज मा० खेतलदेवीने पुत्र रामा सहित  
अपन कल्याणार्थ श्रीशिवस्वामि श्रीनमिनाथजी का चिन्म  
श्रीपू० मङ्गा० श्रीवीरप्रमद्वरि क सतुपदेश से प्रतिष्ठित करवाया।

( १४० )

सं० १५१६ आषाढ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
हातीय भे० बत्सा मा० श्रीमलदेवी के पुत्र शिवराजन अपने  
पिता, माता के अर्थ श्रीशिवनाथजी का चिन्म पूर्णिमाप  
क्षीय श्रीगुणसद्वरि के पङ्कपर श्रीगुणवीरवरि के उपदेश  
से तट्टेडाग्राम में मन्दिषि प्रतिष्ठित करवाया।

( १४१ )

सं० १५१६ माघ० ९ सोमवार क दिन प्राग्दाह  
हातीय अ० सोसा मा० कीर्तनदेवी पुत्र खेमराजने मा  
सुसहजी, पुत्र मरमा आदि सहित अपने आत्मकल्याणार्थ  
श्रीशिवनाथजी का चिन्म करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमा-  
पक्षीय श्रीदेवचन्द्रवरि के उपदेश से हुई।

( १४२ )

सं० १५०५ वैशाखशु० ३ बुधवार के दिन चिरापूर  
नगर निवासी चिरापूरगण्ठीय श्रीश्रीमालहातीय शु० श्री-  
रामलाल नरसिंह, श्रीरामलाल मा० शंकरदेवी के पुत्र

इलाराज, अर्जुन और गोलराजने अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीविजयसिंहसूरिने की ।

( १४३ )

सं० १५२० चैत्रकृ० ५ बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० शालिगने स्वभार्या गेरीवाई सहित पिता कालह-  
राज, माता रूपमति और अपने श्रेयार्थ भीकुन्धुनाथजी का  
बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिण्पलगच्छीय त्रिमविया  
श्रीधर्मशेखरसूरि के पट्टघर श्रीधर्मसूरिने की ।

( १४४ )

सं० १५१५ वैशाखशु० १३ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्यव० मेहा भा० खंतलदेवी के पुत्र जयसिंहने स्व-  
भार्या जयमादेवी के सहित माता, पिता और अपने श्रेयार्थ  
श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
पिण्पलगच्छीय भट्टा० श्रीविजयदेवसूरि के उपदेश से श्री  
शालिमद्रसूरिने मजोहग्राम में की ।

( १४५ )

सं० १५२४ वैशाखशु० ३ सोमवार के दिन सिद्ध-  
सन्तानीय श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० लक्ष्मणसिंह भा० मंजूदेवी  
के पुत्र गणियाने भा० विजयदेवी, पुत्र आशुघर सहित

( १३८ )

पिता, माता के भेषार्थ भीषेपासनायत्री का विम्ब करवाया, भिसकी प्रतिष्ठा विष्णुलक्ष्मीय भीठदयदेवघरि के पट्टघर भी रत्नदेवघरिने पचननगर में की ।

( १४६ )

सं० १५२९ फाल्गुनशु० २ शुक्रवार के दिन उपकेय वंशीय बड़हराध्यास में ध्या० दुरगा मा० छीठादेवी के पुत्र सुभावक विक्रमदेवने स्वमा परहादेवी, पुत्र व्याघ्रसिंह, मोहराज, छेमराज, छेत्रराज सहित पितृभ्य साधन के भेषार्थ अक्षयगण्डीय गुरुभीमपकेश्वरघरि क उपदक्ष सं भीषिमलनायप्रभु का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १४७ )

सं० १५१० वैशाखशु० ३ के दिन ऊबग्राम निवासी प्राग्वाटवासीय ब्यब० भीरमदेव मा० सनूबाई के पुत्र राध देवने आत् हेमा, हीरा, भीसल मा० मण्डूबाई के पुत्र अर्जुन, सांगा, सहसा, आदि हनुम्वीरनों क सहित पिता के भेषार्थ भीसुमसिनायत्री का विम्ब करवाया, भिसकी प्रतिष्ठा तथागण्डीय भीरत्नशेखरघरिने की ।

( १४८ )

सं० १५०७ फाल्गुनशु० ११ गुरुवार के दिन ब्यब० मोहरामने मा० महमलदेवी क भेषार्थ भीहनुनायत्री का

( २३९ )

विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा ब्रह्माणगच्छीय श्रीमणि-  
चन्द्रसरिने की ।

( १४९ )

सं० १३४१ ब्रह्माणगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे०  
साहद के श्रेयार्थ उसके पुत्र लापराजने श्रीधरसरि के द्वारा  
विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १५० )

सं० १५०३ ज्येष्ठकृ० ३ सोमवार के दिन भावडार-  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० मोनराज भा० मही-  
देवीने अपने पुण्यार्थ श्रीवासुपूज्यम्बामी का विम्ब कर-  
वाया, जिमकी प्रतिष्ठा श्रीकालिकाचार्यसन्तानीय पूज्य श्री  
वीरसरिने की ।

( १५१ )

सं० १५२७ माघकृ० ५ गुरुवार के दिन प्राग्वाट-  
ज्ञातीय शा० करणा भा० भापुदेवी के पुत्र वीढाने स्वभा०  
राजुलदेवी, पुत्र शा० पालराज आदि कुटुम्बीजन सहित  
श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा तपा-  
गच्छीय श्रीलक्ष्मीमागरसरिने की ।

( १५२ )

सं० १४७१ माघशु० ३ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय



( १४० )

श्रीदेवा मा० देवराजदेवी क पुत्र जदराजने अपने पिता माता के भेयार्य श्रीमिनाबजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विष्णुसगच्छीय त्रिमयिया श्रीधर्मप्रमदरिने की ।

( १५३ )

सं० १५०१ पौषक० श्रीमीमासहातीय जे० नयनराज के पुत्र कर्मराजने पितृव्य तुहना, मना, हुंगर, बदा (जौरे) माता पाठी के भेयार्य श्रीमिनाबजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सिद्धान्ती श्रीसोमभद्ररिने की ।

( १५४ )

सं० १५१५ ज्येष्ठक० १ शुक्रवार क दिन अहमदाबाद निवासी प्राग्वाटहातीय म० लीबराज मा० मंगुबार्दे के पुत्र जदराज मा० मांजीबाईने अपने भयार्य श्रीअधितनापजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा बृहत्पापघ्नीय श्रीरत्नसिंहरिने की ।

( १५५ )

सं० १५२४ चैत्रक० ५ क दिन श्रीमासहातीय म मावराज मा० साखदेवी पुत्र राजाने मा० राधू, पुत्र श्रीरराज, सावरराज, रत्नराज सहित पिता माता और स्वभेयार्य श्रीभेयांसनाबजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा चारणपत्रीय महा० श्रीलक्ष्मीदेवरिने की ।

( २४१ )

( १५६ )

सं० १५०६ माघशु० . . के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय  
श्रे० सूराने भा० रूपावाई, पुत्र घर्मराज के श्रेयार्थ, आविका  
सूडी तथा अपने श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया,  
जिमकी प्रतिष्ठा पिण्डलग्छीय श्रीघर्मशेखरसूरि के पडुधर  
श्रीविजयदेवसूरिने की ।

( १५७ )

सं० १५१० फाल्गुन . ११ शनिवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्यव० पुण्यपाल भा० पाल्गदेवी पुत्र हीरा,  
हरियाने पुत्र नगराज नरपाल महित अपने आता ( हीरा )  
के श्रेयार्थ श्रीअभिनन्दनप्रभु का विम्ब करवाया, जिमकी  
प्रतिष्ठा भावडारगच्छीय श्रीकालिकाचार्यसन्तानीय श्री  
वीरसूरिने की ।

( १५८ )

सं० १३५९ ब्रह्माणगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे०  
झांझणने पिता थिरपालश्रीमन्त के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी  
का विम्ब श्रीवीरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १५९ )

सं० १४४९ वैशाखशु० ६ शुक्रवार के दिन उपकेश-  
ज्ञातीय श्रे० वीका ( विक्रम ) ने पिता कुरसिंह माता कामल-

( २४९ )

देवी के भेयार्थ भीममतिनाथजी का विम्ब भीपार्थचन्द्रसरि के उपदेश से करवाया ।

( १६० )

सं० १५०३ ज्येष्ठकृ० ७ के दिन ब्रह्माणगच्छानुयायी मोरिग्राम निवासी श्रीभीमासङ्गातीष भ्य० छा० हीरा पुत्र बयराम मा० साङ्गीबाई पुत्र मण्डनमे मा० पाख्खाई पुत्र वा० समथर, धनराम सहित अपने भेयार्थ श्रीवासुपुण्यस्वामी का विम्ब श्रीपञ्चनसरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६१ )

सं० १४४२ वैशाखकृ० १० रविवार के दिन भीमासङ्गातीष भे० हरपाल मा० हीरादेवीने अपने भेयार्थ श्रीवितस्वामि—भीमादिनाथजी का विम्ब पिण्डमच्छीय भीसामर चन्द्रसरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६२ )

सं० १५०३ मार्गशिरकृ० ५ माचडारयच्छानुयायी—  
सं० हादा पुत्र सं० काला मा० कमलाबाई के पुत्र मीमा,  
बेला, माळामे अपने भेयार्थ श्रीवीरसरि द्वारा भीममतिनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६३ )

सं० १४९३ में प्राम्बाटङ्गातीष भ० माळसतिह मा०

( २४३ )

माणिकदेवी के पुत्र ठाकुरसिंहने भार्या पातूदेवी, पुत्र वानर-  
राज आदि महित श्रीसोमसुन्दरसूरि द्वारा श्रीसुमतिनाथ-  
स्वामी का चिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६४ )

सं० १४८२ वैशाखकृ० ४ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय  
श्रे० देवराजने पिता आपमल, माता ऊमादेवी, पितृव्यरण-  
सिंह के श्रेयार्थ पिण्पलगच्छीय श्रीसागरमद्रसूरि द्वारा श्री  
संभवनाथजी का चिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६५ )

सं० १५२७ कार्तिककृ० ५ सोमवार के दिन थिरापद्र-  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखीय व्य० कर्माण भा०  
हमीरदेवी के पुत्र नाभराजने अपने पिता माता के श्रेयार्थ  
श्रीअजितनाथप्रभु का चिम्ब श्रीविजयसिंहसूरि के पट्टघर  
श्रीशान्तिनाथसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६६ )

सं० १५५२ फाल्गुनशु० ३ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय  
नियूगोत्रीय व्य० जीता भा० वानूदेवी पुत्र भीमराज भा०  
वरजूदेवी द्वि० भार्या कामलदेवी के पुत्र रामचन्द्र, रग-  
राजने कंछोली पूर्णिमापक्षीय भट्टा० श्रीविजयरालसूरि के  
द्वारा श्रीसुमतिनाथजी का चिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २४४ )

( १३७ )

सं० १५३७ न्येष्ठशु० २ सोमवार क दिन प्राग्वाट  
जातीय लघुशास्त्रीय भे० हरदास मा० गोलीबाई पुत्र राधा  
मा० टक्कूबाईन अपने भेपार्य भीष्मजितनाथजी का विम्ब  
तपागण्ठीय भीष्मस्त्रीसामरसरि क द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १३८ )

सं० १५३३ माघशु० १३ सोमवार के दिन सनाकुमं  
ग्राम निवासी भीभीमाळजातीय भे० ठाकुरसिंह मा कर्मा  
देवी पुत्र महाचक्रन मा० माण्डवदेवी, पुत्र संचारणद्व  
जममाल संहित द्वि० मा० दबहुमारी या द्राक्षादेवी ।  
भेपार्य भीसुमतिनाथजी का विम्ब पूर्णिमापक्षीय मङ्गा० भी  
कमलप्रमसरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १३९ )

सं० १४८४ में प्राग्वाटजातीय व्य सापर के पुत्र  
व्य० गदाराबने अपन भावा पचराज के भेपार्य भीष्मजि-  
नाथजी का विम्ब तपागण्ठीय भीसोमसुन्दरसरि के द्वारा  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७ )

सं० १४३६ वैशाखशु० ११ के दिन प्राग्वाटजातीय  
व्य० असबीर मा बांससेदेवी के पुत्र मामान अपने विष्णु

( २४५ )

माता के श्रेयार्थ श्रीमहावीरप्रभु का विम्ब श्रीपार्श्वचन्द्रसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७१ )

सं० १५२९ माघशु० १ बुधवार के दिन ब्रह्माणगच्छा-  
नुयायी श्रीमालज्ञातीय श्रे० भावराज मा० भावलदेवी के पुत्र  
रामाशाहने स्वभार्या लाडीदेवी के श्रेयार्थ पुत्र वरजू सहित निज  
पूर्वजों के श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का विम्ब श्रीविमलसूरि  
के पट्टघर श्रीवृद्धिमागरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७२ )

सं० १५३२ वैशाखशु० १३ सोमवार के दिन थारा-  
पद्रगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० ठाकुरसिंह मा०  
पाल्हणदेवी के पुत्र उदयसिंहने मा० अहिचदेवी, पितृव्य  
फाफराज, कालूराज, झालिया के श्रेयार्थ श्रीशान्तिसूरि के  
द्वारा श्रीअजितनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७३ )

सं० १२०४ वैशाखशु० ३ गुरुवार के दिन पंढेरक-  
गच्छानुयायी देल्हा भा० देल्हीबाई के पुत्र रत्नसिंह के  
श्रेयार्थ कुंवरसिंहने श्रीपार्श्वनाथजी का विम्ब श्रीशान्तिसूरि  
के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७४ )

सं० १५१३ वैशाख शु० ३ के दिन मूलसंघ में सर-

( २४६ )

स्वतीगच्छीय कुन्दकुन्दाचार्यसन्तानीय महा० श्रीसकल-  
कीर्ति के पदपर विमलेन्द्रकीर्तिगुरु क द्वारा इम्बदजातीय  
मे० बनद मा० बाम्देवी, पुत्र काला मा० पाल्हीदेवी,  
आता कीका मा० गोमतिदेवी, आता द्विबसिंह, आता  
पूनमचन्द्र, बत्सराजन श्रीभेयांसनापनी का विम्ब करवाया।  
( यह मूर्ति दिव्यवरसम्प्रदाय की है )

( १७५ )

सं १५३७ ज्येष्ठ शु० २ सोमवार के दिन वीरबंशीय  
मे० रत्ना मा० रत्नदेवी पुत्र मे० धनराज सुभादकन मा  
धर्मीबाई पुत्र पार्थदेव पधराज सहित अपनी भार्या क  
भेयार्थ अचलगच्छीय श्रीबपकेशरघुरि के उपदेश से श्री-  
सुमतिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसको भावस्तीनगर में  
भी संभने प्रतिष्ठित किया।

( १७६ )

सं० १४८५ माघ शु० ९ गुरुवार क दिन मावडा-  
गच्छाजुषायी श्रीभीमासहायीय ज्यब० परमदेव मा०  
कर्गदेवी के पुत्र पुण्यपालने पुत्र हीरा, हरदेव, यदुपाठ  
तथा माता पिता के भेयार्थ श्रीविजयसिंहरघुरि के द्वारा श्री  
संभनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

( १७७ )

सं १५९१ पौषशु० १ बुधवार के दिन श्रीभीमास

( २४७ )

ज्ञातीय श्रे० पूनमचन्द्र पुत्र डाहाचन्द्र भा० लाखुबाई पुत्र मेहा, समधर भा० लालीबाईने माता पिता के तथा अपने हितार्थ ब्रह्माणगच्छीय श्रीविमलसूरि के द्वारा वावड़ी ग्राम में श्रीसुमतिनाथजी का चिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७८ )

सं० १४०४ कार्तिककृ० ९ सोमवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय व्य० नरदेव भा० नीनादेवी तथा पितृव्य क्षेमराज, विजयराज के श्रेयार्थ तथा भ्राता नरसिंह आदि सर्व के हितार्थ ( नरदेव ) के पुत्र तिलकाने पूर्णिमापक्षीय श्रीसूरि के द्वारा श्रीपद्मप्रभपंचतीर्थी प्रतिष्ठित करवाई ।

( १७९ )

सं० १३८७ वैशाखशु० २ रविवार के दिन ब्रह्माण-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० वयराजने अपने श्रेयार्थ श्रे० कुरसिंह सहित श्रीपार्श्वनाथजी का चिम्ब श्री-जगसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८० )

सं० ११४८ श्रीनागरदेवने अपने श्रेयार्थ करवाया ।

( १८१ )

सं० १४५२ वैशाखशु० ५ गुरुवार के दिन श्रे० राठ पुत्र महं० राणा के पुत्र लालचन्द्रने अपने माता, पिता,



( २४८ )

पितृभ्य विजयरात्र के भेषाय भीषुष्यतिलकसूरिद्वारा श्री-  
छान्दिनायत्री का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८२ )

सं० १४५६ ज्येष्ठशु० १३ गुरुवार के दिन प्राम्नाट  
हातीय भे० मांगण भा० सुगुणादेवी के पुत्र मधराबने  
भ्राता गुणपाल, झगडुमल माता कुरदेवी क भेषाय भी-  
संमरनायत्री का बिम्ब भीरत्नप्रमदुरि के उपदेश से प्रति  
ष्ठित करवाया ।

( १८३ )

सं० १४६५ वैशाखशु० ३ गुरुवार के दिन भीमी  
माछहातीय ज्येष्ठ० वीरा भा० बीरहणदेवी के पुत्र परवतने  
अपनी माता क भेषाय भीसंमरनायत्री का बिम्ब नागेन्द्र  
मच्छीय भीरत्नसिंहदुरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८४ )

सं० १४५३ वैशाखशु० ३ गुरुवार के दिन भीमी-  
माछहातीय ज्येष्ठ० द्वाकने पितृभ्य नडीमल, माता सुहदा  
देवी, भ्राता सीमा, नडुआ, पंचजन के भेषाय भीषनतिलक-  
सूरि के उपदेश से भीमादिनायपचतीर्षी प्रतिष्ठित करवाई ।

( १८५ )

सं० १४९६ फाल्गुनशु० रविवार के दिन भीमीमाछ-

( २४९ )

झातीय श्रे० फला, मा० पोमीबाई, भ्राता जयकुरुगिह के श्रेयार्थ (फलराज) के पुत्र रहियाने श्रीकुन्धुनाथजी का बिम्ब पिप्पलगच्छीय म० श्रीप्रीतिरत्नसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८६ )

सं० १४८४ वैशाखकृ० ११ रविवार के दिन श्रीश्री-मालझातीय व्यव० फूटरमल मा० हांसलदेवीने अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीकुन्धुनाथजी का बिम्ब पिप्पलगच्छीय श्रीधर्मशेखरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८७ )

सं० १०४६ चैत्रकृ० १ के दिन अचलपुर के मघने ( बिम्ब प्रतिष्ठित ) करवाया ।

( १८८ )

सं० १४८९ वैशाखशु० ३ बुधवार के दिन श्रीश्री-मालझातीय श्रे० हीराने मा० हीरादेवी, पुत्र भाखर मा० साणीबाई अपने भ्राता के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथजी का बिम्ब श्रीब्रह्माणगच्छीय श्रीक्षमासूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८९ )

सं० १५५२ वैशाखकृ० ३ शनिवार के दिन श्रीकुंडी-शाखा के श्रीश्रीवंशीय व्यव० गहिआ मा० झांडुबाई पुत्र करणराज मा० तारू पुत्र पांता मा० रामतीबाईने पिता के

( २५० )

शेपार्थ अक्षयगण्डीय भीतिहान्तसागरधरि के उपदेश से भीष्मपुनायकी का विम्ब करवाया, जिसको अपने प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९० )

सं० १४९९ कार्तिकशु० पूर्णिमा गुरुवार क दिन भी भीमालहातीय व्य० अर्जुनदेव मा० काश्मीरदेवी पुत्र साय पौत्र बनराजने अपने पितामह के तथा अपने शेपार्थ भीष्मन्तिनायकी का विम्ब विष्णुगण्डीय त्रिमयिया म० भीष्म-शेखरधरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९१ )

सं० १५१५ कार्तिक८ १४ गुरुवार के दिन माण्डारगण्डीयुपायी भीभीमालहातीय व्य० मेहाबलने मा० शाधु बार्ह, पुत्र पुना, गंगा, सांगा, और पितृभ्य गेला सहित अपने शेपार्थ भीष्मितरुनायकी का विम्ब भीभीरधरि के पदुपर बी बिनदेवधरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९२ )

सं० १३०० वैशख० ८ मंगुवार क दिन सासुठा-योत्रीय शा० कर्मसिंह मा० बरभभी के पुत्र शा० झांझने भीदेवधरि के द्वारा भीपार्थनायकी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २५१ )

( १९३ )

सं० १३१४ वैशाखशु० ९ बुधवार के दिन ओसवाल-  
ज्ञातीय ठाकुर श्रीदेल्हा भा० सुहदादेवी के पुत्र शा० झांझण-  
देवने अपने पूर्वजों के श्रेयार्थ श्रीजयवल्लभसूरि द्वारा श्रीपद्म-  
प्रभस्वामि का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९४ )

सं० १५४७ वैशाखशु० ३ सोमवार के दिन प्राग्वाट-  
ज्ञातीय डीसाग्रामनिवासी व्य० लक्ष्मणने स्वभार्या रमकू-  
देवी, पुत्र लींवरज भा० टमकूदेवी, तेजराज, जिनदत्त,  
सोमराज, सूरदेव आदि महित अपने कल्याणार्थ श्रीशान्ति-  
नाथजी का विम्ब अंचलगच्छीय श्रीसिद्धान्तसागरसूरि के  
द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९५ )

सं० १५१७ मार्गसिरशु० १० सोमवार के दिन उष्म-  
शीय शा० राणा भा० राणलदेवि के पुत्र सुश्रावक खरह-  
थने स्वभार्या माणिकदेवी तथा पुत्र लक्ष्मण महित अंचल  
गच्छीय श्री जयकेशरसूरि के उपदेश से श्री चन्द्रप्रमस्वामी  
का विम्ब अपने पिता के श्रेयार्थ करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
श्रीसंघने करवाई ।

( १९६ )

सं० १४९४ श्रावणकृ० ९ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-

( १९२ )

इातीय व्य० समरदेव मा० साहजदेवी के भेषार्थ पुत्र  
अमराजन पिप्लगच्छीय त्रिमविया भीमर्मसेसरधरि के  
द्वारा भीमविधिनाथ पञ्चतीर्थी प्रतिष्ठित करवाई ।

( १९७ )

सं० १५०६ माघशु० १० सोमवार क दिन भीमास-  
इातीय व्य० पर्वत मा० राजुदबी पुत्र सदाददव, मेहराज,  
महीपालने अपन पिता माता के भेषार्थ नागेन्द्रगच्छीय भी  
पञ्चानन्दधरि के पङ्कपर भीविनपत्रमधरि के द्वारा भीङ्गपु  
नाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९८ )

सं० १४८९ वैशाखशु० १ सोमवार के दिन भीभीमास  
इातीय सं० सास्वराज मा० अमादबी क पुत्र शोम्बराजने  
अपन माता बडुआ के पुत्र माजन क भेषार्थ पिप्लगच्छीय  
भी सोमचन्द्रधरि के द्वारा भीशान्तिनाथजी का विम्ब प्रति  
ष्ठित करवाया ।

( १९९ )

सं० १३०९ काश्युनशु० १३ बुधवार के दिन सोराधा  
मोष्ठिक धा० हरदेवन अपन पुत्रों तथा अपने भेषार्थ भी  
पाशेनाथ प्रभु का विम्ब धर्मपोषमच्छीय भीअमरधमधरि के  
द्विष्य भीज्ञानचन्द्रधरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २५३ )

( २०० )

सं० १२१७ वैशाखकृ० १ के दिन ब्रह्माणगच्छीय श्री-  
प्रद्युम्नसूरि के द्वारा व्य० जोगराज के पुत्र विणुचन्द्र के  
श्रेयार्थ ( विम्ब ) प्रतिष्ठित करवाया ।

( २०१ )

सं० १४१२ ज्येष्ठशु० १३ गुरुवार के दिन श्रे० लूण-  
सिंह पाल के पुत्र विजयराजने अपने कल्याणार्थ श्री-  
अम्बिकाजी का विम्ब श्रीमाणिक्यसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित  
करवाया ।

( २०२ )

सं० १४३७ वैशाखशु० ११ सोमवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय कालदेवने पितृव्य तथा माता किसलदेवी के  
श्रेयार्थ पिष्पलगच्छनायक श्रीजयतिलकसूरि के द्वारा श्री-  
ऋषभदेवजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २०३ )

सं० १२६१ में शान्तू आसल सं० धारणने ( विम्ब )  
प्रतिष्ठित करवाया । )

---

१ बुद्धिसागरजी के जैनघातुप्रतिमालेखसमूह के द्वितीय-  
भाग के लेखाङ्क ९३१ में जयतिलक को धर्मतिलक भी लिखा है ।

( २५४ )

( २०४ )

सं० १५७२ कार्तिकशु० २ सोमवार के दिन भी  
आदिनाथजी का दिव्य प्रतिष्ठित करवाया ।

भोजकों की सेरी के आदिनाथचैत्य में धातुमूर्तियाँ-

( २०५ )

सं० १४८० फाल्गुनशु० १० बुधवार के दिन कोरंट  
पण्डीय भीमभाचार्यसन्तानीय उपकेन्द्रज्ञातीय भे० हेमराज  
मा० मरमीबाई पुत्र मनराज मा० ठाकुर पुत्र आस्था मा०  
आशुदेवी के पुत्र हेमराज, सांगण मा० मामिनीने भीआदि  
नाथचतुर्विंशतिदिनपङ्क भीष्मपुरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २०६ )

सं १४७९ चैत्रशु० १ गुरुवार के दिन भीभीमान  
ज्ञातीय मंत्री वीरदेव मा० लक्ष्मणादेवी के पुत्र वस्तराज मा०  
रामादेवी के भेयार्थ वीरदेव क पुत्र देवराज, बनराज व  
भी आदिनाथचतुर्विंशतिपङ्क करवाया, विष्णुकी प्रतिष्ठा वारा  
पद्मगण्डीय भी छान्तिपुरि की ।

( २०७ )

सं० १५८२ वैशाखशु० ३ के दिन पचननगर निवासी  
भीभीमासज्ञातीय भे० नरवद मा० जीविनी पुत्र विजय  
राज, हरराज, विजयराज मा वयप्रठदेवी के पुत्र धरज

( २५५ )

राजने अपनी पितामही लीलादेवी के श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय प्रधान-शाखीय श्रीकमलप्रभसूरि के उपदेश से हुई ( लीलादेवी नरवद की द्वि० भार्या होगी )

( २०८ )

सं० १४८३ वैशाखशु० ५ गुरुवार के दिन उपकेश-वशीय सं० जसराजने मा० चांपलदेवी, पुत्र वीसल, कन्या वडलीबाई के सहित स्वश्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पडेरकगच्छीय श्रीशान्तिसूरिने की ।

( २०९ )

सं० १५०५ माघशु० १० रविवार दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० कर्मसिंह मा० हासूदेवी पुत्र श्रे० नरपति सुश्रावकने स्वभार्या नयनादेवी, प्रमुख परिजनों के सहित माता पिता के श्रेयार्थ अंचलगच्छाघिराज श्रीश्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीसुविधिनाथजी का विम्ब करवाया, श्रीसंघने उसकी प्रतिष्ठा की ।

( २१० )

सं० १५०३ माघशु० १३ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मालदेव मा० कामलदेवी पुत्र व्य० केरहा मा० हर्ष-देवी पुत्र व्य० मंडन मा० देहीबाईने पुत्र व्य० बेलराज,



( २५६ )

गेलराव आदि परिवारों के सहित श्रीधर्मनाथजी का विम्ब  
अपन कन्याभार्य करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तृपागच्छीय  
भीरत्नशेखरसरिने की ।

( २११ )

सं० १५१५ वैशाखशु० ३ शनिवार के दिन पीठापुर  
निवासी ओमबालुश्रीय होशी असराव मा० असमाबाई पुत्र  
दो० अमरचन्द्र मा० देवशी के पुत्र दो० कृष्णमछने स्वमा०  
कामछदेवी, द्वि० मा० हीरदेवी पुत्र दो० बनराव, दो०  
बनराव मा० मोही, बनराव पुत्र कान्हा दगड मधुसु परि  
सनों के सहित श्रीधर्मनाथजी का विम्ब श्रीधरि क द्वारा  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( २१२ )

सं० १५१५ वैशाखशु० २ गुरुवार के दिन प्राग्वाठ  
श्रीय भे० वागमछने मा० पोमी पुत्र वेतराव मा० हांपी,  
पुत्र बीरदब सहित अपन भेयार्य श्रीचन्द्रप्रमप्रसु का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सिद्धान्तमच्छीय म० श्रीसोम  
चन्द्रसरिने की ।

( २१३ )

सं० १५३८ वैशाखशु० ५ बुधवार के दिन श्रीभीमाळ  
श्रीय भे० भीराने मा० मलीबाई पुत्र आक्षराव, मनुदेव,  
चनुदेव देवराव ईंगरशी, अदुराव सहित अपने भेयार्य श्री

( २५७ )

चन्द्रप्रमस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा चैत्र-  
गच्छीय म० श्रीरत्नदेवस्वरि के पट्टधर भट्टा० श्रीअमर-  
देवस्वरिने की ।

( २१४ )

सं० १५२५ भाषकृ० ६ दिन चांपानेरनिवासी गुर्जर-  
ज्ञातीय महाजन नरसिंहने स्वभा० आशूबाई, पुत्र जिनकाम,  
पुत्र पद्मकिरण, श्रीवत्सराज, पहिराज आदि स्वपरिजनों सहित  
अपने श्रेयार्थ श्रीनमिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीलक्ष्मीमागरस्वरिने की ।

( २१५ )

सं० १५३३ वैशाखशु० ६ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय श्रे० कर्मसिंह भा० लाछूबाई पुत्र श्रे० अमरराजने  
भा० देसलबाई सहित अपने पिता-माता के तथा स्वश्रेयार्थ  
श्रीसुविधिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
नागेन्द्रगच्छीय म० श्रीगुणदेवस्वरिने थिरापट्टनगर में की ।

( २१६ )

सं० १२४४ फाल्गुनशु० ३ बुधवार के दिन आम्रयक्ष  
पुत्र आमूने अपनी माता राजिमति के श्रेयार्थ प्रभुविम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीमतिप्रमस्वरिने की ।

( २५८ )

( २१७ )

सं० १५४५ फाल्गुन कृ० २ सोमवार के दिन गाँफ्राम निवासी भीभीमाठ्ठाठीय सं० भीमराज मा० नामिनी पुत्र कर्देया मा० पुतलीबाईने अपने माता पिता के भयार्थ भीनमिनापची का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्विमापचीय भीसाधुसुन्दरधरि के पङ्कर भी भी भीदेव सुन्दरधरि के उपदेश से हुई ।

( २१८ )

सं० १४८१ पौषकृ० ८ शुकवार के दिन भीभीमाठ्ठाठीय व्य० विरूभा मा० अमरदेवी क पुत्र हरप्रबने अपने माता पिता के भयार्थ भीसंभवनापची का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रमण्ठीय भीपधानन्दधरिने की ।

( २१९ )

सं० १५०३ ज्येष्ठशु० ९ बुधवार के दिन व्य० मेरन मा० मास्वदेवी के पुत्र मंडनने अपने पुत्र भीरवराज के सहित अपने भयार्थ भीसुमतिनापची का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा हरदगण्ठीय सत्यपुरीय भङ्गा० भीपार्थपन्द्रधरिने की ।

( २२० )

सं० १५१३ माघशु० ३ शुकवार के दिन उपकेर

( २५९ )

ज्ञातीय पर्वजगोत्रीय व्य० शिव के पुत्र देवराजने अपनी मा० देवली के सहित माता संसारबाई के श्रेयार्थ श्रीपद्म-प्रभस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा बड़गच्छीय श्रीमर्वदेवस्वरिने की ।

( २२१ )

सं० १५१० माघशु० १० बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० श्रवण, कालू तथा समघने पिता भामट, माता मीनलबाई के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नस्वरि के उपदेश से मविधि वयणाग्राम में हुई ।

( २२२ )

सं० १५६५ ज्येष्ठकृ० २ के दिन मुनिमहिमेरुने श्रीपार्श्वनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित किया ।

( २२३ )

सं० १७८५ मार्गशिरशु० ५ के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय वीरा जसराजने स्वश्रेयार्थ श्रीधर्मनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा कडुआमतानुयायी शाहाजी लाधाजी थोभनजीने करवाई ।

( २२४ )

सं० १४११ ज्येष्ठकृ० ९ शनिवार के दिन श्रीश्रीमाल-

( २३२ )

( २३२ )

सं० १६११ वैशाखशु० १० बुधवार के दिन पिरात्र नगर निवासी भीभीमालयातीय वृहच्छासा में सेवक पुत्र मठ इसराजने स्वकर्मभयार्थ भीमादिनायजी का विम्ब करवाया ।

( २३३ )

सं० १५६८ माघशु० ५ शुक्रवार के दिन पिडाठमा श्राव निवासी प्रह्लाणगच्छानुयायी भीभीमालयातीय भे० बठरात्र मा० सुलभबाबाई के पुत्र पातराजने अपने तथा पिता, पिता के भेयार्थ भीषन्त्रप्रमस्वामी का विम्ब मुनिषन्त्रहरि क द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २३४ )

सं० १५६९ ज्येष्ठशु० ५ सोमवार क दिन भे० सेवक कातराजने भीषामनायजी का विम्ब ( प्रतिष्ठित ) करवाया ।

( २३५ )

सं० १५१८ फाल्गुनशु० ९ सोमवार के दिन उपकश्र-यातीय शाह नवलमठ मा० नामसबाई क पुत्र द्वारात्र मा० माणदेवीने अपने भेयार्थ भीसंमबनायपंचतीर्थी करवाई जिसकी प्रतिष्ठा माण्डारगच्छीय म० श्रीमाणदेवहरिने की ।

( २३६ )

सं० १५३२ ज्येष्ठशु० ३ रविवार क दिन पटल या

( २६३ )

सामन्तराज भा० कमीदेवी के पुत्र वत्सराजने स्वभा०  
द्वीपदेवी, रत्नदेवी, भ्राता हीराके पुत्र ठाकुरदेव प्रमुख  
कुटुम्बी जनों के सहित श्रीविमलनाथ प्रभु का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छनायक श्रीलक्ष्मीसागरस्वरिने की ।

( २३७ )

सं० १४८८ कार्तिकशु० ३ बुधवार के दिन अंचल-  
गच्छीय श्रीजयकीर्तिसूरि के उपदेश से नागरजातीय परी-  
क्षकगोत्रीय व्य० धंधराजने भा० आल्हणदेवी, पुत्र हापराज  
के श्रेयार्थ श्रीअभिनन्दनम्बामी का विम्ब करवाया, जिमकी  
प्रतिष्ठा श्रीस्वरिने की ।

( २३८ )

सं० १४९९ कार्तिककृ० २ रविवार के दिन श्रीश्री-  
मालजातीय व्य० वासरदेव भा० रामलदेवी ( के पुत्र )  
धनराजने भ्राता तेजपाल के श्रेयार्थ पिप्पलगच्छीय त्रिम-  
विया श्रीधर्मगेखरस्वरि के द्वारा श्रीशीतलनाथजी का विम्ब  
थिरापद्रनगर में प्रतिष्ठित करवाया ।

( २३९ )

सं० १५२० वैशाखशु० ५ बुधवार के दिन धीश्री-  
वंशीय ठ० कन्हैयालाल पुत्र सारगदेव भा० हरखादेवी के  
पुत्र महिराज सुश्रावकने स्वभा० कुवरदेवी, भ्राता शिवराज,

( २६४ )

सिहराज, चतुर्वराज तथा पुत्र खेठमठ के सहित माता पिता के भेषार्थ अंबलगच्छीय भीमपकेरपुर के उपदेश सं भीराजपूज्यस्वामी का विम्व करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भीसंधने करवाई ।

( २६० )

सं १५२५ ज्येष्ठशु० ५ सोमवार क दिन बयसाड़ा ग्राम निवासी भीभीमालशाहीय व्य० सठमण मा० प्रेमी के पुत्र व्य० सिहराजने स्व मा० लीलादेशी (लाइकुमारी) पुत्र महिराज मोहराज आदि कुडुम्बी बनो के सहित परम करपाव क ठिये भीकुम्पुनावसी का विम्व करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा अम्बावगच्छीय भीवीरपुरिने की ।

( २६१ )

स० १५८१ भाषक० १० शुक्रवार के दिन भीभीमालशाहीय बृहन्नाम्ना में सीनाध्याय निवासी भे० छालचन्द्र मा० लीलादेशी पुत्र बत्सराज मा० बीमलक्ष्मीन पुत्र बनराज, हंसराज कुडुम्बीबनो के सहित भीषान्तिनाथसी का विम्व नियमप्रमाणक भीमानन्दपुरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २६२ )

सं १५२३ वैशाखशु० १३ के दिन मुधिरापुर निवासी प्राग्भाटशाहीय व्य० मेहराज मा० सोपार्थ क पुत्र महिम

( २६५ )

राजने स्वभा० मरघू पुत्र लटकनदेव, भ्राता नरवद आदि कुटुम्बीजनों के सहित अपने श्रेयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीलक्ष्मी-सागरसूरि के द्वारा हुई ।

( २४३ )

सं० १५०६ माघशु० ५ रविवार के दिन ब्रह्माण-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० पेथड़ पुत्र देसल मा० महिगलवाईने अपने श्रेयार्थ जीवितस्वामि श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब श्रीपञ्जूनसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २४४ )

सं० १४९३ फाल्गुनशु० १० शुक्रवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय श्रे० आल्हणसिंह मा० लाड़ीवाई के पुत्र श्रे० भूमवराजने अपने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीसूरि के द्वारा श्रीशीतलनाथप्रभु का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २४५ )

सं० १४२२ ज्येष्ठशु० ५ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० पीपाने पिता लक्ष्मण, माता लक्ष्मणी, पितृव्य सिंहाराज के श्रेयार्थ श्रीविमलनाथ प्रभु का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा पिष्पलगच्छीय श्रीमृनिप्रभसूरिने की ।

( २४६ )

सं० १५६४ वैशाखशु० ३ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-



( २११ )

शाहीय श्य० वीरदेव मा० मृंगारदेवी के पुत्र वीरमदेव मा० हेमदेवी के पुत्र वेठरावने पिता माता के भेषार्थ भीवासु पूज्यस्वामी की पक्षतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्विया पक्षीय भीरत्नशेखरधरि के उपदेश से हुई ।

( २४७ )

सं० १५८१ माघशु० ५ गुरुवार के दिन आदियालपुर निवासी भीभीमासशाहीय महं० रत्नराज पुत्र... मा० प्रीतम देवीने अपने बुद्धुम्बीवनों क भेषार्थ भीमनिमुद्रतस्वामी की पक्षतीर्थी आगममच्छ्रीय भीसोमरत्नधरि के उपदेश से प्रतिष्ठित करवाई ।

( २४८ )

सं० १५०७ बैशाखशु० ११ सोमवार के दिन भीभी मासशाहीय श्य० अयंतराज मा० बामुंगदेवी के पुत्र आशुपदेवने अपने पिता माता के साथ अपने भेषार्थ विष्णुमच्छ्रीय त्रिमविया महा० भीचन्द्रप्रमधरि के द्वारा भीवासुपूज्यस्वामी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २४९ )

सं० १३९२ वैशाख शु० ७ बुधवार के दिन भीमास शाहीय श्य० बयरबसिंह मा० विजयादेवी...पिता माता के भेषार्थ भीपायनाथ प्रभु का विम्ब भीदेवेन्द्रधरि के पक्षीय भीचिनचन्द्रधरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २६७ )

( २५० )

सं० १६८१ व्यव० नानदेवने श्रीशान्तिनाथप्रभु का विम्ब ( प्रतिष्ठित ) करवाया ।

( २५१ )

सं० १६२४ फाल्गुनशु० ४ मंगलवार के दिन श्री-  
सूरिने श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित किया ।

सुनारों की सेरी के पार्श्वनाथचैत्य में धातुमूर्तियाँ—

( २५२ )

सं० १५०८ वैशाखकृ० ४ सोमवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय श्रे० नयनराजने भा० टठिकुवाई, पुत्र श्रे०  
लक्ष्मणदेव, हेमराज और दूदा कुडुम्बसहित पिता माता के  
श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा  
सिद्धान्तीय श्रीनोमचन्द्रसूरि के द्वारा हुई ।

( २५३ )

सं० १६१७ पौषकृ० १ गुरुवार के दिन राजाधिराज  
श्रीअश्वसेन राज्ञि श्रीवामादेवी के पुत्र श्री श्री श्रीपार्श्वनाथ-  
प्रभु का विम्ब थिरापट्ट निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० कुरा  
धींगा के पुत्रोंने कर्मों के क्षय के लिये(प्रतिष्ठित) करवाया ।

( २१८ )

आमली सेरी के सुपार्श्वचैत्य में चातुर्मुखियाँ-

( २५४ )

सं० १५०८ ज्येष्ठसु० ७ बुधवार क दिन भीभीवाल  
जातीय सांडलगोत्रीय श्राद्ध हापराम मा० शीराबाई के पुत्र  
सा० पोपट सुशाबकने मा० मान्दजदेवी, दोहित्र लक्ष्मणदेव,  
सलक्ष्मण के सहित पुत्र मला के भेयार्थ अंबलगाण्ठीय  
भीत्रयकेशरसरि के उपदेश से भीवासूज्यस्वामी का विम्ब  
करवाया, और उसकी प्रतिष्ठा श्रीसंपने करवाई ।

( २५५ )

सं० १४९९ वैशाखसु० ४ गुरुवार क दिन उपदेश  
जातीय श्रीकान पिता माळराम, माता मोल्लबाई के  
भेयार्थ भी नमिनापणी का विम्ब करवाया, विमकी प्रतिष्ठा  
माबहारगण्ठीय महुा० शीरसरिने की ।

( २५६ )

सं० १५०८ ज्येष्ठसु० १० सोमवार क दिन प्राम्ना  
जातीय स्व० मोळसदेवन मा० हृषिकेशी, पुत्र हीराचन्द्र,  
स्व० सहसराम पुत्र ऊळस के सहित अपने भयार्थ भीभेयांस  
नाचणी का विम्ब करवाया, विमकी प्रतिष्ठा शीरापस्ती-  
गण्ठीय भीठदपचन्द्रसरिने की ।

( २६९ )

( २५७ )

सं० १६८३ वैशाखशु० ७ गुरुवार के दिन राजधन्यपुर  
(राधनपुर) निवासी श्रीश्रीमालजातीय शा० हरदासने मा०  
हीरादे सहित श्रीशीतलनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया  
. . . . . (यहाँ आचार्य का नाम होना चाहिये)

( २५८ )

सं० १५६७ ज्येष्ठशु० ५ बुधवार के दिन मूलसधीय  
शा० हीरादेवीने (पंचतीर्थी करवाई)

( २५९ )

सं० १२०९ उहूल की पुत्री ढोलिकाने (ढोलतदेवी)  
यह चतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया ।

राशिया की सेरी के अभिनन्दन चैत्य में  
धातुमूर्तियाँ—

( २६० )

सं० १५५३ आषाढशु० २ शुक्रवार के दिन पत्तन-  
निवासी प्राग्वाटजातीय वृद्धशाखा में स० सेंगा मा० हरग्वू  
पुत्र स० अमा (अमृतराज) ने मा० लीलादेवी पुत्र धेमा,  
सिन्धु, लखमण, अलवा, घना सहित अपने कल्याणार्थ  
श्रीमृनिमुव्रतस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा

( २६० )

पूर्णिमापक्षीय भीमपल्लीय महा० भीषारित्रपन्द्रहरि क  
पङ्कपर म० भीष्मनिपन्द्रहरि के उपदेश से हुई ।

( २६१ )

सं० १५१९ माघशु० ७ सोमवार क दिन धिरापर  
नगर निवासी भीष्मीमालझाठीय गाधिक हापरात्र मा०  
हमीरदेवी क पुत्र बागरात्रन स्वमा० यमुनादेवी पुत्र बेठा,  
ऊगम, मादा खेरा के सहित पिशा, माता, आता मदन के  
भयार्थ भीषमनाथचतुर्विंशति त्रिनपङ्क करवाया, बिसुष्टी  
प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय प्रधान महा० भीत्रपत्रिहरि के पङ्क  
पर भीष्मप्रभहरि क उपदेश से हुई ।

मोदियों की सेरी के विमलनाथचैत्य में  
धातुमूर्तियाँ—

( २६२ )

सं० १५१५ फागुनशु० ४ बुधवार के दिन भीभी-  
मालझाठीय रत्नपाल मा० रत्नादेवी क पुत्र छाह रामपदे  
मा ललितादेवी, पुत्र गौपल मा० रुपिणी के भयार्थ,  
आता सं० रूंपरने मा० साँसदेवी पुत्र गोपा सहित मोडा,  
विश्वपरात्रन भीनभिनाथपुरुष चतुर्विंशतित्रिनपङ्क करवाया,  
बिसुष्टी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय भीसापुररत्नहरि के पङ्कपर  
भीसाधुसुन्दरहरि के उपदेश से सपिनपर में हुई । ( प्रतीव

( २७१ )

ऐसा होता है कि भोज और विजयराज अविवाहित थे ।  
चारोंने मिलकर पट्ट प्र० करवाया । )

( २६३ )

सं० १५१९ मार्गशिरशु० ५ शुक्रवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्य० हिमाला मा० हिमादेवी के पुत्र वनराजने  
अपने श्रेयार्थ मा० चांपू, पुत्र पर्वत, नरवर, नायक, नल-  
राज, जुगराज, लक्षराज सहित श्रीचन्द्रप्रमस्वामी का विम्ब  
अंचलगच्छीय श्रीजयकेशरक्षरि के उपदेश से प्रतिष्ठित  
करवाया ।

( २६४ )

सं० १५२० पौषकृ० ५ शुक्रवार के दिन श्रीमूलसंघीय  
व्य० कृष्णराज मा० झबुवाई पुत्र माणक मा० वारुवाई के  
पुत्र हरिदासने सरस्वतीगच्छीय भट्टा० सकलकीर्त्ति के पट्टधर  
भट्टा० श्रीविमलेन्द्रकीर्त्ति के द्वारा श्रीआदिनाथ का विम्ब  
प्रतिष्ठित करवाया । ( दिगम्बरमतीय )

( २६५ )

सं० १६११ फाल्गुनकृ० २ शुक्रवार के दिन कडुआ-  
मतानुयायिनी निसम्बुवाईने और थिरापद्रनिवासी मुहत्तावाईने  
श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब ( प्रतिष्ठित ) करवाया ।

( २६६ )

सं० १६६१ फाल्गुनकृ० २ शुक्रवार के दिन गृहीरदय-

( २७९ )

वठ मा० ह्वाबाई क पुत्र बापरामन भीममिनन्दनस्वामी  
का विम्ब ( प्रतिष्ठित ) करवाया ।

( २६७ )

सं० १५८... वैशाखक० ५ के दिन बठागरीनाथ  
निवासी प्राम्बाटघातीय झाइ इदगमने मा० शशीबाई पुत्र  
अयबंतराम सहित अपने कस्याणार्थ श्रीभेषासनाथश्री क  
विम्ब करवाया, शिमकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय मङ्गा० श्री  
शिनहपछरि क उपदेश से हुई ।

सुतारों की सेरी के शांतिनाथशैस्य में धातुमूर्तियाँ

( २६८ )

सं० १४८३ ज्येष्ठशु० ९ मयलवार क दिन भीभीमक-  
घातीय अ्य० महिपाल मा० भीनलबाई पुत्र हरिअम, शैश  
पापा, पास्हा, सिन्धु नरबदने पिता, माता, आता, तथा  
पुत्रों के भेषार्थ श्रीबादिनाथस्यबहुविधतिविम्बपङ्क करवाया,  
शिमकी प्रतिष्ठा चारपत्रमपक्षीय भीषान्तिघरिने की ।

( २६९ )

सं० १५१८ फासुनक० १ सोमवार क दिन उपकेश  
घातीय नाहरमोत्रीय अ्य० कृष्णचन्द्रने मा० श्रीशेषबाई  
पुत्र त्रिहुवा, महजा, पैमा, धंनर सहित अपने पिता क स्व-  
भेषार्थ भीषुविधिनाथस्यबहुविधतिविम्बपङ्क करवाया, शिमकी  
प्रतिष्ठा

की ।

( २७३ )

( २७० )

सं० १५८७ वैशाखकृ० ७ सोमवार के दिन काका-  
ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय भे० साहआ पुत्र थं०  
सवाने मा० वानूवाई पुत्र लटकण मा० लाखणदेवी समन्त  
कुडुम्बी जनों के सहित श्रीशान्तिनाथप्रभु का विम्ब कर-  
वाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीसूरिने की।

( २७१ )

सं० १६१७ ज्येष्ठशु० ५ सोमवार के दिन ओसवाल-  
ज्ञातीय व्य० रायमल मा० श्रीवाई पुत्र हीरा मा० जीवा-  
वाई पुत्र सिंहराजने श्रीशान्तिनाथजी का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीविजयदानसूरिने की।

( २७२ )

सं० १५१९ मार्गशिरशु० ६ शनिवार के दिन रत्नपुर-  
वासी प्राग्वाटज्ञातीय लघुशास्त्रा में मं० अरिसिंह मा० बाई-  
देवी पुत्र सं० गोपासुश्रावकने मा० सुलहश्री पुत्र देवदास,  
शिवदास, सहित अपने श्रेयार्थ अंचलगच्छाधिराज श्रीजय-  
केशरसूरि के उपदेश से श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया,  
श्रीसंघने उसकी प्रतिष्ठा करवाई।

( २७३ )

सं० १४९४ माघशु० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-



द्वितीय ब्य० साइबय मा० सोनइछदेवी के पुत्र संग्रामसिंहने पितृव्य छाड़ा के भेषार्य पूर्णिमापक्षीय भीषयप्रमसरि के उपदेश से श्रीकृष्णुनाथस्वामी का चिम्ब करवाया और भीसंपने उसकी प्रतिष्ठा करवाई ।

### श्री जीरापल्ली ( जिराउला ) तीर्थ—

जीराउला पार्थनाथ नाम से यह तीर्थ प्रसिद्ध है । इस पुस्तकगत लेखों के मापार पर यह कहा जा सकता है कि यह तीर्थ पन्द्रहवीं शताब्दि में अधिक प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है; जिसका प्रारम्भ तेरहवीं शताब्दि का अन्त वा चौदहवीं शताब्दि में हुआ होना चाहिये । इस वाकन बिना छपवाले सौमधिसखरी मन्दिर की मूलनाथक प्रतिमा मगवास पार्थनाथ की है । पद्मिनी, पांशवी, सोसहरी, चौबीसरी, पचीसरी, छम्बीसरी और सत्तासीसरी देवकृतिका ऐसी हैं कि जिन में से कुछ पर तो लेख हैं ही नहीं पर के लेख अतिभीर्ण और अस्पष्ट हैं । इनके सर्व देवकृतिकामों के शिखासेख इस में हैं । देवकृतिका नम्बर छियालीष, और अज्ञानने के शिखासेख १४११, सं० १४१२ छीसरी देवकृतिका का द्वितीय और चतुर्थ में

रि के पट्टधर श्री रामचन्द्रसूरि का नाम है और तृतीय लेख में श्रीविजयसेनसूरि के शिष्य श्रीरत्नाकरसूरि का नाम है ।

सतरहवीं, अडतालीशवीं और त्रियालीशवीं देवकुलिकाओं के लेखों में किसी भी आचार्य या साधु का नाम नहीं है, परन्तु देवकुलिकाओं के अतिरिक्त एक लेख के सर्व ही लेख पन्द्रहवीं शताब्दि के ही हैं । अन्तिम लेख सं० १४९२ का है । इस तीर्थ की प्रसिद्धि करवाने का अधिक श्रेय तपागच्छ के महान् आचार्य श्रीदेवसुन्दरसूरि के शिष्य श्रीसोमसुन्दरसूरि की शिष्य परम्परा में श्री जयचन्द्रसूरि श्री भुवनचन्द्रसूरि और श्री जिनचन्द्रसूरि को है ।

देवकुलिका नम्बर आठ, नौ, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पन्द्रह, उन्नीश, तेवीश और इक्कावन के शिलालेखों में श्रीसोमसुन्दरसूरि के चतुर्थ पट्टधर श्रीभुवनचन्द्रसूरि का नाम है । देवकुलिका नम्बर अठारह के लेख में कृष्णपिंगच्छ के श्रीजयसिंहसूरि का, देवकुलिका नम्बर बीस के लेख में धर्मधोषगच्छ के श्रीविजयचन्द्रसूरि का और देवकुलिका नं० बावीस के द्वितीय लेख में मल्लधारीगच्छ के श्रीविद्यामागरसूरि का नाम है । ये सर्व लेख सं० १४८३ भाद्रपदकृष्णा सप्तमी गुरुवार के हैं । इन लेखों से प्रगट होता है कि सं० १४८३ में जीरापट्टीतीर्थ में उक्त चारों



सूरि के पट्टघर श्री रामचन्द्रसूरि का नाम है और तृतीय के लेख में श्रीविजयसेनसूरि के शिष्य श्रीगुनाकरसूरि का नाम है ।

मतरहवीं, अडतालीशवीं और वियालीशवीं देवकुलिकाओं के लेखों में किसी भी आचार्य या साधु का नाम नहीं है, परन्तु देवकुलिकाओं के अतिरिक्त एक लेख के सर्व ही लेख पन्द्रहवीं शताब्दि के ही हैं । अन्तिम लेख सं० १४९२ का है । इस तीर्थ की प्रसिद्धि करवाने का अधिक श्रेय तपागच्छ के महान् आचार्य श्रीदेवसुन्दरसूरि के शिष्य श्रीमोमसुन्दरसूरि की शिष्य परम्परा में श्री जयचन्द्रसूरि श्री भुवनचन्द्रसूरि और श्री जिनचन्द्रसूरि को है ।

देवकुलिका नम्बर आठ, नौ, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पन्द्रह, उन्नीश, तेवीश और इक्कावन के शिलालेखों में श्रीसोमसुन्दरसूरि के चतुर्थ पट्टघर श्रीभुवनचन्द्रसूरि का नाम है । देवकुलिका नम्बर अठारह के लेख में कृष्णपिंगच्छ के श्रीजयसिंहसूरि का, देवकुलिका नम्बर बीस के लेख में धर्मघोषगच्छ के श्रीविजयचन्द्रसूरि का और देवकुलिका नं० बासीस के द्वितीय लेख में मल्लधारीगच्छ के श्रीविद्यासागरसूरि का नाम है । ये सर्व लेख सं० १४८३ भाद्रपदकृष्णा सप्तमी गुरुवार के हैं । इन लेखों से प्रगट होता है कि सं० १४८३ में लीरापल्लीतीर्थ में उक्त चारों

आचार्यों का एक साथ चतुर्मास या और इन आचार्यों के दशनाथ अनेक समीपवर्ती ग्राम नगरों से व्यक्ति और संघ जाये थे । कलबर्गी नगर का संघ अधिक उल्लेखनीय है । इस संघ के व्यक्तियों द्वारा विनिर्मित उक्त देवकुलिकाओं में श्रीगुणनन्दप्रिय का नाम है; जिस से प्रगट होता है कि कलबर्गी में अधिकतर धैन तथागच्छक अनुयायी थे । इस समय उक्त बीरापल्ली एक प्रसिद्ध खान बन गया था और उसकी समृद्धि इतनी बढ़ गई थी कि उक्त चारों महान् आचार्यों के चतुर्मास का भार एक साथ वहन करने की उस में क्षमता थी ।

पन्द्रहवीं, सोलहवीं, सतरहवीं और ठीसवीं शताब्दि के पूर्वार्ध का कोई लेख नहीं है । अन्तिम लेख बाबनवी देवकुलिका के चतुर्मासिक के सम्म पर उत्कीर्णित सं १८५१ आश्विन पूर्णिमा का है, जब कि श्रीरंग विमलप्रियी द्वारा इस तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाया गया था और १०११) रुपये इस छुम कार्य में व्यय हुए थे । एक से एकतालीस उक्त के शिलालेख इसी तीर्थ के हैं, जिनका हिन्दी अनुबाद नीचे दिया गया है । लेखों में जो तिथियों और दिवसों की जर्जीब बनमेसठा है, मरसक सुसजाने का प्रयत्न करने पर भी कहीं कहीं पूरी असफलता रही है । एक उदाहरण नीचे देखिये—

निर्माण दिवस	देवकु०	लेखाङ्क	आचार्य
सं० १४८३ वै० कृ० १३ गुरुवार	२८	२१	जयकीर्तिसूरि
" " " "	२९	२३अ-ब	"
सं० १४८३ प्र० वै० कृ० १३ गुरुवार	३०, ३४	२३, २७	"
" " " "	३५	२८	"
" प्र० वै० कृ० ७ रविवार	४३, ४४	३२, ३३	जयचन्द्रसूरि
, भाद्र० कृ० २ गुरुवार	५१	४०	भुवनसुन्दरसूरि
" भाद्र० कृ० ७ शुक्रवार	५२(अ)	४१	"

देवकुलिका नं० २८, २९ के शिलालेख संवत् १४८३ वैशाखकृष्णा त्रयोदशी गुरुवार के हैं और देवकुलिका नं० ३०, ३४ के शिलालेखों में वैशाख के पीछे 'प्रथम' शब्द जुड़ा है, परन्तु तिथि, वार और आचार्य का नाम देखते हुए ये सर्व लेख एक ही दिन और एक ही मास के हैं। हो सकता है दोनों प्रथम लेख वैशाख के हो अथवा द्वितीय के। कभी कभी संभवतः तिथियों की ऐसी भी घटती बढ़ती हो सकती है कि दो महिनों की कुछ तिथियाँ और वार एक ही आ पड़ते हैं। परन्तु अन्तर तो यहाँ आ पड़ता है कि प्र० वैशाख कृष्णा त्रयोदशी को दिन गुरुवार था जो प्र० वै० कृ० सप्तमी को रविवार कैसे पड़ सकता था। इसी प्रकार भाद्रपदकृष्णा द्वितीया को और सप्तमी को क्रमशः गुरुवार और शुक्रवार कैसे पड़ सकते हैं? जब कि लेखाङ्क ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, २० के

अनुसार मात्रपदकृष्णा सप्तमो को गुलवार था। दो दो ठिपियों के टूटने पर ही ऐसा संभाव्य है, तो प्रायः संभव नहीं अति कठिन है।

( २७४ से २७६ )

देवकुलिका न० २, ३, ४

स्वस्ति भी सं० १४८१ वैशालशु० ३ के दिन चर चपापष मन्ना० धीरस्नाकरधरि क मनुक्रम से हुए भी जमपसिंहधरि क पद्मारुध भीमपतिलकधरीश्वर के पाट को अलकृत करनेवाले मङ्गारक धीरस्नसिंहधरि के उपदेश से भीससनगरनिवासी प्राग्वाटवशु को सुशोभित करनेवाले भे० खेठसिंह का पुत्र भे० देहसिंह का पुत्र भे० स्त्रीसा मा० विमलदेवी उसके पुत्र सं० सादा, सं० शादा, सं० मादा, सं० सासा, सं० सिषा द्वारा इस तीर्थ के वैद्य में तीन देव कुलिकायें अपने कस्यावार्थ बनवाईं।

पूर्वचन्द्र नाहर एम ए. भी एल ने अपने 'लेखसंग्रह' प्रथम भाग के लेखाङ्क ९७७ को जो लेख उद्धृत किया है, इससे बहुत अधिक मिलता है। उन्होंने विमलदेवी के स्थान पर पिनछदेवी, सं० मूदा सं० मादा० क स्थान पर और देहक, शादा न सिख कर स्पष्ट देवल और दादा लिखा है और सं० सासा का नाम ही नहीं है जो विषा रणीय है।

( २७९ )

( २७७ )

## देवकुलिका नं० ६.

सं० १४८७ पौषशु० २ रविवार के दिन अंचलगच्छ के श्रीमेरुतुङ्गसूरि के पट्टघर गच्छनायक श्रीजयकीर्तिसूरि के उपदेश से पुंगलनिवासी प्राग्वाटज्ञाति के शा० भाणा पुत्र शा० जामद ( जामट ) की पत्नी सं० .. .. .

( २७८ )

## देवकुलिका नं० ७.

सं० १४८७ पौषशु० २ रविवार के दिन तपागच्छीय श्रीदेवसुन्दरसूरि के पट्टघर श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीमृणिसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि श्रीभुवनसुन्दरसूरि श्रीजिनचन्द्रसूरि के उपदेश से पत्तन निवासी प्राग्वाटज्ञातीय शा० लाला के पुत्र शा० नाथू शा० मेघा पुत्र भीमा, खीमाने अपने कल्याणार्थ देवकुलिका करवाई ।

लेखाङ्क ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, २० के अनुसार सं० १४८७ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के रोज तपागच्छ के देवसुन्दरसूरि के पट्टघर दुर्धरचारित्र धारक सोमसुन्दरसूरि मृणिसुन्दरसूरि जयचन्द्रसूरि भुवनसुन्दरसूरि के उपदेश से कलवर्गानगर के जिन निवासीयोंने देवकुलिकायें—आठ, नौ, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह,



( २८० )

पन्द्रह, उभीष्ट और तेतीष्ट बनवाई केवल उनका सक्त  
लेखों में बर्णित वंशों का परिषय ही पपाक्रम दिया  
जायगा । प्रतिष्ठाकर्त्ता इन सब के एक ही माचार्य हैं,  
अतः प्रतिष्ठाकर्त्ता का नामोल्लेख भी पुनः पुनः नहीं  
किया जायगा ।

( २७९ )

देवकुलिका न० ८

××××××× फलवर्मानिवासी ओसवालझातीय  
शा० धर्मसिंह की सन्तति में शा० अयता मा० विलकुर्वाई  
के पुत्र समरसिंह, सं० मोक्षसिंहने श्रीरावसायैस्य में देव  
कुलिका बनवाई । श्रीपार्शनाय की कृपा से मंगल होवे ।

( २८० )

देवकुलिका न० ९

××××××× फलवर्मानगरनिवासी ओसवाल  
झातीय शा धर्मसी सन्तानीय शा० अयता बाई विलकु पुत्र  
सं० समरसिंह सं० मोक्षसिंहने श्रीश्रीरावसायैस्य में  
देवकुलिका करवाई । श्रीपार्शनाय की कृपा से मंगल होवे ।

( २८१ )

देवकुलिका न० १०

××××××× फलवर्मानगरनिवासी ओसवालझातीय

( २८१ )

शा० घणसी ( घनसिंह ) सन्तति में शा० जयता ( जयंत-  
सिंह ) भा० तिलकूबाई पुत्र सं० समरसिंह सं० मोखसिंहने  
श्रीजीराउलातीर्थ के चैत्य में देवकुलिका बनवाई । पार्श्वनाथ  
की कृपा से मंगल होवे ।

( २८२ )

देवकुलिका नं० ११

××××××× कलवग्रानगरनिवासी ओसवाल  
कटारिया गोत्रीय कोठारी छाहड़ सामन्त की मन्तति में  
को० नरपति भा० देमाई के पुत्र सं० तूकदेव, पासदेव, पुनसी  
( पृण्यसिंह ), मूलाने जीरापल्लीतीर्थ के चैत्य में देवकुलिका  
करवाई । श्री पार्श्वप्रभु की कृपा से मंगल होवे । मेरा श्रेष्ठ  
कटारिया गोत्र है, मेरे पिता नरपति, मेरी माता देमाई हैं,  
और श्रीसोमसुन्दरस्वरिजी मेरे गुरु हैं जो श्रीछीलज ? मेड़ता  
मात्र की पौपालों में वन्दनीय गुरुदेवों के गुरुदेव माने जाते हैं ।

पूर्णचन्द्रनाहरने अपने ' लेखसंग्रह ' के प्रथम भाग में  
यह लेख कुछ अंश को छोड़ कर सारा लेखाङ्क ९७४ में  
उद्धृत किया है । उसमें नाहरजीने ' श्रीछालजमंडनमात्र-  
शालं ' उल्लिखित किया है; जिसका भी क्या अर्थ बैठता  
है ? समझ में नहीं आया । छालज की जगह छाहड़ होता  
तो भी कुछ संगति होती ।

( ६८२ )

( २८३ )

देवकुलिका न० १२

××××××× कलवर्गानिवासी ओसवालवासीय  
बराहियागोत्र के धा० सांसा की सन्तति में धा० उदयन  
मा० छीत के पुत्र सं० आशपासने वीरपत्नी वैश्य में देव  
कुलिका कराई, भीपायभाय की कृपा से ममल होवे ।

( २८४ )

देवकुलिका न० १३

××××××× कलवर्गानिवासी ओसवालवासीय  
नाहरगोत्र में धा० बीगा की सन्तति में धा० उदयसी  
( उदयसिंह ) मा० रामसदेवी के पुत्र धा० पचसिंहने वीरा  
रठाठीर के वैश्य में देवकुलिका कराई । पार्श्वप्रह की  
कृपा से ममल होवे ।

( २८५ )

देवकुलिका नं० १४

××××××× कलवर्गानिवासी ओसवालवासीय  
साबरगोत्र में धा० बचसिंह की सन्तति में सु० माका मा०  
सं० पूर्ण के पुत्र बचसिंह, सं० खोलसी मा० बार्हीर के  
पुत्र सं० कमलसिंहने अपनी माता कस्तूरी के धरार्थ पार्थ  
नाथ की कृपा से वीररठाठीर्य में देवकुलिका कराई ।

( २८३ )

लेखाङ्क आठ में वर्णित वंश में प्रसिद्ध पुरुष धणसीह ही इस लेख में वर्णित धणसिंह हैं । अन्तर इतना ही है कि इस लेखाङ्क में गोत्र दिया है और उममें नहीं । दोनों कुल एक ही संतति के हैं ।

( २८६ )

देवकुलिका नं० १५

××××××× कलचर्ग्रानिवासी ओसवालज्ञातीय सं० मल्लसिंह की मन्तति में सं० रतना मा० वीरुवाई के पुत्र आमलसिंहने अपने पुत्र सं० गुणराज, सं० हंमराज के सहित पार्श्वप्रभु की कृपा से जीरावलार्चत्य में देवकुलिका बनवाई ।

( २८७ )

देवकुलिका नं० १७

सं० १४७४ श्रावणशु० ५ अर्निवार के दिन खरतर-पक्षीय सं० लूणा सन्तान में सं० डूला, हापल सन्तान में सं० मूला पुत्र भीमा, हीरु, बालहण ... .. सं० हीराने .....

( २८८ )

देवकुलिका नं० १८

सं० १४८३ भाद्रपद कु० ७ गुरुवार के दिन कृष्णपिं-

( ६८२ )

( २८३ )

देवकुलिका न० १२

××××××× कसबर्जानिवासी भोसवासडहातीय  
बरहियामोत्र के छा० झांसा की सन्तति में छा० उदयन  
मा० छीवू के पुत्र सं० आशपासने वीरापछी चैत्य में देव  
कुलिका करवाई, भीपार्थनाथ की कृपा से मंगल होवे ।

( २८४ )

देवकुलिका न० १३

××××××× कसबर्जानिवासी भोसवासडहातीय  
नाहरमोत्र में छा० धीमा की सन्तति में छा० उदयसी  
( उदयसिंह ) मा० रामसदेवी के पुत्र छा० पणसिंहने वीरा  
उलार्तीय के चैत्य में देवकुलिका करवाई । पार्थप्रद की  
कृपा से मंगल होवे ।

( २८५ )

देवकुलिका न० १४

××××××× कसबर्जानिवासी भोसवासडहातीय  
साबसगोत्र में छा० अयसिंह की सन्तति में स० माछा मा०  
सं० रूनाई के पुत्र अयसिंह, सं० खोलसी मा० बाईरीरू के  
पुत्र सं० कमससिंहन अपनी माछा कस्तूरी के भेषार्थ पार्थ  
नाथ की कृपा से वीराउसाचैत्य में देवकुलिका करवाई ।

( २८३ )

लेखाङ्क आठ में वर्णित वंश में प्रसिद्ध पुरुष धणसींह ही इस लेख में वर्णित धणसिंह है । अन्तर इतना ही है कि इस लेखाङ्क में गोत्र दिया है और उसमें नहीं । दोनों कुल एक ही संतति के हैं ।

( २८६ )

देवकुलिका नं० १५

××××××× कलवर्गानिवासी ओसवालजातीय मं० मल्लसिंह की सन्तति में सं० रतना मा० वीरुवाई के पुत्र आमलसिंहने अपने पुत्र सं० गुणराज, सं० हंसराज के सहित पार्श्वप्रभु की कृपा से जीरावलाचैत्य में देवकुलिका बनवाई ।

( २८७ )

देवकुलिका नं० १७

सं० १४७४ श्रावणशु० ५ शनिवार के दिन खरतर-पक्षीय मं० लूणा सन्तान में मं० हूला, हापल सन्तान में मं० मूला पुत्र भीमा, हीरु, वालहण .. .... मं० हीराने .....

( २८८ )

देवकुलिका नं० १८

सं० १४८३ भाद्रपद कृ० ७ गुरुवार के दिन कृष्णपिं-

( २८९ )

संघविष्णी राजदेवी के पुत्र सं० तुकदेव सं० सहदेवने बीरा-  
उठीचैत्य में चतुष्किका बनवाई ।

( २९३ )

देवकुलिका न० २३

XXXXXXX कलचर्पानिवासी भीमारुझाठीप  
ठ० इंदर मा० चपादेवी के पुत्र ठ० मोलसिंह रतनसिंहने  
बीरापल्लीठीर्यचैत्य में चतुष्किका शिखर बनवाया ।

( २९४ )

देवकुलिका न० २८

सं० १४८३ वैशाख० १३ गुरुवार के दिन अंबल  
मण्ड के भीमयक्षीसिंहरि के उपदेव से ओसवाठझाठीप  
इग्गेशगोत्र के जाह लक्ष्मणसिंह धा० भीमल धा० देवल  
धा० सारंग धा० शांशा मा० मेण्वाई, धा० पूजा, मेशा  
यादिने देवकुलिका करवाई ।

( २९५ अ )

देवकुलिका नं० २९

सं० १४८३ वैशाख० १३ गुरुवार के दिन अंबल-  
मण्ड के भीमयक्षीसिंहरि के उपदेव से इग्गेश( इग्गेशिया )  
घास्ता में धा० लक्ष्मणी( लक्ष्मणसिंह ) धा० भीमल, धा०  
देवल, धा० सारंग के पुत्र धा० डोसा मा० लक्ष्मीवाई धा०  
वांवा, धा० इंदर, धा० मोलाने देवकुलिका करवाई ।

( ब )

... .. शा० सारंग मा० प्रतापदेवी के पुत्र  
 दोसा भार्या लक्ष्मीदेवी, शा० चांपा, शा० इंगर, मा०  
 की पुत्रवधू भीखी और कौतुकदेवी, पितृव्य शा० इंगर  
 देवगुरु की कृपा से तीन देवकुलिकायें अंचलगाछीय श्री-  
 मेरुतुङ्गसूरि के पट्टधर श्रीजयकीर्तिसूरि के उपदेश से सारंग-  
 पल्लीतीर्थचैत्य में करवाई ।

शिलालेखों का अध्ययन भी एक कला है । निम्न-  
 लेखों के अर्थकर्ता ही इस कला की जटिलता को समझ  
 सकते हैं । देवकुलिका नम्बर २८, २९ के लेखों में दुर्गवंश-  
 वंशी जिन जिन व्यक्तियों का नामोल्लेख है, वह इस दंग से  
 है कि अधिकांश के पारस्परिक सम्बन्ध का अनम्यस्त पाठकों  
 को सहज पता नहीं पड़ता । लेखाङ्क २९४ के अनुसार  
 लखसी ( लक्ष्मणसिंह ), भीमल, देवल, सारंग, पूजा और  
 भजा भ्रातृगण हैं । इनके मध्य में पुत्र आदि कोई विमाजक  
 शब्द नहीं है । विशिष्ट चिह्न 'शा' का प्रयोगक्रम भी  
 यही सिद्ध करता है ।

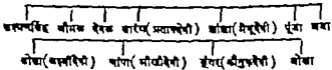
लेखाङ्क २९५ ( अ ) के अनुसार उपरोक्त स्थिति  
 को ध्यान में रखते हुए यही प्रतीत होता है कि दोसा,  
 चांपा, इंगर, मोखा भ्रातृगण हैं और ये सारंग के पुत्र  
 हैं । ( ब ) के अनुसार सारंग की पुत्रवधू भीखी और



शा० लक्ष्मणसिंह, मीमल, देवल या तो इस समय तक मर चुके हैं या निस्तन्तान हैं या देवकुलिकाओं के बनवाने में उनका द्रव्य नहीं लगा है, इसीलिये उनकी सन्तान और स्त्रियों का नामोल्लेख नहीं है। पूजा और मजा का भी द्रव्य देवकुलिकाओं क करवाने में व्यय नहीं हुआ प्रतीत होता है। शांसा की स्त्री का नामोल्लेख होना और सारंग की स्त्री का नामोल्लेख लेसाह २९४ में नहीं होना प्रगट करता है कि देवकुलिका नं० २८ साक्षाने अपने द्रव्य से बनवाई और अपने आता के नाम सौबन्यता और भाव प्रेम के कारण अपने खिलालेख में उल्कीर्ण करवाये।

लेसाह २९५ (अ) से भी यही विदित होता है कि बोसाने द्रव्य व्यय किया और लेख में उसके आताओं का नाम होना उसकी सौबन्यता प्रकट करता है। लेसाह २९५ (ब) में बंगर, बापा-की स्त्रियों का भी नाम है तथा पितृव्य शा० पूजा का भी नाम है इस से विदित होता है कि इस लेख में जितने भी व्यक्ति हैं उन सब का द्रव्य लगा है।

**पुन्येक वशाहृत ।**



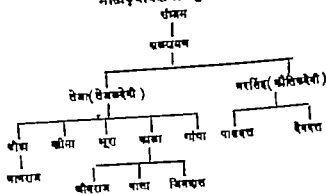
देवकुलिका नं० ३०, ३१, ३२, ३३, ३४ ।

सं० १४८३ वैशाखकृ० १३ गुरुवार के दिन अंचल-  
गच्छ के श्रीमेरुतुङ्गधरि के पट्टधर जगच्चूडामणि श्रीजय-  
कीर्तिधरि के उपदेश से पत्तनवास्तव्य ओसवालजातीय  
मीठड़िया गोत्र के शाह संग्राम पुत्र शाह सलखमण पुत्र  
शा० तेजा भार्या तेजलदेवी पुत्र शा० डीडा, शा० खीमा,  
शा० भूरा, शा० काला० शा० गांगा, शा डीडा पुत्र शा०  
नागराज, काला पुत्र शा० पासा, शा० जीवराज, शा०  
जिनदास, शा तेजा का द्वितीय आता शा० नरसिंह भार्या  
कौतिक(कौतुक)देवी पुत्र शा० पासदत्त और देवदत्तने  
जीरापल्लीतीर्थ चैत्य में तीन देवकुलिकायें बनवाईं । श्रीदेव-  
गुरु की कृपा से उत्तरोत्तर मंगल वृद्धि होवे ।

३१ से ३४वीं नम्बर की देवकुलिकाओं पर भी लेख  
इसी प्रकार के सांगोपांग मिलते हुए कुछ परिवर्तन के साथ  
अलग अलग उत्कीर्णित हैं । उन में अन्तर इतना ही है कि  
३२वीं देवकुलिका शा० डीडा के पुत्र नागराज की पत्नी  
नारंगीने, ३३वीं देवकुलिका शा० नरसिंह की पत्नी रूढ़ी  
श्राविकाने और ३४वीं देवकुलिका शा० खीमा की पत्नी  
खीमादेवीने अपने अपने श्रेयार्थ बनवाईं । उक्त लेख

में तीन देवकुलिकायें बनवाने का स्पष्ट उल्लेख है, परन्तु ऐसा ज्ञान पड़ता है कि दो देवकुलिका उपरोक्त लेख उगाने के बाद में बनावाई गई हों और बाद में उन पर लेख उत्कीर्णित हुए हों। भीठकिया गोत्रवंश का इस प्रकार है—

भीठकियावंशगोत्रवृक्ष ।



( ३०१ )

देवकुलिका न० ३५

सं० १४८३ वैशाख क० १३ गुरुवार के दिन अथवा  
 पञ्च के भीमेश्वरपुरि क पञ्चर भीमपक्षीविहारि के  
 उपरुष से स्वम्मतीर्य निवासी भीमासीहातीय परीधक  
 अमरा मा० माऊ के पुत्र परीधक गोपाल, प० राउल, प०  
 बोठा मार्या दिपक पुत्र प० पूना मार्या ऊड़ी, प० सोमा,

प० राउल पुत्र मोजा, प० सोमा पुत्र आशा और हिचकूने अपने श्रेयार्थ देवकुलिका ( जीरापट्टी तीर्थ में ) करवाई ।

पारी, पारीख और पारख गोत्र आज भी विद्यमान है जो परीक्षक का अपभ्रंश शब्द है । गिलालेखकोंने लेखों में परीक्षक न लिख कर ' परीक्ष ' लिख दिया है ।

( ३०२ )

देवकुलिका नं० ३८ के स्तम्भ पर—

सं० १५३४ वैशाखकृ० १० सोमवार के दिन सं० रत्ना के मित्र, न्याति मलुकगोत्रीय सं० जीवा के पुत्र मं० मडन, जीवन, जीवदेव, खेता महित माडलगढ़ से ( यहाँ अभिवर्द्धित भाव से ) यात्रा करने के लिये आया ।

इस लेख की रचना थोड़ी होकर भी अजीबदंग की है । फिर भी रत्ना न्याति परिवार से यहाँ यात्रार्थ माडलगढ़ से आया इतना तो स्पष्ट है ।

( ३०३ अ )

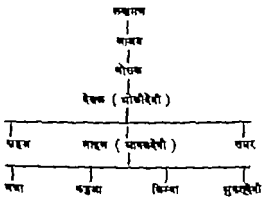
देवकुलिका नं० ४१

सं० १४२१ ज्येष्ठ शु० १२ बुधवार के दिन मूलनक्षत्र और सिद्धिनामक योग में उपकेशगच्छीय श्रीकृष्णदाचार्य-

१ लेखाङ्क ५२ में रविवार लिखा है ।

सन्तानीय भीष्मधरि के पट्ट को सुशोभित करनेवाले भीदेवगुप्तधरि के उपदेश से उपदेश्यहातीय भीषटगोत्र के भीषट के वंशज सा० लक्ष्मण पुत्र आनन्द पुत्र द्वा० गोसल पुत्र द्वा० देसल भार्या मोली पुत्र द्वा० सहज, द्वा० माह्य, द्वा० समर द्वा० माह्य भार्या माबलदेवी पुत्र सं० यथा, द्वा० कडुना, द्वा० सिम्बा, भगिनी सुकन्दु आदि के सहित साष्ठी माबलदेवी के द्वारा भीपार्षनाबचैत्य में आत्म कस्यान के लिये देवकुटिका करवाई ( ध्यय समरने किया अधिक संभाव्य है )

भीषट गोत्र वंशवृक्ष



( क )

सं० १४८१ वैशाख० ७ के दिन बृहस्पतिगच्छापि पति भीदेवसुन्दरधरि के पहचरों में सुकन्दु के समान भी-

( २९३ )

सोमसुन्दरस्वरि श्रीमृणिसुन्दरस्वरि श्रीजयचन्द्रस्वरि श्रीभुवन-  
सुन्दरस्वरि श्रीजिनसुन्दरस्वरि के उपदेश से श्रीमालज्ञातीय  
..... पुत्र ठ० सारंग पुत्र ठ० गुणराज पुत्र नागराजने  
अपनी भार्या के कल्याणार्थ यहाँ अग्रशिखर बनवाया ।

( ३०४ अ )

देवकुलिका नं० ४२

कल्याणकारी जय और अभ्युदय हो । “ प्रतिष्ठराजा  
के नन्दन और सुसीमाराणी के अंग से उत्पन्न श्रीपद्मप्रभ-  
जिनेन्द्र रक्त कमल की प्रभा के ममान दिखाई देते हैं वे  
पवित्र करें । ” सं० १४२१ कार्तिक शु० ५ रविवार के  
दिन हस्तनक्षत्र में कोढ़ीनारनगरनिवासी आगमिकगच्छा-  
नुयायी मोढ़ज्ञातीय सुश्रावक झाल्हा, ममदेव, ठ० बीना,  
ठ० सणसव, जयता पुत्र सं० अजितने भार्या हिवा (शिवा)  
देवी आदि कुटुम्ब परिवार सहित भव को जीतने के लिये  
श्रीपद्मप्रभस्वामी का विम्ब करवाया । नेहड़ भार्या अहिव-  
देवीने श्रीपार्श्वनाथ की देवकुलिका बनवाई ।

( व )

सं० १४८३ वैशाखशु० ७ के दिन मट्टारक श्रीदेव-  
सुन्दरस्वरि के पट्टधर सोमसुन्दरस्वरि मृणिसुन्दरस्वरि जय-  
चन्द्रस्वरि भुवनसुन्दरस्वरि जिनसुन्दरस्वरि के धर्मोपदेश से  
श्रीमालज्ञातीय विजयसिंह पुत्र जगतसिंह पुत्र गुणपति,

रत्नसिंह पत्नी कामुदेवी पुत्र रंगदेवने ( अपने ) कन्या  
कार्य देवकुलिका करवाई ।

( ३०५-३०६ )

देवकुलिका न० ४३, ४४

सं० १४८३ वैशाख० ७ रविवार क दिन तपगच्छ-  
नाथक भी देवसुन्दरघरि के पट्ट को बसहुत करनेवाले महा०  
भीसोमसुन्दरघरि धीमनिसुन्दरघरि भीमपचन्द्रघरि के उप  
वेष सं योमिनीपुर क निवासी घा० रूखा पुत्र हसराम,  
पुत्री हसादेवी पुत्र रंगदेवने करवाई ।

( ३०७ )

देवकुलिका न० ४५

सं १८८३ वैशाख० १३ के दिन तपगच्छाधिराज  
भीदेवसुन्दरघरि के पट्ट को बसहुत करनेवाले भीसोमसुन्दर  
घरि भीमपचन्द्रघरि के उपवेष सं रतनपुरनिवासी सं०  
सरमज पुत्र सं० रापण, मंत्री गोसल पुत्र सोमप्रमराज भार्या  
रंगादेवी पुत्र सोमदेवने रंगादेवी के भेषार्थ ( देवकुलिका )  
करवाई ।

इन सत्तों में सुवनसुन्दरघरि के नाम संभवतः हमलिये  
नहीं है कि ये दोनों आचार्य धीरापल्लीतीर्थ में उस समय  
विद्यमान नहीं थे । देवकुलिका न० ४१, ४२ के द्वितीय

लेखों में जो पश्चात्वर्ती और वैशाखशुक्ला सप्तमी के हैं, इन दोनों आचार्यों का नाम विद्यमान है। भुवनसुन्दरसूरि और जिनचन्द्रसूरि अनुक्रम से श्रीजयचन्द्रसूरि से छोटे हैं, इसलिये श्रीजयचन्द्रसूरि के लिये इनके उपस्थित होने पर ही इनका नाम देना मर्यादानुसार उचित है।

( ३०८ अ )

### देवकुलिका नं० ४६

सं० १२६३ अढाढ़कृ० २ गुरुवार के दिन श्रीधर्मघोषसूरि के उपदेश से ओमवालज्ञातीय सं० आंवड़ पुत्र जगसिंह, पुत्र उदयसिंह भार्या उदयादेवी के पुत्र नेणसिंहने इम जीरापल्लीपार्श्वतीर्थ में मोक्षरूपी धन प्राप्त करने के लिये देवकुलिका करवाई।

धर्मघोषसूरि नामक दो प्रसिद्ध आचार्य तेरहवीं शताब्दि में हो गये हैं। एक वे हैं जो श्रीजयसिंहसूरि के पट्ट को अलंकृत करनेवाले थे और जिनके पश्चात् श्रीमहेन्द्रसिंहसूरि हुए। उनका जन्म सं० १२०८, दीक्षा सं० १२२६, आचार्यपद सं० १२३४ और निर्वाण सं० १२६८ में हुआ। द्वितीय श्रीदेवेन्द्रसूरि के पट्टधर और सोमप्रभसूरि के गुरु थे। माडवगढ़ के प्रसिद्ध महामंत्री पृथ्वीकुमार(पेथड़) के ये गुरु थे। निर्वाण सं० १३३२ में हुआ। दोनों आचार्यों के कालों पर विचार करने से यही उचित प्रतीत होता है कि तन्त्र



देवकुलिका का द्वितान्यास सं० १२६३ में भीमपतिहछरि के पट्टपर भीषर्मपोपछरि के उपदेश से हुआ । सं० १२६५ में य आचार्य आछोर गये थे और वहाँ पर भीमसिंह नामक छत्रिय को प्रतिषेध देकर सहस्रदुम्ब जैनधर्मी बनाकर ओस बाठबाति में सम्मिश्रित किया था । इस घटना से इन आचार्य का सिरोही प्रान्त में सं० १२६३ में विहार हुआ होना ही चाहिये, प्रमाणित हो जाता है ।

( ४ )

सं० १४८३ माद्रपदक० ७ गुरुवार के दिन तपामच्छ नायक भीदबसुन्दरछरि के पट्टपूषध महारक भीसोमसुन्दरछरि भीमनिमुन्दरछरि भीमपचन्द्रछरि भीमबनसुन्दरछरि के उपदेश से स्वमातनिवासी ओसबाठबातीय सोनी नरिआ पुत्र सोनी पप्रसिंह (छरमपसिंह) यार्मा भान्हबदेवीने और पछीतीर्थचैत्य में चतुष्किका के ऊपर शिखर बधवाया ।

( ३०९ )

देवकुलिका न० ४८

“अपन छस-छयों के द्वारा भीपाधनाधप्रसु संसार बासियों की और भीसंधों की छत मयों और छत नरक क मयों से रक्षा करते हैं, वे पार्थनाब भापसोंगों का रखन -” सं १४१३ फास्गुनशु० १३ के दिन स्वातिनधत्र

में बृहद्गच्छीय श्रीदेवचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरि के पट्ट को मृक्ताहार के समान सुशोभित करनेवाले श्रीरामचन्द्रसूरिने अपने आत्मश्रेयार्थ जीरापल्लीतीर्थ के चैत्य में देवकुलिका बनवाई । जीरापल्लीयगच्छ के सकल संघ को शुभकर हो । जब तक पृथ्वी रहेगी, सुमेरु रहेगा और सूर्य, चन्द्र गगन में प्रकाशक रहेंगे तब तक यह देवकुलिका लोगों के द्वारा प्रशंसा पाओ । ” सकल संघ और जीरापल्लीयगच्छ का मंगल होवे ।

( ३१० )

### देवकुलिका नं० ४९

“ श्रीपार्श्वनाथ भगवान् अपने मात फणों के द्वारा-संसारवासियों एवं संघ समुदायों की सिंहादि और रत्न-प्रभादि नरक मन्वन्धि सात भयों से रक्षा करते हैं, वे पार्श्वप्रभु आप लोगों का रक्षण करें । ” सं० १४११ चैत्र-कृ० ६ बुधवार के दिन अनुराधा नक्षत्र में बृहद्गच्छीय श्रीदेवचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरि के गादीधर तप से नमे हुए तपरूप धनवाले तपस्वी साधुओं के परिवार से परिवेष्टित जीरापल्लीय श्रीरामचन्द्रसूरिने पवित्र श्रीपार्श्वनाथ के चैत्य में देवकुलिका बनवाई । “ जब तक पृथ्वी, सुमेरु-पर्वत और आकाश में प्रकाशमान सूर्य चन्द्र स्थिर रहें तब तक यह देवकुलिका अभिनन्दिता ( जयवती ) रही । ”

( २९८ )

( ३११ )

देवकुलिका न० ५०

“भीष्मान्विनायकप्रभु का आत्मबल सुकिरमणी के ललाट स्थित मौजों को आनन्द देनेवाला है और प्रभु के चन्द्रमा का मित्र ( मृत ) संछन है जो दोष पुक्त लोगों में नहीं पाया जाता ।” सं० १४१२ आश्विनकृ० ४ बुधवार के दिन कृषिका नक्षत्र में ओसवासशाहीय ज्य० जमपपाल भार्या राजलक्ष्मी पुत्र ज्य० बीकामल भार्या पूषीबाई पुत्र इंगर, पारहा, दोरहाने समस्तपरिवार सहित अपने कुटुम्ब के कल्याणार्थ भीषार्थनायकैस्य में भीष्मान्विनाय की देव कुलिका श्रीविद्यसेनधरि के शिष्य श्रीरत्नाकरधरि के उपदेश से बनवाई ।

( ३१२ )

देवकुलिका न० ५१

सं० १४८३ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के दिन तपागण्ड-नायक श्रीदेवसुन्दरधरि के पट्टपर श्रीसोमसुन्दरधरि श्रीजय चन्द्रधरि श्रीशुबनसुन्दरधरि के उपदेश से कलकत्तानिवासी ओसवासशाहीय धा० मांडव, धा० शिवि के पुत्र देमाने श्रीराजश्रीतीर्थकैस्य में देवकुलिकाका शिलर बनवाया ।

१ केप्लाड ३२० के अनुसार ये आचार्य ब्रह्मगण्डवीय हैं ।

( २९९ )

( ३१३ )

देवकुलिका नं० ५२

सं० १४८३ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के दिन वीमा भार्या  
वामादेवी, गोष्ठी सोनानी हीरा ।

( ३१४ )

सं० १४९२ मार्गशिरकृ० १४ रविवार के दिन घोघा-  
ग्रामनिवासी आड़ भार्या अहड़देवी पुत्री झमकुवाईने शिखर  
करवाया ।

( ३१५ )

देवकुलिका के छजा में—वामादेवी के पुत्र सीहड़ गोष्ठीने  
देवकुलिका करवाई ।

( ३१६ )

मूलजिनालय के पीछे देवकुलिका के स्तम्भ पर—

सं० १४८७ अरिहन्तों को नमस्कार हो । गून्दी कर  
पीपलगच्छ में त्रिमविया श्रीधर्मगेखरसूरि के शिष्य वाचक  
देवचन्द्र मुद्राकला से और तालध्वजीय वाचक सहजसुन्दर  
अर्हन्तों और जिनेश्वरों को नित्य वन्दन करता है ।

( ३१७ )

पटचतुष्किका के स्तम्भ पर—

सं० १८५१ आपाद्रशुक्ला पूर्णिमा के दिन भीत्रीरा-

( २०० )

पल्ली के मन्दिर के द्वार का भीर्षोद्धार सहस्रमहारक-  
पुरन्दर महारक भी भी भी भी १००८ भीरंगविमलधरि के  
सदुपदेश से रु० ३०२११) व्यय करके शा० रुपा, शा०  
शोपता, शा० मानन्दा, शा० धीरम, शा० रामश्री, शा०  
इन्द्रावतीन सिरोही नगर से द्रुम्य संभय कर भीरापल्ली  
निवासी गधपर सोमपुर केसा दहा के द्वारा करवाया ।

( २१८ )

लोटानातीय में कायोरसर्गस्य प्रतिमा—

सं० ११३० ज्येष्ठशु० ५..... के दिन निर्वाति  
हस क भीनन्द ( और ) भासपासन भीशेखरधरि द्वारा भेषु  
भीपार्श्वबिन की दो प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई ।

( २१९ )

श्रुपमदेश पावुका—

सं १८६९ पौषशु० १३ गुरुवार के दिन भीश्रुपम  
देशकी की पावुका को नमस्कार हो जो भीविद्यमलक्ष्मीधरि  
के द्वारा छोटीपुर पचन में प्रतिष्ठित हुई ।

( २२० )

मठप में स्थापित सपरिकर प्रतिमा—

० ११४४ ज्येष्ठशु० ४ के दिन प्राग्वाट्यातीय व्य०

( ३०१ )

श्रे० यापु भार्या देवीने श्रीवर्धमानस्वामी की प्रतिमा करवाई  
जो आहनगोत्रीय सहदेवने श्रीदेवाचार्य के द्वारा लोहापत्र  
( पुरस्थ ) आदिनाथ के मन्दिर में प्रतिष्ठित करवाई ।

( ३२१ )

### धातुमय पंचतीर्थी—

सं० १०११ में प्राग्वाट शा० नल का पुत्र सिंहदेव  
भार्या जामलदेवीने श्रीशान्तिनाथ ( पंचतीर्थी ) प्रतिमा  
उपकेशगच्छीय श्रीदेवगुप्तस्वरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाई ।

( ३२२ )

### सेलाबड़ा ( सिरोही ) धातुचतुर्विंशति—

सं० (१३)२८ वैशाखकृ० ५ गुरुवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छीय श्रीविमलस्वरि के पट्टधर भ० श्रीबुद्धिस्वरि के द्वारा  
राणपुरनिवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० भूमव भार्या गृही  
देवी का पुत्र सरवण भार्या टमकुदेवी पुत्र धर्मा और उदा  
पितृव्य जूगणजीने श्रीधर्मनाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट प्रतिष्ठित  
करवाया ।

इस लेख का संवत् घिस जाने से पढ़ने में नहीं आया  
और २८ जो पढ़ने में आया वह भी अमात्मक तो नहीं है ।  
ब्रह्माणगच्छ के श्रीविमलस्वरि के कुछ लेख जिन्हें

( ३०२ )

शपनी 'प्राचीनभैरवलेखसंग्रह' नामक पुस्तक में संग्रहित किये हैं। उनका अंतिम लेख सं० १३१६ का है। वैया उक्त पुस्तक के अस्वाष्ट ४६५ से प्रगट होता है। पाठ चौबीसी के उक्त लेख से स्पष्ट प्रगट है कि यह लेख उस समय के पश्चात् का है अब पुष्टिसागर विमलचरि के पद पर आरुढ़ हो चुके थे। अतः यह लेख सं० १३२८ का होना चाहिये। प्राचीनभैरवलेखसंग्रह में इनके दो लेख ४९५, ५०० नम्बर के १३२६ क हैं।

( ३२३ )

महावीरमुछाला के मंदिर के छज्जा में—

संवत् १०१३ में संवत्सिद्धने यह छज्जा करवाया।

( ३२४ )

महावीरमुछाला वैश्य में सुरक्षित पवासन पर—

सं० १२१४ फागुनशु० ५ के दिन भीमश्रीय मांडव योत्र के यशोमहेश्वरि सन्तानीय अनुपायी मंत्री भीमश्रीर के द्वारा भीमश्रीरित्री की उत्थापधानता में पवासन बनवाया।

( ३२५ )

वरमाण के वैश्य में प्रतिमा—

सं० १३५१ माघशु० १ सोमवार के दिन प्राम्वाट

( ३०३ )

ज्ञातीय श्रे० झांझण भार्या राउल पुत्र सिंहराजने भार्या पद्मादेवी, लज्जालूवाई पुत्र पद्माजी भार्या मोहिनी पुत्र विजयसिंह सहित श्रीपार्श्वनाथजी की (कायोत्सर्ग) प्रतिमा करवाई ।

( ३२६ )

स० १३५१ में ब्राह्मणगच्छीय भेता भंडाहदिय श्रे० पूनसी ( पुण्यसिंह ) भार्या पद्मलदेवी पुत्र पद्मसिंहने (कायोत्सर्गस्थ) जिनयुग्म प्रतिष्ठित करवाये ।

( ३२७ )

षट्चतुष्िका स्तम्भ पर—

सं० १४८६ वैशाखकु० १ बुधवार के दिन ब्राह्मण-गच्छ के भट्टारक श्रीपुण्यग्रामस्वरि के पट्टघर श्रीभद्रेश्वरस्वरि के पट्टाधिपति श्रीविजयसेनस्वरि के पट्टघर श्रीरत्नाकरस्वरि के शिष्य श्रीविमलस्वरि के द्वारा पुण्यार्थरंगमंडप बनवाया ।

( ३२८ )

पद्मशिला की छत में—

सं० १२४२ चैत्र शु० पूर्णिमा के रोज ब्राह्मणगच्छा-नुयायी श्रीपूनिगपुत्री ब्रह्मदत्ता जिंनहा पोल्हा, नानकी सहित श्री अजितनाथजी की देवकुलिका के लिये वीरप्रभु



( ३०४ )

की प्रतिमा तथा पद्मविठा करवाई । कृष्ण के द्वारा लेख उत्कीर्ण करवाया ।

( ३२९ )

सं० १३७३ वैशाख शु० ११ बुधवार के दिन ठ० सांझान माता अंबना ( अंबना ) देवी, पुत्र के कर्याचार्य इच्छसपीप महारथ भीषणनन्दी के सहपदेष्ट से भीषणप्रम स्वामी का (पचतीर्थी) विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३३० )

सं० १४०६ काशुन शु० १० गुरुवार के दिन भीमासहातीथ स्व० सुलस की भार्या सोहगदेवी के कर्याचार्य पुत्र स्व० घांषकने भीषणेश्वरहरि क द्वारा भीषार्थनाथ का (पचतीर्थी) विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३३१ )

दयाणा ( सिरोही ) कायोस्सर्गस्य प्रतिमा—

सं० १०११ भाषाद शु० ३ शनिवार के दिन सनई भार्या नपनाबाई पुत्र बसिषा, भार्या बयबलदेवी पुत्र सप्तमसिद्धने भीषार्थनाथ के शुग्म ( हो कायोस्सर्गस्य ) विम्ब बृहद्गच्छीप परमानन्दहरि के शिष्य के द्वारा प्रतिष्ठित करवाये ।

( ३०५ )

( ३२२ )

काछोली (सिरोही) मूलनायक के परिकर

सं० १३४३ में कछीलिका-पाषाणमन्दिर के  
( कार्यवाहक ) श्रेष्ठ श्रीपाल भार्या गिरियादेवी पुत्र  
श्रे० बोढा भार्यावीरादेवी पुत्र श्रे० रांकदेव, पत्नी देवीपुत्र  
सलखा पुत्र गला, श्रे० कर्मा भार्या अनुपमादेवी पुत्र  
अजयसिंहने श्रे० भातृखीदा और मोहन के माथ  
सिंह पुत्र श्रे० घनसिंह, शंभुपाल, श्रे० पूनद पुत्र  
सोहद पुत्र विजयसिंह, श्रे० ज्ञानाण पुत्र रामनि  
गोष्ठिकों के सहित माता पिता के कल्याणार्थ  
प्रभु का हार परिकर सहित कछोलीगच्छ के  
उपदेश से करवाया ।

कछोली, कछोली और कछोलीवाल गच्छ का परिकर  
अवश्य ग्रन्थों एवं लेखों में मिलता हैं, परन्तु मुनिमेरु (विजय,  
विजय, सुन्दर) नामक कोई आचार्य या माधु तैराकी  
शताब्दि में हुए हैं, कोई पता नहीं लगता ।

( ३३३ )

पिंडवाडा ( सिरोही ) महावीर मन्दिर में छोटी  
धातुप्रतिमा—

सं० १००१ में श्रीश्रेयांसनाथ का विम्ब पुंषणने अपने  
कल्याणार्थ बनवाया ।

( ३०६ )

यह लेख इस संग्रह में सर्वश्रेष्ठों से प्राचीनतम है ।  
परन्तु दुःख है कि यह अति छोटा और बह भी अपूर्ण और  
अस्पष्ट है । यच्छ, आचार्य, गोत्र, वंश किसीका भी इसमें  
उल्लेख नहीं है ।

( ३१४ )

मीलडियातीर्थ में धातुपञ्चतीर्थी—

सं० १३६७ वैशाखशु० ९ के दिन प्राग्वाटझाठीय  
श्रे० विद्वज्जगसिंह मार्या हाँसलदेवी के कन्यापार्ष० पुत्र  
श्रे० सोमाने श्रीमान्दिनापत्री का विम्ब महाइच्छिपयच्छ के  
श्रीचन्द्रसिंहछरि के शिष्य भीरविकरछरि के द्वारा प्रतिष्ठित  
करवाया ।

( ३३५ )

सं० १५३५ माघशु० ९ बुधवार क दिन कटुबपुर  
निवासी प्राग्वाटझाठीय श्य० कज्जा मार्या देवीबाई पुत्र  
मोसाने स्वपत्नी राहुलबाई पुत्र हाँसा, रय, आदि परिवारों  
के सहित अपने पिता माता के कन्यापार्ष उवागच्छ के  
श्रीसहमीसागरछरि के द्वारा श्रीमान्दिनापत्री का विम्ब  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३३६-३३७ )

धरणयुगल का लेख—

सं० १८३७ पौषशु० १३ सोमवार क दिन महारक

श्रीश्री श्री १००८ श्रीहीरविजयसूरीश्वर गुरुवर को नमस्कार हो । श्रीहेतविजयगणी के चरणयुगल हैं, श्रीमहिषाविजयगणी के चरणयुगल हैं ।

( ३३८ )

पार्श्वनाथचैत्य के भृगृह की पंचतीर्थी—

स० १५०७ माघमास में काचलीग्रामनिवासी श्रे० इंगर भार्या रूपी पुत्र मालाने स्वभार्या टीचूबाई पुत्र कर्मा हेमा आदि परिजनों के सहित तपागच्छनायक श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि के शिष्य श्रीरत्नशेखरसूरि के द्वारा श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३३९ )

सं० १३३४ वैशाखकृ० ५ बुधवार के दिन श्रीजिनेश्वरसूरि के शिष्य श्रीजिनप्रबोधसूरि के द्वारा शा० वोहिल्ल पुत्र शा० वहजलने स्वभ्रातृ मूलदेव आदि के साथ अपने और अपने कुटुम्ब के कल्याणार्थ श्रीगौतमस्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई ।

( ३४०-३४१ )

पवामन की मिति के स्तंभ पर ' श्रीजीराउलाजी

---

१ अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंग्रह भा० द्वि० के लेखांक ३१७ के अनुसार ये आचार्य खरतरगच्छीय हैं ।

मूः उ ठ फ' और सीढ़ी के पासवाले स्तंभ पर 'मा अस पवल संपरति' ये दो लेख उत्कीर्णित हैं, परन्तु इनके रचना अर्थ समझ में नहीं आये, इसलिये इनका अनुवाद छोड़ दिया है।

भीलडियाग्राम के गृहमन्दिर में मूलनायक—

इस गृहमन्दिर में मूलनायक प्रतिमा के अतिरिक्त आदिनाथ और चन्द्रप्रभु की प्रतिमाएँ दोनों ओर विराजमान हैं। इन तीनों प्रतिमाओं के लेख एक ही हैं।

( ३४२ )

सं १८९२ वैशाखशु० १३ बुधवार के दिन भीलडी के तपागच्छीय समस्त महाजन संघन भीमेश्वरनाथजी की प्रतिमा करवाई। भीरेश्वरमथर में चन्द्रप्रभुस्वामी और भी आदिनाथस्वामी के बिम्बों की अंजनघसाका हुई ऐसा इन छत्तों से सिद्ध होता है।

( ३४३ )

अम्बिका की मूर्ति—

सं० १३४४ ज्येष्ठशु० १० बुधवार के दिन जे० सस्मज सिंहने अम्बिका की मूर्ति करवाई।

( ३४४ )

## अधिष्ठायक मूर्ति—

सं० १३४४ ज्येष्ठशु० १० बुधवार के दिन श्रे० लक्ष्मणने अधिष्ठायक मूर्ति करवाई ।

( ३४५ )

## नेसड़ा ( पालनपुर ) के पार्श्वनाथ चैत्य में धातुमयमूर्ति—

सं० १२४४ माघ शु० १० सोमवार के दिन श्री-प्रमन्नसूरि के द्वारा डीसात्राल श्रे० राणा पुत्र आशपाल, भ्राता प्रेमसेन, शा० कलत्र रत्नदेवने भार्या सिरियादेवी के कल्याणार्थ यह चतुर्विंशतिजिनप्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई ।

कलत्र का यहाँ क्या अर्थ होता है, यह अस्पष्ट है ।  
वैसे कलत्र का प्रचलित अर्थ स्त्री है यहाँ आशपाल और प्रेम-सेन के कुटुम्बी जन से अर्थ लिया हुआ अधिक संगत है ।

( ३४६ )

सं० १३६९ फाल्गुन कृ० ५ सोमवार के दिन श्री-मृनिचन्द्रसूरि के उपदेशसे श्रीसूरि के द्वारा श्रीमालज्ञातीय श्रावक सज्जनने पिता खेता (क्षेत्रसिंह) माता लच्छुबाई के कल्याणार्थ श्रीआदिनाथपचतीर्थी प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई ।

( ११० )

( १४७ )

घात्यम ( दियोधर ) के चैत्य में पंचतीर्थी—

सं० १४४९ वैशाख शु० ६ बुधवार के दिन जयस  
गण्ड के श्रीमेरुज्ज्वरि के उपदेश से भीमरि के द्वारा बाला  
घाह ठ० राजा मार्या मोलीदेवी पुत्र विक्रमसिंहने अपने  
माता पिता क कस्याबाव भीमहावीरवामी ( पंचतीर्थी )  
विम्ब प्रतिष्ठित कराया ।

( १४८ )

सं० १७८२ वैशाख शु० पूर्णिमा गुरुवार के दिन प०  
भीजयविजयजी, प० भीशुद्धविजयजी, प० भीनिस्पविजयजी,  
प० भीहीरविजयजी, प० भीबीरविजयजी की पावुकार्यें  
प्रतिष्ठित हुई ।

( १४९ )

वासणा ( पालनपुर ) के चन्द्रप्रभचैत्य में—

सं० १२४० माघ १३ क दिन छलमती ( छलम-  
सिंह ), रणसी ( रणसिंह ) ने योग ( सिंह ) और देपाल ( सिंह ) न  
भीपशोदेवधरि के द्वारा ( चातुपचतीर्थी ) प्रतिष्ठित कराई ।

( १५० )

मूलनायक प्रतिमा—

सं० १९५५ फाल्गुन ७० ५ गुरुवार क दिन मानाठ

( ३११ )

केरा के पुत्र रूपा तल्लाजीने श्री( चन्द्रप्रभस्वामी का ) विम्ब करवाया जिसकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका तपागच्छीय आहोर-नगर के संघने मट्टा० श्रीविजयराजेन्द्रसुरि के द्वारा आहोर में करवाई ।

( ३५१ )

दक्षिणभाग में स्थापित—

सं० १९५५ फाल्गुनकृ० ५ गुरुवार के दिन आहोर-निवासी तपागच्छीयसंघने श्री( चन्द्रप्रभप्रभु का ) विम्ब करवाया । जसरूप जीतमलने श्रीराजेन्द्रसुरि के द्वारा आहोर में जिसकी प्रतिष्ठा ( अंजनशलाका ) करवाई ।

✓ ( ३५२ )

बायें भाग में स्थापित—

सं० १९५५ फाल्गुनकृ० ५ गुरुवार के दिन साधू-निवासी वृद्धशाखीय ओसवाल शा० केशरीमल कस्तूरचदने श्री( चन्द्रप्रभप्रभु का ) विम्ब भरवाया, जिमकी प्रतिष्ठा आहोर नगर में मृता जसरूप जीतमलने म० श्रीराजेन्द्रसुरि के करकमल से करवाई ।

( ३५३ )

पद्मासन के नीचे के प्रस्तर पर—

श्रीराजेन्द्रसुरि, श्रीघनचन्द्रसुरि, श्रीभूपेन्द्रसुरि मट्ट-



( ३१९ )

गुरुजी को नमस्कार हो । सं० १९९७ मारवाड़ी पंचांग के अनुसार ठसम माह कारगुनकृष्ण ६ के दिन कुम्भलग्न स्थिरांश सोमवार को प्रातःसमय बासनानगरनिवासी श्री माछडातीय बृहच्छारणीय श्रीसंपने वर्तमानाचार्य महारक श्री श्री १००८ विजयपतीन्द्रधरि क आदेश से मुनिर भीमदु हर्षविजय के द्वारा डा० भीमसिंह के राज्यकाल में स्थापित कराई । श्रीसौधर्मबृहत्पत्रागच्छ में शुभ कारक हो ।

( ३५४ )

लुभाणा ( दियोदर ) के आदिनाथ चैत्य में प्रस्तर प्रतिमा—

धातु घोषीशी पश्चतीर्थियाँ—

सं० १९५५ कारगुनकृ० ५ के दिन सिपाधानगर के समस्त संपने० श्रीराजन्द्रधरिजी क द्वारा ( बाहोर में श्री विमलनाथजी का ) विम्ब प्रतिष्ठित कराया ।

( ३५५ )

सं १९५५ कारगुनकृ० ५ के दिन सिपाधाननिवासी संपने ( श्रीमहावीरप्रदु का ) विम्ब कराया । त्रिसती प्रतिष्ठा बाहोर में बमरूप श्रीसंपने सौधर्मबृहत्पत्रागच्छ के म० श्रीविजयराजेन्द्रधरि के द्वारा कराई ।

( ३१३ )

( ३५६ )

सं० १५११ माघशु० ९ सोमवार के दिन जाणदीग्राम निवासी श्रीमालज्ञातीय व्य० पाल्हा भार्या पाल्हणदेवी पुत्र वानरने अपनी भार्या वीकलदेवी और सुपुत्र सहित पिता, माता, पितृव्य जाल्हा, आता पीताम्र और पूर्वजों के कल्याणार्थ श्रीअजितनाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट पूर्णिमागच्छीय श्रीराजतिलकस्वरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३५७ )

सं० १५२२ माघशु० ९ शनिवार के दिन सह्याला-ग्रामनिवासी प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० विरुआ भार्या आनीदेवी पुत्र सं० मांकडा भार्या झालीवाई पुत्र सं० अर्जुनने अपनी पत्नी अहिवदेवी सहित द्वितीया पत्नी रामती के कल्याणार्थ वृहत्पागच्छीय प्रभु भट्टारक श्री श्री श्रीजिनरत्नस्वरि के द्वारा श्रीमृनिसुव्रतस्वामी की प्रतिमा (पंचतीर्थी) प्रतिष्ठित करवाई ।

( ३५८ )

सं० १५२३ वैशाखशु० ३ के दिन वीरमगाँव निवासी प्राग्वाटज्ञातीय सं० नापाने भार्या लखमा ( लक्ष्मी ) देवी पुत्र खोना, ढाहय, हांमा, जावड, भावड भार्या क्रमशः अमरादेवी, नाथीदेवी, कनाईदेवी, मेघाईदेवी, आशादेवी उनके पुत्र नाकर, झटका, रूपा, स्ररा आदि परिजनों सहित

( ३१४ )

भीरत्नसेनरक्षरि के पङ्कपर भीमस्त्रीसागररक्षरि के द्वारा भीममठनाथ ( पंचतीर्थी ) विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३५९ )

सं० १५१७ फास्वुनशु० ३ शुकवार के दिन विमल गच्छीय भीधर्मसागररक्षरि के द्वारा अहमदाबाद में भीमाल ज्ञातीय दाह नागसिंह मार्या दाहीबाई पुत्र बानर या० आशीदेवीन स्वकस्याप्यार्थ भीममठनाथ—पंचतीर्थी प्रतिष्ठित करवाई ।

( ३६० )

सं० १५०५ माघशु० ५ रविवार के दिन पूर्विमाषधीय भीगुणसुन्दररक्षरि के उपदेश से भी भीमालज्ञातीय अ० बपरसिंह मार्या सोमलदेवी पुत्र समभरजन अपने माता पिता के कस्याप्यार्थ भीमसुनाथ ( पंचतीर्थी ) विम्ब सविधि प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३६१ )

सं० १५१२ वैशाखशु० १० शुकवार के दिन भी भी वक्षीय मत्री घसा ( बनराज ) मार्या बापलदेवी पुत्र मत्री पांचा(पंचराज ) सुभाबकने स्वभार्या कछु, पुत्र मई० साठिम सहित पिता के पुष्यार्थ अंचलगच्छ क मोरपकेसररक्षरि के उपदेश से सोलाडाग्राम में ( संभवतः सुभाया ) भीतजन भीसुमठिनाथ पंचतीर्थी विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३१५ )

( ३६२ )

सं० १६२४ विक्रम, शुक सं० १४८८ माघशु० १ सोमवार के दिन ओमवालज्ञातीय श्रे० घग्णा भार्या घग्णा-देवी पुत्र देवचन्द्र भार्या सुजाणदेवी, प्रेमलदेवीने अपने वंश के कल्याणार्थ माधु पूर्णिमापक्ष के श्रीविद्याचन्द्रसूरि के उपदेश से श्रीवासुपूज्यस्वामी का ( पंचतीर्थी ) विम्ब बनवाया और संघने उमको प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३६३ )

सं० १५१३ पौषकृ० ३ शुक्रवार के दिन महाजनी सुहृद् भार्या सुहृदादेवी पुत्र भोजराजने भार्या अमरादेवी, माता पिता तथा आत्मकल्याणार्थ पूर्णिमापक्ष के श्रीकमल-सूरि के द्वारा श्रीशान्तिनाथ का ( पंचतीर्थी ) विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३६४ )

सं० १५९० वैशाखशु० ५ के दिन तपागच्छीय वृद्ध-शाखा के श्रीधनरत्नसूरि के द्वारा पत्तन नगर में मोड़ज्ञातीय वृहच्छाखा के भणशाली भागा भार्या सोनाई ( सुवर्णादेवी ) पुत्र तुलखाईने आत्म कल्याण के लिये श्रीशान्तिनाथ ( पंचतीर्थी ) विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३६५ )

सं० १५१० फाल्गुनशु० ३ गुरुवार के दिन नागेन्द्र-

( ३१५ )

गण्डीय भीगुणसमुद्रधरि के द्वारा वाराही ग्राम निवासी भीभीमालझातीय सोरठियागोत्र के भ० मोहल भार्या सोदागदेवी पुत्र गोरंद( गोविन्द )ने माता, पिता, पितृभ्रष्ट ( वधेरी भाई ) तिरुन( त्रिभुवन ) भार्या मांगूदेवी क कल्याणार्थ भीङ्गुनायकतुर्विधविभिनपद्म प्रतिष्ठित कराया ।

( ३६६ )

स० १६६५ वैशाखशु० ६ के दिन राजपुर में भी भीमालझातीय झाड़ बहोला नागा भार्या पूनीबाई पुत्र द्विबसिहन भार्या रत्नादेवी पुत्र मणसिंह भार्या बीरादेवी प्रमुख कुटुम्ब सहित ( मर्ब या स्व ) कल्याणार्थ भीगार्थ नाय ( पबतीर्षी ) विम्ब कराया जिनकी प्रतिष्ठा तथा गण्डीय महारक भीहीरविजयधरि के पद्म को सुशोभित करनेवाले महारक भीविजयसोमधरि के द्वारा हुई ।

( ३६७ )

सं० १५८२ वैशाखशु० १० छुटवार के दिन खंडा-ग्राम निवासी भीभीमालझातीय प्य बसुटा भार्या मांडू बाई पुत्र सोमा भार्या सुदबदेवी पुत्र भीपाल भार्या भी देवीने अपने पूर्वजों के मारमकल्याणार्थ भीनमिनाय ( पंख तीर्षी ) विम्ब कराया, जिनकी प्रतिष्ठा चैत्रगण्ड में परम पट्टीय म० भीविजयदेवधरि के द्वारा हुई ।

( ३६७ )

( ३६८ )

सं० १५१५ आषाढशु० ५ के दिन श्रीश्रीमालहातीय परीक्षक हंसराज भार्या वरजूबाई पुत्र भोजराजने स्वभार्या सोनीबाई, स्वकुटुम्ब के महित आत्मश्रेयार्थ श्रीविमलनाथजी का ( पंचतीर्थी ) विम्ब करवाया, जो पूर्णिमापक्षीय श्रीमागरतिलकसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित हुआ ।

लेखाङ्क ३५६ से ३६८ तक की धातुमूर्तियाँ बनासकांठा उत्तरगुजरात के छोटे गाँव एटा के समीपवर्ती एक कृषीकार के क्षेत्र में हल चलाते समय प्रस्तरमय श्री आदिनाथजी की सर्वाङ्गसुन्दर प्रतिमा के सहित भूमि से प्रगट हुई हैं । लुआणा के जैनसंघने वहाँ से लाकर अपने गाँव के सौधशिखरी जिनालय में अष्टाह्निक-महोत्सव पूर्वक श्री आदिनाथप्रभु को मूलनायक के स्थान पर और धातुमूर्तियों को ऊपर शिखर में विराजमान की हैं । मूलनायक की प्रतिमा पर लेख नहीं है । परन्तु इनके दहिने और बाँये भाग में श्रीविमलनाथजी और श्रीमहावीरस्वामी की प्रतिमाएँ स्थापित हैं, जो अर्वाचीन हैं और इनके लेख लेखाङ्क ३५४ तथा ३५५ में आ गये हैं । एटा गाँव लुआणा से ३ मील दूर थराद की ओर है । किसी समय यहाँ मन्व्यतम जैनमन्दिर होगा और जैनों के विशेष घर भी होंगे । वर्तमान में यहाँ न मन्दिर है और उसका न कुछ चिह्न है और न

( ३१८ )

एक भी जैन पर है । यह पपीस-सीस छपक झोंपड़ों का ग्राम रह गया है । यही तो काठ की विचित्रता है ।

( ३१९ )

मोटी पाषण्ड ( घाघ-घनासकांठा )-

स० १५०२ ज्येष्ठ० ११ सोमवार के दिन धीपाठ शास्त्रीय पीठा बुहरा माता मान्डीदेवी पिठा माता कन्यानार्य पुत्र देमा, पूजा, पन्ना मादिन भीशान्तिनाथचतुर्विंशतित्रिन-पट्ट करवाया, विघ्नकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगण्डीय धीररत्नसिंह धरि के द्वारा हुई ।

जेतडा ( यराद ) के वैश्य में स्थापित-

मूलनाथक की प्रतिमा का लेख विद्या जाने से बिक कूठ बाँचा नहीं जाता । इनके दोनों ओर एक पार्ष्णाथ की और दूसरी चन्द्रप्रमप्रसू की प्रतिमाये स्थापित हैं । दोनों पर लेख एक ही व्यक्तियों के हैं ।

( ३००-३०१ )

संवत् १८३३ माघसु० शुक्रवार के दिन गेसावाय-निवासी भीष्मीमासशास्त्रीय समस्तसंपन्न चन्द्रप्रमस्वामी और पार्ष्णाथप्रसू का विम्ब करवाया, विघ्नकी प्रतिष्ठा भीमिन्द्रय विनेन्द्रधरि के द्वारा हुई ।

( ३१९ )

( ३७२ )

## धातुमय पंचतीर्थियाँ—

सं० १४२५ वैशाखशु० ११ के दिन ब्रह्माणगच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय पितामही रामादेवी, पिता नथमल, माता लीलादेवी श्रे० ठ० श्रीपालने श्रीशान्तिनाथ की पंचतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीबुद्धिसागरसरि द्वारा हुई ।

( ३७३ )

सं० १४८८ मार्गशिरकृ० ५ गुरुवार के दिन श्रीमाल-ज्ञातीय व्य० आंजन( अर्जुन ) भार्या भोलीवाई पुत्र आका- ( अक्षयराज )ने श्रीपार्श्वनाथजी का ( पंचतीर्थी ) विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीसोमसुन्दसरि के द्वारा हुई ।

( ३७४ )

सं० १४२४ माघशु० ८ के दिन व्य० जयता भार्या हंसादेवी पुत्र बाहड़( वाग्मट )ने अपने पिता माता के कल्याणार्थ श्रीपद्मप्रभस्वामी का (पंचतीर्थी) विम्ब करवाया ।







## शुद्धिपत्रकम्



	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
अशुद्ध			
कनुक्रमणिका	अनुक्रमणिका	२	१८
सकती है	सकती हैं	३	२२
पुस्तक में	पुस्तक में	४	२०
कर्म हैं	कर्म है	५	११
यतीन्द्र	घातुप्रतिमा	५	११
प्राप्ति में	प्राप्ति में	५	१३
सौ० स्त्रियों के	सौ स्त्रियों के	६	१३
वहा	वहाँ	६	१६
गया हैं	गया है	७	५
क्रम भी	क्रम भी	८	१९
होता हैं	होता है	९	९
प्राचीनतम्	प्राचीनतम	१०	८
करानेवाले	करानेवाला	१०	१८
वर्षों	वर्षों	१४	३
गुम	गुम	१५	५
करते ही है	करते ही हैं	१५	९
विधर्मी	विधर्मी	१५	१९
वचानेवाली हैं	वचानेवाली है	१६	११

पुस्तक	पुस्तक	पृष्ठ	कीं
बटवस्तुषिक्रम	बटवस्तुषिक्रम	२१	११
ब्रह्मसूत्र	ब्रह्मसूत्र	३४	१
ब्रह्मसूत्र	ब्रह्मसूत्र	३४	२०
बिगबन्ध	बिगबन्ध	४३	२
बहे	बहे	४३	४
बन्ध	बन्ध	४८	२२
बन्धों की	बन्धों की	६४	१
बन्ध	बन्ध०	६८	२
बने	बने	६८	१९
बं	बं०	७४	७
कुटुम्ब	कुटुम्ब	७८	११
क्षीपस्त्र	क्षीपस्त्र	७९	३
भ्रातृनि०	भ्रातृनि०	८६	८
बहुवचन	बहुवचन	८८	५
श्रीश्रीशिवस्वामी	श्रीश्रीशिवस्वामी	८९	२
भाग	भाग	९७	७
बुधे	बुधे	९७	१२
बधि	बधि	९८	११
बद्धसूरि	बद्धसूरि	११२	७
बन्धू	बन्धू	११५	३
स्वपुण्यार्थ	स्वपुण्यार्थ	१२०	१०
श्रीशिवस्वामी	श्रीश्रीशिवस्वामी	१४७	५

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
स	स०	१५०	७
पद्मावतंस	पद्मावतंस	१५८	३
प्राग्वाटे	प्राग्वाटे	१६९	१२
असरूप	जसरूप	१७४	२
षडेरक	ष(ख)डेरक	१९०	१५
स्पष्ट है	स्पष्ट है	१९१	५
विग्व	विम्ब	१९४	१७
अचलगच्छे	अचलगच्छे	१९८	१
श्रीश्रीमाल	श्रीश्रीमाल	२०१	१
वन रहा रहा है	वन रहा है	२०४	४
टही कुवाई	टहीकु वाई	२०७	१४
मा०	भा०	२१५	९
मा०	भा०	२१९	५
मुनिसिंह	मुनिसिंह	२२१	१०
जीवितस्वामि	जीवितस्वामी	२२३	६
श्रीश्रीमालजातिय	श्रीश्रीमालजातीय	२२७	१८
डसिंह	घडसिंह	२२८	११
।	म	२२९	५
।।डन	माडण	२३१	१०
प्रवार्थ	श्रेयार्थ	२३१	१२
जीवितस्वामि	जीवितस्वामी	२३६	३

ग्राम	ग्राम	पृष्ठ	पंक्ति
मापू	मापू	२३९	१५
मांजीबाई	मांजीबाई	२४०	१२
बनविठ्ठलपुरी	बनविठ्ठलपुरी	२४८	१७
बपने	बपने	२५२	१३
बास्ता	बास्ता	२५४	८
पनराज	पनराज	२५६	८
मान्वाठ	मान्वाठ	२५६	१३
मेहण	मेहण	२५८	१४
मं० सुभा	मं० सुभा	२८३	१५
घा	घा०	२८९	१०
पटवतुण्डिका	पटवतुण्डिका	२९९	१९
सोमपुर	सोमपुरा	३००	६
दो	दो कामोत्सर्गस्थ	३००	११
सेष्मबाडा	सेष्मबाडा	३०१	१०
मडाहडिया	मडाहडिया	३०३	६
बिनडा	बिनडा	३०३	१८
सांसने	सांसने	३०४	५
मिष्ठा हें	मिष्ठा हें	३०५	१३
कमठा	कमठा	३०५	१५
कस्यापार्थ	कस्यापार्थ	३०६	८
श्रीसोमसुन्दरपुरी	श्रीसोमसुन्दरपुरी	३१९	११

